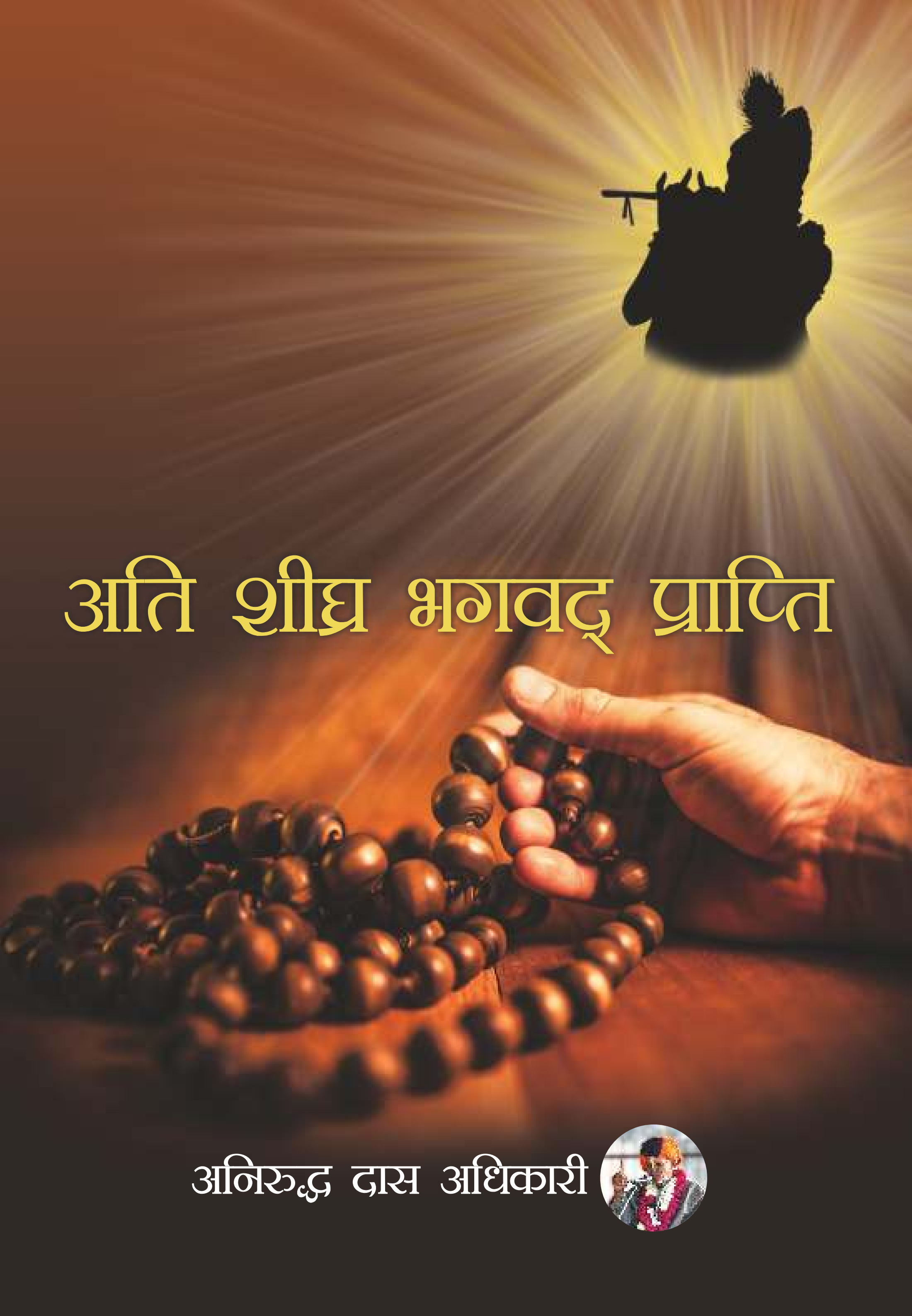


अति शीघ्र भगवद् प्राप्ति
अनिरुद्ध दास अधिकारी

**प्रकाशक**
श्री अनिरुद्ध दास अधिकारी, गाँव पांचूडाजा, छींड़ की ढाणी
वाया राजनोता, तहसील कोटपूतली,
जिला जयपुर (राजस्थान), भारत
दूरभाषः 7742836121

**प्रथम संस्करण–6000 प्रतियाँ, उत्थान एकादशी, नवम्बर 2019**
**द्वितीय संस्करण (संशोधित)–5000 प्रतियाँ, दिसम्बर 2019**

**मुद्रण–संयोजन**
यूनाइटेड एड़वरटाईजिंग एंड मार्केटिंग सर्विसेज
डी–159ए, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस – I, नई दिल्ली – 110020

# निःशुल्क वितरण
# (For Free Distribution)

# विषय सूची

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः ।।

# विनम्र निवेदन

सद्गृहस्थ, परम वैष्णव संत श्रील अनिरुद्ध प्रभुजी से गत कुछ वर्षों के परिचय में उनके अलौकिक व्यक्तित्त्व, विलक्षण नामनिष्ठता एवं समर्थ सिद्ध वाणी का अनुभव करता हूँ। उनका करुणा–पूर्ण, दैन्य, सहज–सरल स्वभाव तो हृदय में कहीं गहरा ही स्पर्श करता है।

भगवान् श्री कृष्ण का उन्हें साक्षात दर्शन देना व उनका अन्य भक्तों को भी दर्शन करवाना, श्री हनुमान जी का उन्हें दर्शन देकर उनके दोनों हाथों में भगवद् आयुधों के अनेक चिन्ह दिखाना, उनका भगवान् के निज जन होने एवं हरिनाम प्रचार हेतु गोलोक धाम से भेजे जाने संबंधी आदि सभी बातों पर सहज ही विश्वास होता है जब उनके संपर्क मात्र में आने से भक्तों का हरिनाम कई–कई गुना बढ़ जाता है। उनके ग्रन्थों के संपर्क में आने पर स्वयं अपनी, परिवार के सदस्यों व अनेक परिचित भक्तों की हरिनाम संख्या में हुई अप्रत्याशित वृद्धि का तो प्रत्यक्ष प्रमाण ही है। प्रभुजी के संग अथवा उनके ग्रन्थों के प्रभाव का तो क्या ही कहना, मात्र फोन पर प्रभुजी से कुछ क्षण श्री हरिनाम अथवा नाम महिमा सुनने पर भक्तों की जप संख्या में चमत्कारिक वृद्धि होने लगती है।

यद्यपि आज देश विदेश के अनेकों भक्त प्रभुजी के मार्गदर्शन में एक से तीन लाख हरिनाम प्रतिदिन कर रहे हैं तथा उनके ग्रंथ **'इसी जन्म में भगवद् प्राप्ति'** के हिन्दी भाषा में 8 व अंग्रेजी भाषा में 2 भाग भी प्रकाशित हो चुके हैं फिर भी इधर कुछ समय से एक विचार रह–रह कर मन को व्याकुल करता था – कि प्रभुजी का शरीर अब 90 वर्ष से भी ऊपर हो चला है और प्रचार में भी उतना नहीं जा पाते हैं तब क्या भगवान् ने इतना भर ही प्रचार करने के लिए अपने निज जन को गोलोक धाम से भेजा होगा? क्या सर्व शक्तिमान, अहैतुक करुणालय, परम पुरुषोत्तम भगवान् श्री कृष्ण अपने निज–जन को कलियुग निवारण की एक मात्र औषधि युग–धर्म हरिनाम का प्रचार करने भेजेंगे, तो अपनी करुणा का आँचल इतना भर ही लहरायेंगे? यूँ तो वैष्णव की कृपा किसी काल से बाधित नहीं होती फिर भी यह भाव हिलोरे लेता था कि काश! प्रभुजी के रहते रहते अधिक से अधिक भक्त उनके आशीर्वाद कृपा से अपना हरिनाम बढ़ा पाते। अतः मन में यही प्रेरणा आती रहती कि कम से कम समय में, कैसे उनके ग्रन्थों का कुछ प्रचलित भाषाओं में अनुवाद हो सके जिससे उन भाषाओं से जुड़े लोगों का भी कल्याण हो सके।

किन्तु अभी तक तो विदेशी भाषाओं की क्या, प्रमुख भारतीय भाषाएँ भी इन ग्रन्थों में छिपी अमूल्य निधि से वंचित थी। साथ ही समस्या यह भी थी कि सभी भागों का प्रमुख भाषाओं में अनुवाद एवं वितरण करने के लिए एक व्यापक–बहद् योजना, पर्याप्त समय एवं धन आदि की भी अनिवार्यता थी। अतः यही विचार आता था कि कितना ही अच्छा होता यदि हिन्दी भाषा में उपलब्ध 'इसी जन्म में भगवद् प्राप्ति' के आठ भागों में से कुछ लेखों को चुन कर एक छोटी सरल पुस्तक के रूप में संकलन हो जाता और फिर उसी पुस्तक

के आधार पर अन्य भाषाओं में तीव्रता से अनुवाद! कुछ स्नेही स्वजनों से जब इस पर चर्चा की तो उन्होंने तुरंत इस विचार का अनुमोदन किया।

अक्टूबर 2019 को प्रभुजी के आविर्भाव दिवस, शरद पूर्णिमा, पर उनके निवास स्थान पर जब यह प्रस्ताव उनके समक्ष रखा तो उन्होंने सहर्ष इसकी अनुमति ही नहीं दी, वरन् यह कह कर आशीर्वाद भी दिया कि – ''आपको यह प्रेरणा मेरे ठाकुरजी ने ही दी है।'' साथ ही आठ भागों में से चयन संबंधी कुछ संकेत–सुझाव भी प्रभुजी ने दिए। परिणाम स्वरूप यह संकलन नवम्बर 2019 में **'अति शीघ्र भगवद् प्राप्ति'** शीर्षक से प्रकाशित हुआ। भक्तों ने इस संकलन को बहुत सराहा, अतः अब एक मास के भीतर ही इस दूसरे संस्करण की आवश्यकता भी आ पड़ी है।

कई वर्षों तक रात–रात भर विरह पूर्ण हरिनाम करते हुए प्रभुजी को जो प्रेरणा होती उसे आंशिक रूप से वह पत्रों के माध्यम से अपने मित्र परम पूजनीय श्री निष्किंचन महाराज जी को लिखा करते। 'इसी जन्म में भगवद् प्राप्ति' उन्हीं पत्रों एवं प्रभुजी के कुछ प्रवचनों पर आधारित ग्रंथ है जिनको उनके कृपा पात्र, सेवोन्मुखी स्वजनों के निष्ठापूर्ण प्रयासों से प्रकाशित किया गया।

शास्त्रों में बार–बार इस बात को दोहराया गया है कि कलियुग में इस भव–सागर से पार होने का एकमात्र उपाय श्री हरिनाम का आश्रय ही है। शास्त्रों ने इसी अच्युत सिद्धांत की ही पुष्टि की है :–

**हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।**
**कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा।।**

श्री गौड़ीय वैष्णवों के प्राणाधार ग्रन्थ ''श्री चैतन्य–चरितामृत'' ने तो गूँज–गूँज कर साधकों का ध्यान इस एकमात्र आश्रय की ओर ही आकर्षित किया है, यथा :–

**नाम विनु कलिकाले नाहि आर धर्म।**
**सर्व मंत्र सार नाम, एइ शास्त्र मर्म।।**

शास्त्र के इस मर्म को जान, भगवद् चरणारविन्दों को लक्ष्य करता कोई भी प्रबुद्ध, लोलुप वैष्णव, चाहे वह किसी भी संस्था अथवा समाज से संबन्धित हो, युगधर्म हरिनाम की महत्ता को पूर्णरूपेण समर्पित इस संकलन के पठन तथा मनन को अपरिहार्य क्यों नहीं मानेगा?

जनमानस के आत्यंतिक कल्याण को ध्यान में रखते हुए परम आदरणीय श्री अनिरुद्ध प्रभुजी का विनीत आग्रह है कि यह पुस्तक **''अति शीघ्र भगवद् प्राप्ति''** घर–घर में पहुँचे, अतः इसी आशय से इस पुस्तक का अनेक भाषाओं में निःशुल्क वितरण किया जा रहा है। सभी संभव भाषाओं में इस पुस्तक का यथाशीघ्र अनुवाद, प्रकाशन एवं वितरण हो सके, यही भगवान् के श्री चरणों में कातर प्रार्थना है।

इस पुस्तक में जो भी त्रुटियाँ रह गयी हों उनके लिए क्षमा याचना करते हुए निवेदन है कि इस ओर ध्यान दिलाया जाए जिससे अगले संस्करण में सुधारने की चेष्टा हो सके।

**श्रील अनिरुद्ध प्रभुजी की सेवा में,**

**तुच्छ दास**

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः ।।

# वैष्णव प्रार्थना!

प्रत्यक्ष प्रैक्टिकल अनुभव अनुसार

अनंतकोटि वैष्णवजन!
अनंतकोटि भक्तजन!
अनंतकोटि रसिकजन! तथा
अनंतकोटि मेरे गुरुजन!

मैं जन्म–जन्म से आपके चरणों की धूल–कण।
मुझको ले लो अपनी शरण, मेरे मन की हटा दो भटकन।
लगा दो मुझको कृष्णचरण, लगा दो मुझको गौरचरण।
यदि अपराध मुझसे बन गये, आपके चरणारविंद में–
जाने में या अनजाने में, किसी जन्म में या इसी जन्म में।
क्षमा करो मेरे गुरुजन!
मैं हूँ आपकी चरण–शरण।
पापी हूँ, अपराधी हूँ, खोटा हूँ या खरा हूँ।
अच्छा हूँ या बुरा हूँ, जैसा भी हूँ, मैं तो आपका हूँ।
मेरी ओर निहारो!
कृपादृष्टि विस्तारो।
हे मेरे प्राणधन!
निभालो अब तो अपनापन!
मैं हूँ आपके चरण–शरण !
हे मेरे जन्म–जन्म के गुरुजन!

- प्रतिदिन श्रीहरिनाम – हरेकृष्ण महामंत्र का जप करने से पहले इस प्रार्थना को बोलने से श्रीहरिनाम में निश्चित रूप से रुचि होगी और अनंतकोटि वैष्णवजनों की कृपा भी मिलेगी।
- प्रतिदिन स्नान, तिलक आदि के बाद इस प्रार्थना को एक बार अवश्य बोलना चाहिए।
- नित्य कम से कम 11 बार यह प्रार्थना बोलने से समस्त प्रकार की बाधाओं से एवं जघन्य अपराधों से भी मुक्ति मिलेगी तथा भक्ति में शीघ्र उन्नति होगी।

– अनिरुद्ध दास

1

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः ।।

छींड़ की ढाणी
दि. 5/10/2008

परमाराध्यतम, प्रेमास्पद, भक्तगण तथा शिक्षागुरुदेव, भक्ति सर्वस्व निष्किंचन महाराज जी के चरण–युगल में नराधम, अधमाधम, दासानुदास, अनिरुद्ध दास का साष्टांग दण्डवत् प्रणाम तथा भजन–स्तर बढ़कर वैराग्य उदय होने की बारम्बार करबद्ध प्रार्थना।

# सच्चे रूप में शत प्रतिशत रसमय परमानंद से भजन कैसे हो?

यह मानव–जन्म सुकृतिवश भगवत्–कृपा परवश मिला है। इसको व्यर्थ गंवाना सबसे बड़ा शोचनीय नुकसान है। इसमें मन ही एक मुख्य कारण है। श्रीगुरुदेव बारंबार साधकों को चेता रहे हैं, जगा रहे हैं, अब भी गहराई से विचार द्वारा अपने मन को व्यर्थ के कर्मों में न लगाकर, परमार्थ कर्म में नियोजित करें। यह मानव–जीवन, जो भगवत्–कृपावश बड़ी मुश्किल से उपलब्ध हुआ है, केवल भगवत्–प्राप्ति के हेतु मिला है। हरिनाम–स्मरण रूपी सत्संग में लगाकर, अपना यह दुर्लभ जीवन सफल कर लो वरना अब आगे यह सुअवसर हाथ नहीं आने का। 28 प्रकार के नरक भोगकर चौरासी लाख योनियों में, जो दुःखों का सागर है, जाना होगा, कोई बचाएगा नहीं, अपना किया कर्म स्वयं को ही भोगना पड़ेगा।

मैं मार्ग बता रहा हूँ। इस मार्ग से जाने से भगवान् के शरणागत् होने पर, भगवान् तुम्हें अपना लेंगे। आपका सारा भार स्वयं उठा लेंगे। तुम्हारा पूरा जीवन सुखमय हो जाएगा, भगवान् तुम्हारा दर्शन करने स्वयं आएंगे एवं तुमको दर्शन लाभ निश्चय ही हो जाएगा, जैसे मीरा को, नरसी भक्त को, सनातन, रूप, माधवेन्द्रपुरीपाद आदि को हुआ है। तुमको भी अवश्य होगा। इसमें एक प्रतिशत भी अनिश्चितता नहीं होगी।

**निम्न प्रकार से अपना जीवनयापन करना होगाः–**

1. एक लाख हरिनाम कान से स्वयं सुनकर व गुरु, भगवान् एवं संत, जैसे हरिदास जी, माधवेन्द्रपुरी, रूप, सनातन, गौर, निताई, प्रह्लाद, ध्रुव, नृसिंहदेव, बजरंग, नारद जी आदि कितने ही संत, भगवत् अवतार हैं, इनके चरणों में बैठ कर इनको हरिनाम सुनाते रहो तो तुम्हारा मन एक क्षण इधर–उधर कभी भी भटकेगा ही नहीं। प्रत्यक्ष में प्रमाण नहीं चाहिए, कोई भी साधक आज़माकर देख सकता है। अनुभव सदैव ही सभी के लिए शत–प्रतिशत सच्चा होता है।

विराहग्नि प्रज्ज्वलित होने का एक मात्र उपाय यही है कि अपने अन्तःकरण से पुकारकर बोलो– ''हा निताई! हा निमाई! कृपा करो! इस अपराधी पर कृपा करो!'' यही है

विदीर्ण–हृदय की पुकार! यही है इन्जैक्शन! इसी से रोग दूर होगा! आज़माकर देखो। एक लाख हरिनाम जपने से कुछ तो शुद्धनाम अवश्य आविर्भूत होगा ही। यही शुद्धनाम, नामाभास–नाम को अपनी ओर खींचकर अपने शुद्धनाम में नियोजित कर लेगा क्योंकि शुद्ध नाम में एक अलौकिक शक्ति निहित रहती है, एवं नामाभास इससे कमज़ोर रहता है अतः शक्तिशाली कमज़ोर को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। यह ध्रुवसत्य सिद्धान्त है ही। इसी प्रकार से श्रीगौरहरि ने अपने सभी जनों को आदेश दिया है कि जो भी एक लाख हरिनाम नित्य करेगा उसी के घर में मैं प्रसाद पाऊँगा अर्थात् उस घर को छोड़कर मैं कहीं नहीं रहूँगा। कितना सरल–सुगम उपाय इस कलियुग में है। घर बैठे भगवान् मिल जाएँगे। जंगल में भटकना नहीं पड़ेगा, जहाँ, सर्दी–गर्मी, बरसात, खाना–पीना दूभर, कितनी–कितनी तकलीफें सामने आती रहती हैं। इस सुअवसर को हाथ से निकाल देना कितनी अज्ञानता है।

2. कम से कम रात में 3 बजे ब्रह्म मुहूर्त में उठकर हरिनाम करना होगा जैसे कि पिछले गुरुवर्ग ने 2–3 बजे उठकर हरिनाम किया है। जल्दी उठना तभी हो सकेगा, जब शाम व रात को भोजन नाम मात्र का पा सकोगे या दूध पर रह सकोगे वरना आलस्य शत्रु भजन में बाधा डालेगा। आरंभ में जल्दी उठने पर आलस्य आवेगा, किन्तु एक माह बाद आलस्य आना बन्द हो जाएगा।

3. सोते समय, 2 माला हरिनाम की कान से सुनकर करनी होगी ताकि यह नाम रात भर सोते रहने पर भी सारे शरीर में संचारित (Circulate) होता रहे। एक दिन में ऐसा नहीं होगा। कुछ दिनों बाद इस संचारण का प्रभाव होकर, भगवत्–संबन्धी स्वप्नों में परिवर्तित हो पड़ेगा। कृष्ण, अर्जुन को बारंबार कहते है– ''अभ्यास से सब होगा।'' प्रत्यक्ष में देखा भी गया है कि टाइपिस्ट (Typist) बातें भी करता है, Type भी। वाहन चालक बाते भी करता रहता है, दुर्घटना (Accident) से भी बचाता है। अभ्यास से क्या नहीं हो सकता?

4. नित्य ही समय मिलने पर श्रीमद्भागवत महापुराण, श्रीचैतन्य चरितामृत तथा अन्य हरिनाम संबन्धी पुस्तकों से सत्संग करते रहें ताकि हरिनाम को अच्छी खुराक मिलती रहे। यदि शुद्ध संत का समागम हो सके और उनसे विचार विमर्श करते रहें तो हरिनाम में रूचि अवश्यमेव ही होगी। इसमें एक प्रतिशत भी विचारने की आवश्यकता नहीं हैं।

5. ब्रह्मचर्य पालन परमावश्यक है। ब्रह्मचर्य का प्रमुख आशय है सभी इंन्द्रियों को अपने गोलक में नियोजित रखें। संसार के विषयों की तरफ उन्हें जाने न देवें। सभी ग्यारह इन्द्रियों को आध्यात्मिक विषय में लगाए रहे, ताकि इन पर संसारी विषयों का आवरण नहीं चढ़ सके, क्योंकि मन ही सब इन्द्रियों का राजा है। यही सब इन्द्रियों को आदेश देकर संसारी विषयों में नियोजित करता रहता है। टी. वी., रेडियो, अखबार, मोबाइल, बाहरी वातावरण, बेढंगे–चित्र, पशु–पक्षी–रमण, बेढंगा पहनावा आदि का सबसे अधिक आकर्षण व प्रभाव मन पर पड़ता रहता है। इनसे बचने का उपाय भी श्रीगुरुदेव बता रहे हैं। टी. वी., रेडियो, अखबार से दूर रहने में कोई आपत्ति नहीं है। उपरोक्त अन्य आकर्षणों से बचने

के लिए आँखों का कंट्रोल परमावश्यक है। आँखें तो स्वाभाविक जावेंगी ही परंतु एक बार जाने पर दूसरी बार न देखो। दूसरी बार देखने पर पाजी मन उसे पकड़ लेता है। फिर तो समस्या काबू के बाहर हो जाती है। फिर मनोहर–भजन कैसे हो सकता है? यह साधक की कमजोरी ही बतानी पड़ेगी। एक बार के स्त्री–संग से पूरा सात्विक भाव समूल नष्ट हो जाता है। हजारों साल की तपस्या एक क्षण में समाप्त हो जाती है। यह श्रीगुरुदेव की ही नहीं, शास्त्र की भी वाणी है।

6. ग्राम्य चर्चा तथा फालतू बातों से मुंह मोड़ लें। हर समय बिना माला भी श्रीहरिनाम का स्मरण करते रहें। दूसरा संकल्प–विकल्प फिर आ ही नहीं सकता। इसमें अभ्यास की बड़ी आवश्यकता है। घर की आसक्ति इससे कम होती चली जाएंगी और साथ ही भगवत्–आसक्ति भी बढ़ती चली जाएगी। आसक्ति ही तो मूल शत्रु है। इसे ही समूल नष्ट करना है। पर यह सब होगा हरिनाम से ही। पौधे को इस क्यारी से उखाड़ कर दूसरी क्यारी में ही तो लगाना है। क्या मुश्किल है? इसमें केवल मन की ही कमज़ोरी है।

7. अहिंसावृति का पालन परमावश्यक है। किसी भी जीव को सतायें नहीं। सभी भगवान् के पुत्र हैं। क्या पुत्रों को दुःख देने से उनका पिता (भगवान्) खुश रहेगा? कदापि नहीं। सब पर दया करें, हो सके तो तन–मन और वचन से सेवा कर दें, सतावें तो कभी नहीं। सन्मार्ग का उपदेश देकर उनकी भलाई में जीवन यापन करता रहे।

8. शुद्ध–कमाई का प्रसाद ही भक्ति को बढ़ाता है। अशुद्ध–कमाई से भक्ति नष्ट होती रहती है, जैसा कि देखा भी जा रहा है। जो उपलब्ध हो, उसी में संतोष रखें। हाय–हाय के चक्कर में नहीं फंसे। अधिक वस्तुएं नहीं बटोरें। सभी बाद में संकट में डालती हैं। परिमित वस्तुएं घर में रखें, जितने से जीवन निर्वाह हो जावे। ऊपर की ओर नहीं देखें। नीचे की ओर देखेंगे तो सदा सुख से रह सकोगे वरना जी जलता ही रहेगा। उसके पास कार है, बंगला है। मेरे पास भी हो। अगर पा नहीं सकेगा तो दुःखी रहेगा या गलत मार्ग अपनाएगा।

9. प्रसाद पाते हुए नाम–स्मरण करने से दिन भर अष्ट सात्विक धाराएं बहती रहेगी। ''जैसा अन्न, वैसा मन''। पानी पीते हुए हरिनाम स्मरण करने से वह भगवान् का चरणामृत बनकर पेट में जाएगा तो वचन, वाणी सत्य निकलेगी। झूठ से पाला ही नहीं पड़ेगा। ''जैसा पानी, वैसी वाणी''।

10. मान–सम्मान की चाह न रखें। यदि मान–सम्मान हो तो इसे भगवत् कृपा ही समझें ताकि अहंकार न आ सके। अपनी अहम्–बुद्धि को भगवत–चरणों में चढा़ दें। अन्तःकरण से गहरा विचार करें कि तू किस लायक है? तेरे से अच्छे तो पशु–पक्षी ही हैं, जो मर्यादा से चलते हैं, भक्ष्य–अभक्ष्य का ध्यान रखते हैं, नियमों में बंधे हैं। मालिक को पहचान कर प्यार करते हैं। तुम में तो प्रेम का लेशमात्र भी नहीं हैं। तू अपने माँ–बाप तक का नहीं है, अन्य का तो होने का सवाल ही नहीं है। ऐसा विचार करने से अहम् समूल नष्ट हो जाएगा। फिर उसका सिर उठाना ही दूभर हो जाएगा।

11. भगवत्–त्योहारों व भक्त–जनों के आविर्भाव–तिरोभाव दिवस पर उनको अधिक याद करते हुए उनका जीवन–चरित्र सुनें तथा सुनावें, व हरिकीर्तन तथा भक्तों के रचे पद्यों द्वारा दिन भर का सत्संग करता रहे तो संसारी कामों या चर्चाओं में समय ही कहाँ मिल सकेगा? साधक, दिन–रात, भगवत–चरणों में ही अपनी साधना में लगा रहेगा। मरने पर उसका अंत प्रशंसनीय होगा। नामनिष्ठ को भगवान् अपने पार्षदों को लेने न भेज कर, स्वयं लेने आते हैं, क्योंकि साधक ने दिन–रात अपना जीवन हरिनाम में ही व्यतीत किया हैं। हरिनाम तथा भगवान् एक ही तो हैं। भगवान् ही कलियुग में नामरूप से अवतरित हुए है। भगवान् ही उस नामनिष्ठ की जिह्वा पर रात–दिन नृत्य करते रहते हैं। भगवान् उससे अलग हुए ही कब हैं? निरंतर उससे चिपके रहते हैं। मरते समय भी कहीं गए थोड़े ही हैं, ले जाने के लिए उसी के पास में चिपके बैठे हैं। अपना स्वयं का उड़नखटोला (विमान) मंगाकर नामनिष्ठ–भक्त को बिठाकर अपने गोलोक धाम में ले जाते हैं। वहां पर उसका भव्य स्वागत होता है। रमणीय स्थान उसे उपलब्ध होता है। मन, वांछा–कल्पतरु तथा चारु चिंतामणि से विभूषित हो जाता है क्योंकि मन ने ही तो उसे गोलोक धाम में पठाया है। मन की सभी कामनाएं उसे वहां उपलब्ध हो जाती है तब ही तो कहा गया है– ''मन ही जीव का मित्र है, मन ही जीव का शत्रु है।'' अगर भगवान् से मिलाता है तो मित्र तथा माया में फंसाता है तो शत्रु है। अनन्त जन्मों से, अनन्त युगों से तथा आदिजन्म से इस मन ने जीव को माया में फंसा रखा है।

जब इसे साधुसंग की कृपा उपलब्ध हुई तब यह माया के चंगुल से छूट सका। साधु–कृपा बिना माया से छूटने का कोई अन्य उपाय ही नहीं है। अतः कहा गया है–**'मन के कहे न चलिए, यदि चाहो तुम कल्याण।'** यदि मन के कहने पर चलते रहोगे तो कर देगा तुम्हारा संहार। मन भूत है, यदि इसको काम पर नहीं लगाया तो यह तुम्हें ही मार देगा। उदाहरण से बताया गया है कि किसी ने भूत पाल लिया। जो काम कहे उसे बहुत शीघ्र करके आ जाए और कहे–अब मैं क्या करूँ? उसने कहा ''अब तो काम नहीं है, बाद में बता दूंगा।'' भूत ने कहा– ''मैं खाली रह नहीं सकता, यदि काम नहीं बताया तो मैं तुम्हे मार दूंगा।'' अब तो भूत के मालिक पर मुसीबत आ गई। इससे पिंडा कैसे छूटे? मैंने भूत पाल कर अपना ही नाश कर लिया। सबसे पूछता फिरे, मैं कैसे बचूं? किसी ज्ञानी पुरूष ने कहा– ''कोई अन्य तुम्हें बचा नहीं सकता है। पर संत–महात्माओं के पास अनेक उपाय हैं। वे ही तुम्हे बचने का उपाय बता सकते हैं। तुम अमुक साधु के पास जाकर पूछो। वे सिद्ध महात्मा हैं।'' भूत के मालिक ने उस सिद्ध–महात्मा से अपने बचने का उपाय पूछा। महात्मा ने कहा– ''यह तो तुम्हें खा जावेगा। इसका कोई उपाय नहीं है।'' ''सभी आपको सिद्ध महात्मा कहते हैं, भगवान् से पूछकर बता सकते हो?'' उस महात्मा को दया आ गई, उसने कहा–''मैं पूछूँगा, तुम कल अभिजित मुहूर्त में आकर पूछ जाना।'' उसने कहा– ''अभिजित मुहूर्त कब होता है?'' महात्मा ने कहा– ''पौने बारह बजे से सवा बारह बजे तक

में आ जाना।'' उसने कहा– ''तब तक तो वह भूत मुझे खत्म ही कर देगा।'' सिद्ध बोला– ''कुछ देर ठहरो, मैं भगवान् से ध्यान लगाकर पूछता हूँ, वे क्या उपाय बताते हैं।'' वह अंदर गया और उसने अंदर जाकर क्या किया, मालूम नहीं। वह बाहर आकर बोला– ''तुम आंगन में एक दस फुट का बांस गाढ़कर भूत से कह दिया करो, जब काम न हो इस बांस पर चढ़ो–उतरो,'' तो काम का अंत ही नहीं होगा। उसने कहा– ''बहुत ठीक उपाय है, अब तो मैं ही उसे परेशान कर दूंगा।'' यही है मन का भूत! इसको खाली मत छोड़ो वरना खा जाएगा। उक्त नियम पालन करने से, अर्थात् यथासंभव मन को हरिनाम में लगाये रखने से भगवत् शरणागति होकर भगवत्–दर्शन हो जाता है। भगवान् को स्वयं भक्त का दर्शन करने को बाध्य होना पड़ता है।

**विशेषः**– • जिसने जीभ पर नियंत्रण कर लिया, उसकी सभी इन्द्रियाँ वश में हो गईं। जीभ का तथा उपस्थ इंद्रिय का सीधा संबंध रहता है। ''रूखा सूखा खावो, भगवत–प्रेम पावो।''

• जो भगवान् के प्यारे साधुजन हैं, उनकी तो भूल कर भी निन्दा न करें, न ही उनको सतावें, वरना भगवान् उसे घोर दंड देगा। पापी चाहे कितना ही पाप करे, उस पर भगवान् इतना रुष्ट नहीं होते जितना रुष्ट अपने भक्त को दुःख देने से होते हैं। पापी तो अपने पाप का फल भोग कर लेगा, उसमें भगवान् का क्या जाता है परन्तु भक्त को सताने वाला भगवान् का भी घोर दुश्मन है। भगवान् उसे रौरव नरक में या चिरकालिक (chronic) बीमारी देकर घोर दण्ड देते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है–गोपाल चपल विप्र, जिसका अपराध श्रीनिवास जी के प्रति हुआ था। अतः उसे कोढ़ से दण्ड दिया। अम्बरीश को सताने वाले शिव के अंश से उत्पन्न अत्रि–अनुसूया पुत्र, दुर्वासा जी, को सुदर्शन चक्र से दुःख भोगना पड़ा।

श्रीहरिनाम करते–करते श्रीचैतन्य महाप्रभु की कृपा से जब जीव का भाग्य उदय होता है, तभी नाम–सेवा से उसकी भाव–सेवा उदित होती है। भक्ति के अन्य सभी साधनों का अतिंम फल है–श्रीहरिनाम में प्रेम! इसलिए नामसाधक श्रीहरिनाम करता रहता है और उसी में मग्न रहता है। श्रीहरिनामनिष्ठ किसी दूसरे साधन में निष्ठा नहीं करता। – श्री हरिनाम चिंतामणि

**जीवन अनित्य जानह सार, ताहे नाना–विध विपद–भार।**
**'नामाश्रय करि' जतने तुमि, थाकह आपन काजे।।** – गीतावली

इतना जान लीजिए कि, एक तो यह जीवन अनित्य है तथा उस पर भी इस जीवन में नाना प्रकार की विपदाएँ हैं। अतः तुम यत्नपूर्वक हरिनाम का आश्रय ग्रहण करो तथा केवल जीवननिर्वाह के निमित सांसारिक व्यवहार करो।

सरलतापूर्वक गुरु, वैष्णवों की सेवा में तत्पर रहकर, सर्वदा ही श्रीनाम भजन करने पर समस्त अनर्थ दूर हो जाते है। – श्रील वामन गोस्वामी महाराज

2

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः।।

छींड की ढाणी
एकादशी
दि. 01/05/2008

परमाराध्यदेव, भक्त–प्रवर तथा शिक्षा–गुरुदेव, भक्ति सर्वस्व निष्किंचन महाराज जी के चरण–युगल में इस नराधम, दासानुदास, अधमाधम, अनिरुद्ध दास का साष्टांग दण्डवत् प्रणाम तथा सप्रेम भजन रूपी हरिनाम में रूचि हो, ऐसी प्रार्थना।

# स्वयं के भजन–स्तर की जांच की कसौटी का दर्पण

(भगवत्–प्रेरित दर्पण–दृष्टिगोचर आख्यान)

1. भगवत्–भजन में मन स्वाभाविक रमण करता है कि नहीं?
2. कोलाहल में मन स्थिर रहता है कि नहीं?
3. मान–प्रतिष्ठा से मन दुःखी होता है कि नहीं?
4. संकट में मन में स्थिरता रहती है कि नहीं?
5. भजन हेतु उत्साह होता है कि नहीं?
6. इन्द्रियों में संयम रहता है कि नहीं?
7. दुःख में भगवान् याद आता है कि नहीं?
8. किसी भी प्राणी को दुःखी देखकर स्वयं को दुःख होता है कि नहीं?
9. किसी की निन्दा व अपनी स्तुति सुनकर, मन में घृणा होती है कि नहीं?
10. भगवत्–चर्चा सुनकर अधिक सुनने की इच्छा होती है कि नहीं?
11. प्रत्येक प्राणी का उपकार करने की इच्छा होती है कि नहीं?
12. सन्त से मिलकर परमानन्द की अनुभूति होती है कि नहीं?
13. सन्त से बिछुड़ने पर अपार दुःख का अनुभव होता है कि नहीं?
14. सन्त के चरणों में बैठने से अधिक समय बैठने का मन करता है कि नहीं?
15. भजनानन्द की भूख पहले से अधिक हो रही है कि नहीं?
16. भजन का ह्रास होने पर अन्तःकरण दुःखी होता है कि नहीं?
17. कभी भगवत्, सन्त, मंदिर, तीर्थ के स्वप्न आते हैं कि नहीं?
18. स्वप्न में अष्ट–विकार कभी आते हैं कि नहीं?
19. रात में 2–3 बजे भजन हेतु उठने का मन करता है कि नहीं?

20. भजन से मन में मस्ती की लहर दौड़ती है कि नहीं?
21. ग्राम्य–चर्चा से घृणा होती है कि नहीं?
22. इन्द्रियों का वेग पहले से कम हो रहा है कि नहीं?
23. सभी कर्म भगवान् पर छोड़े हैं कि नहीं?
24. संसार को दुःख सागर समझा है कि नहीं?
25. मौत को शीघ्र आने वाली समझा है कि नहीं?
26. स्वयं से नीचे स्तर के भक्त को भी झुककर सम्मान देते है कि नहीं?
27. श्रीगुरुदेव को भगवत् का प्यारा–जन अनुभव कर, सेवा में लीन रहा कि नहीं?
28. शत्रु का भी उपकार करने का भाव रहा कि नहीं–'तृणादपि सुनीचेन' भाव आया कि नहीं?
29. अन्य का अधिकार न चाह कर, सच्ची कमाई का पैसा कमाया है कि नहीं?
30. सीमित आवश्यकताओं का भाव मन में है कि नहीं?
31. जितना मिल रहा है, उस पर संतोष है कि नहीं?
32. मंदिर में ठाकुर का भाव से दर्शन होता है कि नहीं?
33. स्मरण–कीर्तन में अष्ट–सात्विक विकार उदय होते हैं कि नहीं?

उक्त अवस्थाएं उदय होने पर स्वयं का भजन–स्तर दर्पण की तरह स्पष्ट दृष्टिगोचर हो जाता है। यही है भगवत्–शरणागति का असली रूप।

**खंड खंड हइया देह जाय यदि प्राण।**
**तबुह आमि वदने ना छाड़ि हरिनाम।।**

"यदि मेरे शरीर को छोटे–छोटे टुकड़ों में काट दिया जाए तथा मैं अपने प्राण खो बैठूं, तो भी मैं हरिनाम जपना नहीं छोडूँगा।"

(नामाचार्य श्रील श्रीहरिदास ठाकुर – श्रीचैतन्यभागवत आदि 11.91)

**निरंतर या'र मुखे शुनि कृष्णनाम**
**सेइ से वैष्णवतर सर्वगुणधाम**

– श्री हरिनाम चिंतामणि

जिसके मुख से निरन्तर कृष्ण नाम सुनाई पड़ता है अर्थात् जो निरन्तर श्रीकृष्ण–नाम करता रहता है–वह श्रेष्ठ वैष्णव है। ऐसा वैष्णव सभी गुणों की खान होता है।

3

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः ।।

छींड की ढाणी
दि. 29/11/2010

# अगला जन्म मनुष्य का ही मिले इसकी कोई गारंटी नहीं

प्रेमास्पद भक्त प्रवरगण,

नराधम, अधमाधम, दासानुदास अनिरुद्धदास का साष्टांग दण्डवत् प्रणाम तथा भजन स्तर बढ़ने की बारंबार प्रार्थना।

हर समय वैष्णव अपराध होने पर हरिनाम में स्वप्न में भी मन नहीं लग सकता। इस अपराध के कारण चौरासी लाख योनियां भुगतनी ही पड़ेंगी। एक बार नहीं, न जाने कितनी बार चौरासी लाख योनियों में से गुजरना पड़ेगा क्योंकि मनुष्य अपनी जिंदगी में न जाने कितने जीवों का संहार करता रहता है। जिन–जिन जीवों को ये मारता है, वे सभी इसे मारकर बदला लेंगे। जीवों की उम्र भी भिन्न–भिन्न हुआ करती है। एक दिन से लेकर पांच हजार, दस हजार वर्ष तक की होती है। इन जीवों में मानव भी जन्म लेता है जो अन्य जीवों को मारता है। वह यह कभी नहीं सोचता कि उसे इन सब हत्याओं का बदला चुकाना ही पड़ेगा।

मेरे श्रील गुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट ऊँ विष्णुपाद 108 श्रीश्रीमद् भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज सभी साधकों की आंखें खोल रहे हैं और कह रहे हैं कि अब भी समझ जावो। श्री हरिनाम की शरण में चले आवो। नित्यप्रति एक लाख हरिनाम करना परमावश्यक है और वह भी मुख से उच्चारण करके तथा कान से सुनकर करना होगा। बिना सुने नाम प्रभाव नहीं करेगा। श्रील प्रभुपाद ने कहा हैः–

All benefits accrue to one who chants the Holy name but there is one thing, we must bear in mind, if you are going to chant, you must first listen. Through the worship of Holy name, the soul can attain all perfections. - Srila Prabhupada

जब इस भौतिक जगत का कोई भी काम बिना सुने बिगड़ जाता है तो भगवत्–नाम बिना सुने कैसे प्रभाव कर सकता है?

**रामनाम की औषधि, जो श्रद्धा से खाय।**
**कोई रोग आवे नहीं, महारोग मिट जाय।।**

कलियुग में केवल हरिनाम से ही वैकुण्ठ मिल जाता है। दूसरा कोई भी साधन करने

की जरूरत नहीं है। भगवान् को प्राप्त करने का कितना सरल और आसान मार्ग है पर अभागा मानव फिर भी हरिनाम नहीं करता। वह सोता रहता है और जब मौत आती है तो पछताता है। भगवान् प्रत्येक जीव में विराजमान है पर यह ज्ञान तो सच्चा साधु ही दे सकता है। वही सही रास्ता बता सकता है। इसलिये तो शास्त्र कहता है कि एक पल का साधुसंग ही मानव का जीवन बदल देता है परंतु यह संग किसी सुकृतिशाली मानव को ही मिलता है जिसने जाने–अनजाने में कभी किसी साधु की सेवा की होती है। **साधु सेवा के अभाव में सच्चा सत्संग मिलना असंभव है।**

कई बार मनुष्य साधु से द्वेष करता है, उसके दोष देखता है और अपराध कर बैठता है। फलस्वरूप उसका पतन होने लगता है और वह और भी नीचे दलदल में फँसता चला जाता है। ऐसे मनुष्य को चौरासी लाख योनियां कितनी बार भुगतनी पड़ेंगी, इसका तो अंदाजा लगाना भी मुश्किल है।

इन सब दुःखों एवं कष्टों से छूटने का यदि कोई उपाय है, तो वह है श्री हरिनाम। श्री हरिनाम करो! श्री हरिनाम करो! श्री हरिनाम करो और कान से सुनते रहो! यह भी केवल कलियुग में ही हो सकता है। जब हम प्रतिदिन एक लाख हरिनाम करेंगे :–

**हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।**

मुख से उच्चारण करेंगे और कान से सुनेंगे तो हमसे जो भी पाप हो चुके हैं या हो रहे हैं, वे सभी जलकर भस्म हो जायेंगे। हरिनाम रूपी प्रचण्ड अग्नि उन सबको जलाकर राख कर देगी। जब हमारे पाप कर्म समाप्त हो जायेंगे तो हमारा मन धीरे–धीरे संसार की ओर से हटता चला जायेगा और अपने अनन्य भगवान् के चरण कमलों में लग जायेगा। जब हमारा मन हरिनाम में लग जायेगा तो फिर अष्ट–विकार उदय होने लगेंगे और एक मस्ती, मादकता सी अन्तःकरण में प्रकट होने लगेगी। मन निश्चिंत हो जायेगा। हृदय में आनंद की लहरें उठने लगेंगी।

पर यदि किसी वैष्णव के चरणों में अपराध हो गया या किसी सच्चे साधु के प्रति दोषदृष्टि हो गयी तो सारा किया कराया मिट्टी में मिल जायेगा। इसलिये सावधानी बहुत जरूरी है। इस अपराध से बचने का एक तरीका यह है कि किसी का गुणदोष न तो देखें, और न ही सुनें, अपने हरिनाम में मस्त रहें, तभी मानवजीवन सफल हो पायेगा। इस प्रकार आवागमन से छूट कर भगवत् चरण की प्राप्ति हो जायेगी। प्रभु प्रेम का मार्ग खंडे की धार है। इस मार्ग में फूंक–फूंक कर पैर रखना पड़ता है। जरा सी असावधानी पैर को लहूलुहान कर सकती है। इस मार्ग में जरा सी लापरवाही होने पर पैर में कांटा लग सकता है।

ज़रा विचार करो कि हमारा अगला जन्म भारतवर्ष में होगा या नहीं? फिर ऐसा कलियुग जिसमें केवल हरिनाम से ही भगवद् प्राप्ति हो सकती है, मिलेगा या नहीं? फिर ऐसा सत्संग, ऐसा सुअवसर मिलेगा या नहीं? अब शरीर स्वस्थ है, हरिनाम किया जा सकता है। आगे

जाकर यह शरीर स्वस्थ रहेगा या नहीं? ऐसी बहुत सी बातें विचार करने वाली हैं। अब यह जो संयोग मिला है, बड़े सौभाग्य से मिला है। करोड़ों जन्मों के पुण्यों के फल से इस मनुष्य जीवन की प्राप्ति हुई है, जो दुर्लभ ही नहीं, सुदुर्लभ है। बहुत मुश्किल से मिला है यह मानव जन्म! इसलिये इसे यूं ही बर्बाद न करो। जब तक जीवन है, हरिनाम करो! हरिनाम करो! हरिनाम करो! जो समय बाकी बचा है, उसे हरिनाम में लगाना ही शुभकर होगा। मेरे श्रीलगुरुदेव बार–बार इस बात को समझाते रहते हैं। अब भी समझा रहे हैं। इस बात को समझ लेना ही श्रेयस्कर होगा। अभी शरीर स्वस्थ है, बाद में कोई बीमारी लग सकती है। फिर हरिनाम हो या न हो, क्या पता? इसलिये अभी से हरिनाम में लगना बहुत ही जरूरी है। हरिनाम से सभी विपत्तियां, सभी कष्ट दूर होते चले जाएंगे। वैष्णव अपराध से बचकर हरिनाम करते रहो, सब ठीक होता जायेगा।

यह युग कलि महाराज का युग है। इस युग में सब काम कल–पुर्जों से, मशीनों से चला करता है। इस समय लक्ष्मी का दौर चल रहा है। सभी पैसे के पीछे पागल हैं। पैसे के लिये सब कुछ हो रहा है। पर याद रखो, जहाँ लक्ष्मी अकेली आती है, वहाँ श्रीविष्णु नहीं आते। किन्तु जहाँ विष्णु की पूजा होती है, वहाँ लक्ष्मी अपने आप खिंची चली आती है। जहाँ लक्ष्मी अकेली आती है, वहाँ अनाचार होता रहता है। लक्ष्मी की सवारी उल्लू है। उल्लू की आदत दुःखदायिनी होती हैं। लक्ष्मी, लक्ष्मीवान को उल्लू बनाकर रखती है। पर श्रीविष्णु की सवारी गरुड़ जी हैं, जो शुभमति देते हैं। लक्ष्मी के पीछे पागल मनुष्य, हर वक्त और ज्यादा लक्ष्मी इकट्ठा करने में लगा रहता है। वह खाने की वस्तुओं में मिलावट करता है। उन वस्तुओं को खाने से कोई मरे या जीये, इससे उसे कोई मतलब नहीं। उसका काम तो बस पैसा कमाना है। वह यह भूल जाता है कि जो जहर वह दूसरे लोगों को खिला रहा है, वही जहर एक दिन उसका मलियामेट कर देगा। सर्वनाश कर देगा। पर आंखें होने पर भी, वह अंधा बना रहता है और थोड़े दिन के झूठे आनंद के लिये, झूठे दिखावे के लिये, झूठी खुशी के लिये, उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। उस वक्त वह सिर धुन–धुन कर पछतायेगा और फिर उसे कोई नहीं बचा सकेगा। उसकी जो दुर्दशा होगी, वह तो उसे बाद में ही पता चलेगी। इसलिये मेरे गुरुदेव, बार–बार हम सबको चेता रहे हैं, जगा रहे हैं, समझा रहे हैं। अब भी समझ जाओ। आज से नहीं, अभी से हरिनाम करना शुरू कर दो। अभी भगवान् की शरण में आ जाओ। वे दयालु प्रभु तुम्हें जरूर क्षमा कर देंगे वरना जो दुःख, जो कष्ट तुम्हें भोगना पड़ेगा, वह तुमसे सहन नहीं हो सकेगा।

श्रील गुरुदेव उद्घोष कर रहे हैं कि साधकगण अपने हृदय की गहराई से विचार करें कि उन्हें इसी जन्म में भगवद् प्राप्ति करनी है या फिर चौरासी लाख योनियों में जाकर बार–बार दुःख भोगना है। हर एक योनि में जन्म लेना और मरना बहुत दुःखदायक है। हर योनि में आयु भी अलग–अलग है। किसी योनि में एक दिन की भी है और किसी योनि में हजारों वर्षों की भी। यदि औसतन एक वर्ष हर योनि में बिताना पड़े तो समझो चौरासी

लाख वर्ष तक हमें दुःखों को सहन करना पड़ेगा। यह तो हुई शुद्धिकरण (purification) की बात। इसके अतिरिक्त जो जीवों की हत्या करता है, दूसरों को सताता है, उसका बदला चुकाने के लिये भी शरीर धारण करने पड़ेंगे। उनकी योनि में जाना पड़ेगा और भोग भोगना पड़ेंगा। अब ज़रा विचार करो कि मनुष्य के दुःखों का कोई अंत नहीं है। उसके कष्टों की कोई सीमा नहीं है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में इस संसार को दुःखों का घर (दुःखालय) कहा है।

यह नश्वर जगत जन्म, बुढ़ापा तथा मृत्यु के क्लेशों से भरा हुआ है। इस जगत के सारे लोक, अर्थात् सबसे ऊपर के लोक से लेकर सबसे नीचे के लोक तक, दुःखों के घर हैं, जहां जन्म–मरण का चक्कर लगा रहता है। किन्तु हे कुन्तीपुत्र! जो मेरे धाम को प्राप्त कर लेता है, वह फिर कभी जन्म नहीं लेता।

**आब्रह्मभुवनाल्लोका पुनरावर्तिनोऽर्जुन।**
**मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।।** (गीता 8.16)

इस दुःखों से भरे जगत से बचने का एक ही उपाय है कि मानव, हरिनाम की शरण में चला जाये। केवल हरिनाम ही इसे परम आनंद प्रदान कर सकता है। इस कलियुग में इसके अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं।

**हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।**
**कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा।।**

इस कलियुग में केवल हरिनाम, केवल हरिनाम और केवल हरिनाम से ही भगवद्प्राप्ति हो सकती है। इसके बिना कोई गति नहीं है, नहीं है, नहीं है। इसलिये बार–बार हरे कृष्ण महामंत्र, जो कि इस कलियुग का महामंत्र है, का जप व कीर्तन करने की प्रार्थना की जाती है। इस महामंत्र को जपने के लिये कोई नियम भी नहीं है। उठते–बैठते, चलते–फिरते, जब भी चाहो, जैसे भी चाहो, इसको जपते रहो। इस प्रकार अभ्यास करते–करते, मरते समय यही नाम जिह्वा पर आवेगा। अन्त समय में भगवान् का नाम मुख से निकलने पर सभी दुःखों का सदा–सदा के लिये अंत हो जायेगा और मनुष्य ऐसे सुखसागर का आनंद लेगा, जहां दुःखों की छाया भी नहीं है। यदि मरते समय संसार की याद बनी रहे तो संसार में बार–बार आना पड़ेगा। यदि अंत समय में भगवान् का नाम याद रहा तो भगवद्–प्राप्ति होगी। यह सुनिश्चित है। भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं:–

**यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।**
**तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।।** (गीता 8.6)

हे कुन्तीपुत्र ! शरीर का त्याग करते समय मनुष्य जिस–जिस भाव का स्मरण करता है, वह उस भाव को निश्चित रूप से प्राप्त होता है। हमारे जीवन के अन्त में, हमारे मुख से भगवान् का नाम निकले, इसके लिये :–

**हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।**
**हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।**

इस महामंत्र का जप करना सर्वश्रेष्ठ है। भगवान् ने सभी प्राणियों को शरीर रूपी धर्मशाला बना कर दी है। सभी जीवात्मायें भगवान् के पुत्र हैं। हर जीव के शरीर का आकार भी भिन्न–भिन्न है। कोई लंबा, कोई चौड़ा, कोई गोल, कोई छोटा, कोई बड़ा आदि–आदि। साँप का शरीर लंबा होता है, कछुए का गोल, हाथी का मोटा–बड़ा, लंबा, चौड़ा। पर ये भौतिक शरीर नाशवान हैं। मनुष्य के शरीर की रचना भगवान् जैसी है, परन्तु वह पांच तत्वों से बना हुआ है, जिसमें जीव और आत्मा दोनों साथ–साथ रहते हैं। जीव अज्ञान प्रधान है और आत्मा ज्ञान प्रधान है। जीव माया में लिप्त रहता है इसलिये बंधन में फंसा है। आत्मा चिन्मय है, उसमें दिव्यशक्ति है। आत्मा निर्लिप्त और नित्यमुक्त है।

भगवान् ने बोला है कि 'हे मानव! मैने तुम्हें बुद्धि प्रदान की है इसलिये चौरासी लाख योनियों के जीव, जो मेरे पुत्र हैं, उन सबका भरण–पोषण कर! उनकी रक्षा कर! उन सब जीवों में मुझे देख! यदि तू ऐसा न करके, उनको कष्ट देता है तो तुम्हें कभी भी चैन नहीं मिलेगा। कभी शांति नसीब नहीं होगी। हर जीव की एक उम्र निर्धारित होती है, यदि इस अवधि के बीत जाने पर उस शरीर का अंत हो जाता है तो किसी को कोई दोष नहीं, परंतु यदि मनुष्य इन शरीरों की आयु पूरी होने से पहले ही उन्हें नष्ट करता है तो वह पाप का भागी बन जाता है और ऐसे असंख्य पाप मनुष्य अपने जीवन में करता है। अतः उसके दुःखों का अंत नहीं होता।'

यह मानव जब से भगवान् की गोद से बिछुड़ा है, अनंत कोटि कल्प बीत जाने पर भी पुनः भगवान् की गोद को प्राप्त नहीं कर सका है। भगवान् के पास जाने का मार्ग उसे किसी ने बताया ही नहीं है। भगवान् के पास जाने का सही मार्ग कोई सच्चा साधु, कोई भगवान् का प्रेमी साधु ही बता सकता है। मेरे गुरुदेव इस बात की शत–प्रतिशत (100%) गारंटी देते हैं कि जो साधक हरिनाम की चौंसठ माला (एक लाख हरिनाम) प्रतिदिन उच्चारणपूर्वक करेगा और कान से सुनेगा तो मौत के समय उसे स्वयं भगवान् लेने पधारते हैं। माला पर संख्या पूरी करें और चलते–फिरते, खाते–पीते, सोते–जागते, बिना माला भी हरिनाम करता रहे। ऐसे परम भक्त का भगवान् के धाम में भव्य स्वागत होता है और भगवान् उसकी रुचि के अनुसार उसे अपनी सेवा प्रदान करते हैं जहां वह सदा–सदा के लिये परम आनंद में डूबा रहता है।

**वैष्णव उत्तम सेइ याहारे देखिले।**
**कृष्णनाम आसे मुखे कृष्णभक्ति मिले।।**

जिस वैष्णव के दर्शनमात्र से जीवों के मुख से श्रीकृष्णनाम उदित हो जाता हो तथा जीवों को श्रीकृष्ण की भक्ति की प्राप्ति हो, वही उत्तम वैष्णव है। – श्रीहरिनाम चिंतामणि

4

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः ।।

छींड की ढाणी
दि. 28 / 12 / 2006

# श्री गुरुदेव का बताया हुआ हरिनाम जपने का साधन

एक बार मैंने श्री गुरुदेव जी से पूछा कि हरिनाम को कैसे जपना चाहिए? उत्तर मिला कि जिस प्रकार तुम सत्संग या किसी चर्चा को सुनते हो, इसी प्रकार से तुम हरिनाम को सुना करो। सुनने से ही तो 'कोई बात' हृदयगम्य होती है, हृदय में अंकित होती है। फिर 'वह बात' हृदय से बुद्धि में आ जाती है। बुद्धि इसका निर्णय करती है। निर्णय होने पर स्थूल शरीर की इन्द्रियों पर आती है। इंद्रियां इसे करना आरंभ कर देती है। इन्द्रियों द्वारा करने पर वह कार्य सफल हो जाता है। अब हरिनाम के ऊपर इसे आजमाइए।

श्री गुरुदेव से हरिनाम कान से सुना, तब हृदय में बैठा। हृदय से बुद्धि में गया। बुद्धि ने निर्णय किया कि हरिनाम करने से दुःख–निवृति व सुख का प्रादुर्भाव होगा। तब जापक माला को हाथ (इन्द्रिय) में लेगा। जिह्वा इसे जपना शुरू करेगी। मन इसे पकड़ेगा। कान इसे सुनने की कोशिश करेगा। लेकिन मन ऊबेगा, सुनना नहीं चाहेगा, क्योंकि अभी इसमें आनंद नहीं आएगा। धीरे–धीरे कुछ दिनों में जब आनंद आने लगेगा, तब मन कहीं नहीं जाएगा, नाम में रुचि आ जावेगी। धीरे–धीरे अभ्यास बढ़ाना। अर्जुन को भगवान् ने अभ्यास के लिए कहा है। मन न लगने से सुकृति होगी, प्रेम नहीं आएगा। सुकृति अगले जन्म में सद्गुरु प्राप्ति करा देगी।

श्री जी का पत्र आया था। उसमें एक पद्य रचना थी। उसमें श्रीकृष्ण की बचपन की समस्त लीला वर्णन की थी। भक्तवर ने लिखा था, यदि अनाधिकार चेष्टा की गई हो तो पत्र को फाड़कर फैंक देना। आप उनसे कह देना कि भगवान् के प्रति जो भी लेख लिखा जाता है, वह भगवान् को प्रिय होता है। यदि कोई उसे अनाधिकार चेष्टा मानता है तो वह घोर अपराधी है। इसे लिखने वाला मेरा प्राण–प्रिय है। उसको फाड़ने से तो मैं मायिक हो जाऊँगा। अपराधी बन जाऊँगा। आप उन्हें इस बारे में मेरा मत बता देने की कृपा करें।

## माला अलौकिक वस्तु है

श्रील गुरुदेव माला द्वारा जीव का भगवान् से नाता जोड़ते हैं। जिस प्रकार विवाह के समय ब्राह्मणदेव पति–पत्नी का गठजोड़ करते हैं अर्थात् पत्नी को उसके पति के सुपुर्द कर देते हैं और वह सारी जिंदगी अपने पति की सेवा में रत रहती है। ठीक उसी प्रकार श्री गुरुदेव माला द्वारा जीव को भगवान् के सुपुर्द कर देते हैं ताकि जीव पूरा जीवन भगवान्

की सेवा में, उनके नाम–स्मरण में लगा रहे। श्रील गुरुदेव की अहैतुकी कृपा से जीवात्मा, माया रूपी पीहर (मायके) से भगवत्–चरण रूपी ससुराल में अपना जीवन बिताने के लिये सदा के लिये चली जाती है और भगवत् रूपी पति (परमात्मा) की सेवा में लगी रहती है।

जिस माला का इतना महत्व है, वह कोई साधारण वस्तु नहीं हो सकती! उसे बड़ी सावधानी के साथ रखने और उस पर जप करने संबंधी कुछ बातें सबको ध्यान में रखनी चाहिये। इस बारे में अखिल भारतीय श्री चैतन्य गौड़ीय मठ के वर्तमान आचार्य ऊँ विष्णुपाद 108 श्री श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज जी ने कहा है कि–"जपमाला को टांगकर नहीं रखना चाहिये तथा जेब में, विशेष करके निचली जेब में अर्थात् पैंट इत्यादि की जेब में नहीं रखना चाहिये। यात्रा के समय अथवा बाहरी दौरे के कार्यक्रम में, इसे विशेष रूप से गले में लटका कर रखना चाहिये।"

माला के संबंध में कुछ जरूरी बातें जो सबको ध्यान रखनी चाहिये, निम्नलिखित हैं :–

1. जब भी हरिनाम करने के लिये, भगवन्–नाम का स्मरण करने के लिये हाथ में माला पकड़ो तो माला को सिर झुका कर प्रणाम करो तथा इसके बाद हृदय से लगाओ। फिर पुचकार कर माँ तुलसी माला के चरण को प्यार भर चुंबन देवो, ऐसा करने से आप देखोगे कि सुमेरू अपने आप ही हरिनाम करने वाले को याद कराने हेतु हाथ में आ जायेगा। सुमेरू को ढूंढना नहीं पड़ेगा। माला कोई जड़वस्तु नहीं है, यह एक अलौकिक वस्तु है, भगवान् की प्यारी है। तुलसी के बिना भगवान् कोई भी वस्तु अंगीकार नहीं करते।

2. जब एक माला पूरी हो जावे अर्थात् 108 मनकों (मनियों) पर हरिनाम हो जावे तो माला को फिर से प्रणाम करें, फिर अगली माला शुरू करके 108 मनकों पर हरिनाम करें। तुलसी माला भक्त के कंठ (गले) का हार होती है। जैसे हम सोने या हीरे के हार को गले में से नहीं निकालते, उसी प्रकार तुलसी माला भी कंठ (गले) में डालकर ही रखनी चाहिए।

जब आप माला हाथ में लेकर हरिनाम करते हो तो याद रखो कि किसी भी वैष्णवजन को झुककर प्रणाम नहीं करना। उन्हें सादर हरे कृष्ण, राधाकृष्ण, जय सिया–राम बोलकर प्रणाम करें। हाथ में माला लेकर, झुककर प्रणाम करने से माला का भी प्रणाम हो जाता है जो कि सर्वथा ही अनुचित है क्योंकि माला श्रील गुरुदेव की आशीर्वाद की निधि स्वरूप है। भगवान् के सामने श्रीगुरुदेव को प्रणाम किया जा सकता है, पर वह भी माला को अपने तन से दूर रखकर। भगवान् के सामने श्रीगुरुदेव को प्रणाम करना, श्रीगुरुदेव को कष्ट का अनुभव करा देगा। श्री गुरुदेव यह कभी नहीं चाहेंगे कि शिष्य भगवान् के सामने उन्हें झुककर प्रणाम करें। भगवान् के सामने से हटकर, बगल में होकर प्रणाम करना श्रेयस्कर होगा अन्यथा श्रीगुरुदेव को प्रणाम न करने से अपराध हो जायेगा।

3. माला पर हरिनाम करते हुये, किसी वैष्णव या सत्संग के बारे में बातचीत की जा सकती है लेकिन संसार के बारे में बातचीत करने से अपराध बन जायेगा। यदि कोई वैष्णव नहीं है तो उसे "जय श्रीकृष्ण" बोलना चाहिये और उससे संसारी वार्तालाप न करना ही उचित होगा।

4. धाम में परिक्रमा करते हुये, यदि पेशाब आ जावे तो माला को पूरी करके या अधूरी छोड़कर, माला को शुद्ध स्थान पर रखकर पेशाब करना युक्तिसंगत है। जहां तक संभव हो तो अपने पास एक छोटी सी शीशी या बोतल में पानी रखना चाहिये। पेशाब करने के बाद हाथ धोकर, मुख को धोकर, फिर जपमाला को हाथ में लेकर जप करना ही ठीक है। यदि माला अधूरी रह गई थी तो उसे गिनती में नहीं लेना चाहिये अर्थात् माला पर शुरू से जप करना चाहिये। अधूरी की गई माला की भी अदृश्य रूप से जप में गिनती हो जाती है।

5. भगवत्–प्रसाद पाते समय माला अपने पास इस तरह रखें कि झूठा (जूठा) हाथ स्पर्श न हो सके। कई बार ऐसी जगह भी प्रसाद पाना पड़ता है जहां माला को अपने से दूर रखना परेशानी का कारण बन सकता है, जैसे आपने माला कहीं रख दी और बंदर उसे उठा कर ले गया या फिर जल्दी–जल्दी में माला वहीं भूल गये। इसलिये माला को बड़ी सावधानीपूर्वक, संभाल कर रखना चाहिये।

6. जब माला की झोली (bead bag) मैली/गंदी हो जावे तो उसे भगवत्–पर्व के दिन धोना युक्तिसंगत है। माला झोली को शुद्ध स्थान पर ही सुखाना चाहिये तथा बंदर इत्यादि से बचाकर रखना चाहिये। माला यदि खो जाती है तो जघन्य अपराध बन जाता है। कई लोग जपमाला को कहीं भी, जैसे खाने के मेज पर, चारपाई पर, बिस्तर या फिर सोफे पर रख देते हैं, ऐसा करने से माला का अपमान होता है। जिस प्रकार आप अपनी कीमती वस्तुओं (रुपया, पैसा, गहने इत्यादि) को बड़ी सावधानी से संभाल कर एवं सुरक्षित रखते हैं, उसी प्रकार माला को भी संभाल कर रखना चाहिये। श्रीगुरुदेव द्वारा दी गई माला खो जाने पर दुबारा प्राप्त करना असंभव होगा। माला खो जाने से श्रीगुरुदेव से नाता टूट जाता है जो भजन में बहुत बड़ी बाधा बन जायेगा। जैसे सबको अपनी जान (जिंदगी) प्यारी होती है, उसी प्रकार श्रीगुरुदेव द्वारा दी गई माला भी हमें अपनी जी–जान से अधिक प्यारी होनी चाहिये। माला को ऐसे आदर देने से ही भजन में तीव्रता आवेगी वरना भजन में शिथिलता आ जावेगी। भजन में मन नहीं लगेगा।

7. रात को सोते समय माला को प्रणाम करके सोना चाहिये। प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त में उठकर, दूर से ही माला को प्रणाम करने से भक्ति में तीव्रता आ जावेगी। प्रणाम करने के बाद, पेशाब से निवृत होकर, हाथ–पैर और मुंह धोकर, माला को फिर से प्रणाम करके, माला हाथ में लेकर जप शुरू करना चाहिये। ऐसा करने से हरिनाम में मन लगने लगेगा। किसी अनजान भक्त को माला की महिमा बताने से भी हरिनाम में मन लगने लग जावेगा। यही तो सच्चा सत्संग है, जिससे भक्ति का आविर्भाव होता है, भक्ति प्रकट होती है। माला के बारे में जो कुछ भी बताया गया है, जापक इसे झंझट न समझें वरना हरिनाम में मन नहीं लगेगा। संसार की बातों में तो हमें झंझट महसूस नहीं होता परंतु जहां हमारे भले की बात हो, जिसमें हमारा कल्याण हो, यदि ऐसी बातों को हम झंझट समझते हैं तो यह हमारी मूर्खता होगी, अज्ञान होगा।

8. जिस प्रकार जीवात्मा अपने मन को सदैव साथ रखती है यद्यपि वह जानती है कि उसका यह मन पराया है, भगवान् का है, उसी प्रकार भक्त भी माला को यही सोचकर सदैव अपने साथ रखें कि यह मेरे श्रीगुरुदेव की दी हुई है, यह भी पराई है। श्री गुरुदेव द्वारा दी हुई यह माला ही हमें दुःखों से छुड़ाकर सुख के मार्ग पर ले जावेगी। अतः इसे अपने प्राणों से भी प्यारी समझकर संभाल कर रखना होगा।

9. वास्तव में श्रीगुरुदेव ने हम पर अपार कृपा करके, हमें यह माला दी है, यह माया को परास्त करके, जीत लेने का अमोघ हथियार है जो श्रीगुरुदेव ने हमें सौंपा है। यदि इस हथियार को अपने से दूर रखेंगे तो माया कभी भी आक्रमण कर देगी। माया तो हमारी घोर शत्रु है। शत्रु तो मौका मिलते ही आक्रमण कर देगा पर यदि हमारे पास, अपनी सुरक्षा में, श्रीगुरुदेव द्वारा दी हुई माला है तो माया हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती। श्रीगुरुदेव ने माला के रूप में, हमें जो यह अमोघ हथियार दिया है, उसमें हरिनाम की अतुलित दिव्यशक्ति समाहित है। अखिल लोक ब्रह्मांडों में कोई भी इस दिव्य शक्ति को परास्त नहीं कर सकता। यहां तक कि ब्रह्मांडों को सृजन करने वाले भगवान् भी इसकी शक्ति के आगे नतमस्तक हो जाते हैं अर्थात् आत्म–समर्पण कर देते हैं। श्री गुरुदेव द्वारा दी गई इस माला पर, जब साधक संख्यापूर्वक, कान से सुनकर, उच्चारणपूर्वक हरिनाम करता है तो उसके हृदय में विरहाग्नि प्रज्ज्वलित हो जाती है, फिर भगवान् बेबस हो जाते हैं और उन्हें आना ही पड़ता है।

10. जिसको यह अमोघ हथियार प्राप्त हो जाता है, वह बहुत भाग्यशाली होता है। अखिलकोटि ब्रह्माण्डों में भगवान् भी जिसके आगे नतमस्तक हो जायें, उस माला की महिमा वर्णनातीत है। भगवान्, मां यशोदा के डर से थर–थर कांपते हैं, रोते हैं, यहां तक कि डर के मारे उन्होंने पेशाब भी कर दिया। यह सब उस लीलाधर की लीला है। अपने भक्त के लिये वे क्या नहीं कर सकते! जो अहीरों की छोहरियों की छछिया भर छाछ पर नाच सकता है, उसे जब उसका प्यारा भक्त तुलसी (जो भगवान् को अतिशय प्यारी है) माला के मनकों पर नाम ले लेकर प्रेम से पुकारेगा, तो खिंचा हुआ चला नहीं आयेगा क्या? उसे आना ही पड़ता है–यह उसकी प्रतिज्ञा है।

इस संसार में अनगिनत जीव हैं। उनमें भी अरबों मनुष्य हैं। उन असंख्य मनुष्यों में कितने ऐसे भाग्यशाली जीव हैं जिनके पास श्रीगुरुदेव द्वारा प्रदत्त यह अमोघ हथियार है? एक ऐसा हथियार जो माया को परास्त करके इसी जन्म में, जन्म–मरण के आवागमन से छुड़ा कर भगवान् के धाम–गोलोकधाम में ले जायेगा।

आजकल लोग माला को गले में डालकर रखने में शर्म महसूस करते हैं, उसे पर्स में या पैंट की जेब में रखते हैं, यह अपराध है। यही एक कारण है कि हरिनाम साधकों का भजन में मन नहीं लगता। जब नाम रूपी नैया में साधक की श्रद्धा ही नहीं है, विश्वास ही नहीं है तो साधक उस नैया में बैठकर भवसागर से पार कैसे हो सकेगा? बिना श्रद्धा और विश्वास के तो मंझधार में ही गोते खाता रहेगा। जहां श्री गुरुदेव द्वारा दी गई तुलसी माला

का सम्मान नहीं होता, वहां हरिनाम में रुचि हो ही नहीं सकती। हरिनाम में रुचि हुए बिना कुछ भी नहीं होगा।

परमाराध्य, पतितपावन, परमकरुणामय ॐ विष्णुपाद 108 श्री श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज, जो इस समय अखिल भारतीय चैतन्य गौड़ीय मठ के प्रधानाचार्य हैं, को मैंने हमेशा ही देखा है कि उनकी जपमाला हमेशा उनके गले में ही होती है। जपमाला की वास्तविक महिमा तो वही जानते हैं। हमें भी उनसे यह शिक्षा लेनी चाहिये।

प्रेमीभक्तों ! भगवान् के पास पहुंचने में अनगिनत बाधाएं हैं जो हमारे रास्ते में आती हैं। हम मठ मंदिर में जाते हैं। वहां भी केवल जड़ दर्शन करते हैं। भावदर्शन तो किसी विरले को ही होता है। इसी प्रकार हम तीर्थयात्रा या धाम–परिक्रमा करने जाते हैं पर बिना भाव से, केवल मात्र परिश्रम करके वापस आ जाते हैं। तीर्थ–यात्रा, जड़–भ्रमण बन कर रह जाता है और हम तीर्थ अपराध या धाम–अपराध लेकर घर वापस आ जाते हैं। बिना भावदर्शन के सब कुछ व्यर्थ है, मन का भ्रम है, यह मैं नहीं, श्रील नरोत्तम दास महाशय ने कहा है–

तीर्थयात्रा परिश्रम, केवल मनेर–भ्रम, सर्वसिद्धि गोविंद–चरण।
सुदृढ़ विश्वास करि, मद–मात्सर्य परिहरि, सदा कर अनन्य–भजन।।
कृष्ण भक्त अंग हेरि, कृष्ण भक्त संग करि, श्रद्धान्वित श्रवण–कीर्तन।
अर्चन, स्मरण, ध्यान, नवभक्ति महाज्ञान, एई भक्ति परम कारण।।

– श्री प्रेमभक्ति चन्द्रिका 17.18

कई लोग ऐसा समझते हैं कि तीर्थ यात्रा करने से पुण्य होता है और उससे मनोरथ सिद्ध होते हैं किन्तु तीर्थयात्रा एकमात्र परिश्रम ही है। यह केवल मन का भ्रम है कि तीर्थयात्रा से पुण्य होता है, वास्तव में श्री गोविंद के चरणों की भक्ति ही सर्वसिद्धि प्रदान करने वाली है। अतः दृढ़–विश्वासपूर्वक श्री गोविंद का अनन्य भजन करना चाहिये, किसी भी दूसरे साधन द्वारा मनोरथों की पूर्ति की आशा नहीं रखनी चाहिये। अज्ञानमय अहंकार तथा दूसरों के उत्कर्ष को सहन न करने की प्रवृति का त्याग कर देना चाहिये। श्रीकृष्ण के भक्तों का दर्शन करना और उनका ही संग करना चाहिये। श्रद्धापूर्वक श्रीकृष्ण नाम, लीला, गुणों को सुनना एवं उनका कीर्तन करना चाहिये। श्रीकृष्ण की पूजा, उनका स्मरण तथा ध्यान, यही वैष्णवों के लिये आचरणीय है। यही नवविधा–भक्ति का महत् स्वरूप है। इसी नवविधा भक्ति का आचरण ही प्रेम–भक्ति का प्रधान कारण है।

हे हरि! मैं अगणित अपराधों से ग्रस्त हूँ, भयंकर संसार रूपी समुद्र में गोते खा रहा हूँ तथा बिल्कुल ही आश्रयहीन हूँ। अतः आपकी शरण ग्रहण कर रहा हूँ। आप अपने अनेक गुणों में से केवल एक गुण–'कृपा' के द्वारा मुझे अपना बना लें अर्थात् मुझे अपने दास के रूप में स्वीकार कर लें।

5

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः।।

छींड की ढाणी
दि. 16/07/2007

# श्री हरिनाम का स्मरण अन्तःकरण से हो

फोन पर अधिक भक्ति–चर्चा नहीं हो सकती, अतः पत्र द्वारा ही आपसे आशीर्वाद लिया जा सकता है। अतः मुझ अधम पर कृपा करते रहिये। मेरा चतुर्मास में आपके चरणों में आना असम्भव जान पड़ता है। परिवार वाले भेजकर प्रसन्न नहीं हैं; मैं भी जबरन आना नहीं चाहता क्योंकि मैं अपराध से डरता रहता हूँ। यहाँ भी मेरा भजन सुचारू रूप से आप सबकी कृपा से चलता रहता है। जैसे ठाकुर प्रेरित करता है, मैं पत्रों द्वारा आपसे कहता रहूँगा। मेरी प्रसन्नता तो इसी में है कि आप सबका हरिनाम प्रेम सहित होता रहे वरना जीवन शीघ्र गर्त में जा ही रहा है। सब सुख–सुविधायें होते हुए भी यदि हरिनाम नहीं हो रहा है तो जीवन में इसके तुल्य कोई नुकसान नहीं है। किन्तु यह सब संभव होगा नाम–जापकों की कृपा से ही। अपनी सामर्थ्य से कुछ भी नहीं होगा। अपने गुरु–वर्ग में नाम–जापकों की बहुतायत है। जिससे भी प्रार्थना करोगे, नाम का आशीर्वाद मिलेगा ही। शिवजी, उमा महारानी को माध्यम बनाकर जीवों को सच्चा रास्ता बता रहे हैं कि :–

**"कलियुग केवल नाम अधारा। सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा।।"**

सुमिर–सुमिर, ये दो बार क्यों कहा गया है? इसका आशय है कि चलते–फिरते, सोते–जागते, खाते–पीते, उबासी लेते, छींकते–खाँसते हर समय हरिनाम मुख से उच्चारण करने से सुकृति होती है। जैसा कि संसार में देखा जाता है कि आपस में मिलते हुये बोला करते हैं – "भैया राम–राम!" "राधा–गोविंद!" "जय श्री राधे!" आदि आदि। इसका आशय यह है कि किसी भी तरह मुख से हरिनाम उच्चारण हो तो सुकृति इकट्ठी होकर जन्म–जन्मातर में कभी तो दुःख के सागर, आवागमन, जन्ममरण से छुटकारा मिलेगा। मैं नहीं कह रहा हूँ, धर्म–शास्त्रों में लेख है :–

- **"भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।"**
- **"जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ।।"**
- **"कृतजुग त्रेताँ, द्वापर पूजा मख अरु जोग।**
  **जो गति होइ सो कलि, हरि नाम से पावहिं लोग।।"**
- **"चहुँ जुग तीन काल तिंहु लोका। भये नाम जप जीव बिसोका।।"**
- **"चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि विशेष नहीं आन उपाऊ।।"**

कितने उदाहरण देकर समझाया जाये, कोई अन्त नहीं है। अतः जो भी नाम का जीवन में सहारा लेगा, वही इस जीवन में सुख–सागर में तैरेगा। श्रीगुरुवर्ग ने केवल 16 माला का नियम इसीलिये बनाया है कि जापक पर अधिक भार न बन जाये। भार लगने पर जप छोड़ भी सकता है। लेकिन दो–चार साल के बाद तो एक लाख नाम यानि 64 माला का नियम लेना ही चाहिये, यदि इसी जन्म में अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की प्राप्ति करनी हो या सुखी जीवन बिताना हो तो। फिर दोबारा मानुष जन्म मिलना असम्भव ही है। सभी कहते रहते हैं कि ''अमुक सेवा कर रहे हैं, इसलिए अधिक हरिनाम का समय मिलता ही नहीं है।'' फिर मैं कहता हूँ कि सेवा से तो भक्ति मिलनी ही चाहिये क्योंकि सेवा का आशय है भक्ति। यदि भक्ति (सेवा) असली (वास्तविक) है, तो ठाकुर से लगाव होना ही चाहिये। जब लगाव होगा तो ठाकुर जी से प्रेम तो होगा ही। जब प्रेम होगा, तब शरणागति का भाव आयेगा ही। यदि शरणागति का भाव आएगा तो विरहाग्नि प्रगट होना परम–आवश्यक है। पर ऐसा देखा नहीं जा रहा है। यह सब तब ही होगा, जब संसार से प्रेम हटेगा। केवल कहने से कुछ नहीं होता कि 'सेवा कर रहे है।' केवल बुद्धि ही कह रही है, हृदयगम्य आचरण हुआ ही नहीं है। अंतःकरण ने इसे स्वीकार किया ही नहीं है। कहते–कहते सारी उमर चली गयी कि यदि सेवा ठाकुर की हो रही है, तो सेवा का फल अर्थात् ठाकुर से प्रेम होना ही चाहिये। यदि नहीं है, तो सेवा केवल दिखावा है। कठपुतली का नाच है। जरा गहरे दिमाग से सोचो। आप धोखे में हो! असलीयत बहुत दूर है। हरिनाम–संख्या, एक लाख से तीन लाख करनी होगी। श्रीगौरहरि ने एक लाख नाम प्रतिदिन जप करने के लिए सबको आदेश क्यों दिया था? क्या वे जानते नहीं थे कि 64 माला में शीघ्र मन नहीं लगेगा? लेकिन जब अधिक जप होगा, तो सुकृति भी ज्यादा होगी। वही सुकृति नाम में मन लगा देगी। हमारे गुरुवर्ग क्यों संख्या बढ़ाकर, रात में 2 बजे उठकर प्रातः तक हरिनाम करते थे। दिन भर भी नाम करते रहते थे। क्या वे पागल थे? नहीं! हम पागल हैं, जो बहाना बनाते रहते हैं कि समय ही नहीं मिलता। और कामों के लिये समय कैसे मिल जाता है? यह सभी काम असार व अनित्य हैं। जो नित्य रहने वाला कर्म है, उसके लिये समय नहीं मिलता। क्यों अपना जीवन नरक में जाने के लिये तैयार कर रहे हो? शर्म की बात है। ज्ञानी होते हुये भी अज्ञानी बनते जा रहे हो। गहरा दुःख है लेकिन क्या किया जाये? कोई मेरी सुन ही नहीं रहा है ! समय सबको मिलता है। मैंने नौकरी की, तब मुझे एक लाख हरिनाम का समय कैसे मिल जाता था? सच्ची बात तो यह है कि हरिनाम में 100% श्रद्धा नहीं है। जहाँ श्रद्धा होती है, वहाँ मन का लगाव स्वतः ही होता है। झूठ–मूठ कहने से काम चलने वाला नहीं है। थाली सामने परोसी गई, फिर भी खाना नहीं चाहो तो परोसने वाला क्या करे! भूखे मरो! कर्मों को रोवो! समय चला जायेगा, सिर पर हाथ रखकर रोवोगे।

दिन में (क्योकि सूर्य भगवान् के प्रति अपराध बनता है), दोनों संध्या, पर्व, त्यौहार, माहवारी, प्रातः, शाम, एकादशी, पूर्णमासी, मंगलवार, बेमन से, रुग्णावस्था, क्रोधवृत्ति व

अप्रसन्नता की अवस्था में जो भी स्त्री–संग करता है, वह महान अपराधी होकर दुष्टों को जन्म देता है। वही सन्तान माँ–बाप तथा पड़ोसियों के दुःख का कारण बन जाती है। हरिनाम में इसका मन नहीं लग सकता। घर में कलि का प्रवेश हो जाने से कलह रहेगा। हरिनाम का अनुष्ठान करके स्त्री संग करो तो महात्मा जन्म लेगा। प्रत्यक्ष में प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। कोई किसी के दुःख का कारण नहीं है। स्वयं ने ही दुःख का बीज बोया है। काम का वेग भक्ति का नाश कर देता है। प्रेमावस्था को सूखा देता है। अतः संयम रखकर जो हरिनाम करेगा, वही शरणागति–भाव को जागृत करेगा वरना धूलि में से तेल निकालने जैसा होगा।

अब भी समय रहते समझ जावो, वरना दण्ड भोगना पड़ेगा। संयम तोड़ोगे तो रोगी हो जाओगे। हड्डियाँ गल कर निकलेंगी। फिर भजन बहुत दूर की बात होगी। समझाते–समझाते, मैं तो थक गया, कब चेत होगा? क्या सोते ही रहोगे? एक दिन हमेशा के लिये सो जावोगे। कोई नहीं पूछेगा। अब खास बात बता रहा हूँ। सभी कहा करते हैं कि हरिनाम में मन नहीं लगता। लगेगा कैसे? क्योंकि इसका लाभ किसी को मालूम ही नहीं है। लाभ मालूम हो तो नाम पर श्रद्धा अवश्य होगी। जब श्रद्धा होगी तो मन कहीं जायेगा ही नहीं। जब मन कहीं नहीं जावेगा तो एक अलौकिक–आनन्द की मस्ती अनुभूत होगी। मस्ती में झूमेगा। कभी हंसेगा। कभी सुस्त होकर पड़ा रहेगा। एक पागल जैसी स्थिति प्रगट हो जायेगी। निडरता आ जायेगी, जैसे प्रहलाद महाराज को आई थी। हरिनाम–महामंत्र की चार माला कान से सुनकर करने से अन्तःकरण में एक अलौकिक भगवत्–दर्शन होने लगेगा जिससे मन वहाँ से हटना नहीं चाहेगा। दिन रात आनन्दानुभूति हृदय में लहरें लेने लगेगी। यह अवस्था इसलिये नहीं हो रही है क्योंकि अन्तःकरण में संसार का कूड़ा–कर्कट भरा पड़ा है। चार माला करने से वह कूड़ा–करकट जलकर, अश्रुधारा में बहकर बाहर निकल जायेगा। चार माला क्यों नहीं हो रही है? इसका कारण है–भक्तापराध। मान–प्रतिष्ठा की चाह में अहंकार छुपा रहता है। अहंकार भगवान् का शत्रु है। शत्रु से प्यार करना भगवान् से दूर रहना ही है। आप सभी Phone करते रहना तो सजगता रहेगी वरना आँखें बन्द हो जायेंगी। यह मैं उकसा नहीं रहा हूँ। इस तरह से ठाकुर जी ही मेरे माध्यम से आपको अपनाना चाहते हैं।

श्रीशुकदेव गोस्वामी महाराज परीक्षित को उपदेश देते हैं–

**कलेर्दोषनिधे राजन् अस्ति हि एको महान गुणः।**
**कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्त संगः परं व्रजेत।।**

(श्रीमद्भागवत 12.3.51)

हे राजन्, यद्यपि कलियुग दोषों का सागर है, फिर भी इस युग में एक अच्छा गुण भी है– केवल हरे कृष्ण महामंत्र का कीर्तन करने से मनुष्य भवबन्धन से मुक्त हो जाता है और दिव्य धाम को प्राप्त करता है।

6

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः।।

छींड की ढाणी
दि. 28/08/2007

# श्री हरिनाम ही परमानन्द का जनक

भगवान् ने कलियुग को चार लाख बत्तीस हजार साल के लिए मृत्यु लोक में राज करने का आदेश दिया। कलि महाराज का स्वभाव चांडाल प्रकृति का है, अतः जो उसके स्वभावानुसार जीवनयापन करेगा, उस के अनुकूल कलि राजा का बर्ताव होगा। जो उसके स्वभाव के विरुद्ध होगा, उसे कलि महाराज कभी सुखी नहीं देख सकेगा। ऐसा इस समय देखने को मिल भी रहा है।

कलि राजा पर शासन करने वाला अखिल ब्रह्माण्डों का पालनकर्ता हरिनाम (भगवान्) है। जो मानव श्री हरिनाम की शरण में रहकर अपना जीवनयापन करेगा, उसे कलि कभी भी नहीं सताएगा, क्योंकि उसके ऊपर ठाकुर जी का शासन है। भगवान् ने जब उसे राजा बनाया तो उसे कहा था कि यदि मेरे भक्तजन से टकराएगा तो जल कर खाक हो जाएगा। प्रत्यक्ष में देखा भी जा रहा है कि जिस घर में, मंदिर आदि में, मस्जिद में, सच्चा प्यार अर्थात् हरिनाम नहीं हो रहा है, वहाँ हर समय कलह मचा रहता है। सद्–व्यवहार वहाँ है ही नहीं। सौहार्दपना मूल से चला गया है। यहाँ तक कि मार–पीट भी होती रहती है।

कलि का प्रकोप प्रत्यक्ष नजर आ रहा है। धनी भी दुःखी, गरीब भी दुःखी। राजा भी दुःखी तो रंक भी दुःखी। कोई सुखी नहीं, क्योंकि इस मृत्यु लोक में कोई रक्षक नहीं है, सभी भक्षक बनकर सता रहे हैं। सच्चे भगवत् भक्त ही (जो एक लाख हरिनाम अर्थात् 64 माला नित्य स्मरण करते हैं) सुखी हैं, क्योंकि उनके रक्षक–पालनकर्ता हरिनाम हैं। इन पर भी कलि का प्रभाव तो पड़ता ही है पर हरिनाम करने से वे बिगाड़ से बच जाते हैं। प्रत्येक परिवार में, समाज में, गांव में, शहर में, देश–विदेश में कलह कराना, अराजकता, मारपीट, लूट–खसोट करवाना और कहीं पर भी शान्ति न रहने देना एवं ये सब देख–देखकर हँसना–यह कलि का धर्म है।

**"कलियुग केवल नाम अधारा। सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा।।"**

जो सच्चे अन्तःकरण से हरिनाम करता है, उस पर कलि का प्रभाव नहीं पड़ता। वही इस लोक में परम सुखी है। बाकी सभी दुःख की आग में झुलस रहे हैं। प्रत्येक जगह कुसंग का बोल बाला है। कलि ने बोला है – ''संपूर्ण मृत्यु लोक को कुसंग की धधकती हुई आग में नहीं झोंक दूँ तो मेरा नाम कलि ही क्या हुआ? ऐसे–ऐसे आविष्कार यहाँ पर करूँगा कि कोई बच नहीं सकेगा। यहाँ तक कि ऋषि–मुनि भी इनकी चपेट में आए बिना नहीं रह

सकेंगे। टीवी (T.V.) का आविष्कार जो मैंने किया है, उसमें बालक–वृद्ध तक कुसंगी बनते रहेंगे। धर्म, मर्यादा, सत्य, न्याय–कुछ भी बचा नहीं रहेगा। दूसरा आविष्कार है अखबार, जिसमें झूठी–सच्ची खबरें छापकर लोगों का सारा समय बर्बाद करता रहूँगा। सद्मार्ग के हेतु समय बचने ही नहीं दूँगा। तीसरा आविष्कार है–मोबाईल, जिसमें गुप्त षड्यन्त्र रचकर बर्बादी का माहौल बनाता रहूँगा। भविष्य में एक आविष्कार और करने वाला हूँ, देखते जाओ। एक ऐसी मशीन बनाऊंगा कि वह मशीन 1000 मीटर दूर से ही घर की, बैंक की, कारखाने की, धन–दौलत बताती रहेगी। मैं मौका देखकर, उस पर हमला करके, सारा माल–मत्ता लूट कर ले जाऊँगा, एवं सबका वहीं पर कत्लेआम कर जाऊँगा। कोई रक्षक नहीं होगा। कोई सुनने वाला नहीं होगा। पैसे का बोलबाला होगा। पैसा देकर आजादी से घूमता रहूँगा। मैंने परीक्षित जैसों को भी नहीं छोड़ा, और तो सब मेरे लिए मच्छर–मक्खी हैं। केवल हरिभक्त (नाम–जापक) पर ही मेरा प्रभाव नहीं चलेगा, जो करोड़ों में एक ही होगा और बाकी सब पाखंडी होंगे। माला जपेंगे और गला काटेंगे। वे मेरे चंगुल से बाहर नहीं जा सकेंगे।''

गौरहरि ने क्यों एक लाख (64 माला) हरिनाम करने का अपने जनों को आदेश दिया है, इसका कारण है कि हरिनाम द्वारा कलि की दुष्टता से बचाव हो सके। भविष्य में समय बहुत खतरनाक आवेगा जिसमें भगवान् का भक्त ही बच पावेगा। गौरहरि भी जानते थे कि 64 माला में किसी का मन रुकेगा नहीं, परन्तु नाम ही धीरे–धीरे मन को रुकवाएगा, जब आनंद आने लगेगा। **"धीरे–धीरे रे मना धीरे सबकुछ होय। माली सींचे सौ घड़ा, रितु आए फल होय।।"** अतः धैर्य रखना होगा। शास्त्र का वाक्य है :–

**"भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।"**

गौरहरि ने इसी वजह से 64 माला करने का आदेश दिया था। इस आदेश का पालन सभी को करना चाहिए। तब ही मंदिरों में प्रेम–श्रद्धा से पूजा हो सकेगी, वरना कपटमयी पूजा तो होती ही है। पुजारी ही देवता (विग्रह) को पुजवाता है। जब पूजक ही श्रद्धाहीन होगा, तो अन्य भी वैसा ही करेंगे। जब श्रद्धा नहीं होगी तो संकीर्तन, पाठ भी कपट की श्रेणी में आवेगा। इससे श्रीविग्रह, पूजा ग्रहण नहीं करेगा व सोता ही रहेगा। प्राण–प्रतिष्ठा के बाद पुजारी ही ठाकुर को जगाता है, वरना सोता रहेगा। सजीवता नहीं रहेगी। भगवान् गौरहरि अच्छी तरह से जानते थे कि ऐसा कलियुग आएगा जिसमें ऋषि–मुनि, महात्मा तक भी नहीं बच पाएँगे, अतः इससे बचने का उपाय अभी से बताना उचित है। इसलिए यह शर्त लगा दी कि जो 64 माला (एक लाख) हरिनाम श्रवणपूर्वक करेगा, उसी के घर पर मैं प्रसाद पाऊँगा। इस पर गहरा विचार करने पर यह निश्चित होता है कि हरिनाम श्रवण के अभाव में मानव को दुःख सागर में डूबना ही पड़ेगा! अतः अभी से इनके बचाव का उपाय बताना उचित होगा।

इन वचनों पर आस्तिकजनों को पूरा ध्यान देना चाहिए कि जो आदेश उन्होंने दिया है कितनी गंभीरता लिए हुए है! जैसा कि देख भी रहे है, जिस ठौर पर भगवान् का नाम,

श्रद्धा व प्रेम से नहीं हो रहा है, वहाँ कलि महाराज ने कलह मचा रखा है। मंदिर हो, घर हो, या वन हो–सभी ठौर पर सारे प्राणी कलह की भीषण आग में झुलसते जा रहे हैं। इस हरिनाम का अमित प्रभाव है। तभी शास्त्र ने भगवत् नाम के लिए घोषणा की है कि–

**"कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई।।"**

नाम सर्वसमर्थ है। आराध्यतम् है। साधन व साध्य दोनों नाम में ओत–प्रोत रहते हैं।

**"चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि विशेष नहीं आन उपाऊ।"**

जिसने नाम की शरणागति ले ली, अर्थात् रात–दिन जप कर रहा है, उसने सद्मार्ग पर अपना जीवन–यापन कर लिया। जिसने नाम की शरणागति नहीं ली, उसके सभी आध्यात्मिक कर्म न के बराबर हैं, क्योंकि कलियुग का धर्म–कर्म हरिनाम जपना ही होता है, जो उसने छोड़ रखा है। मूल में पानी दिया नहीं तो वृक्ष कैसे हरा–भरा रह सकता है?

मंदिरों के ठाकुर जी, जो हरिनाम से ही सजीवता धारण किए हुए हैं, नाम के अभाव में सजीव कैसे रह सकते हैं! केवल पत्थर की मूर्ति ही दिखाई देगी। दर्शन होता है–अन्तःकरण के ज्ञान नेत्र से, पर वह नेत्र हरिनाम–श्रवण के अभाव में खुलते नहीं। जब हरिनाम–श्रवण रूपी काजल का नेत्रों में अन्जन होगा, तब दिव्य दृष्टि स्वतः ही जाग्रत हो जायेगी।

नाम से ध्रुव ने, प्रहलाद ने, भगवान् का हृदय दहला दिया। अन्य भक्तों ने भगवान् के हृदय को मोल ले लिया। गहरा विचार करना होगा कि जो समय गया, सो गया, अब भी चेत कर हरिनाम को अपनावो। खट्वांग राजा ने तो दो घड़ी में ही भगवान् को पा लिया था। सात दिन में परीक्षित जी ने गोलोक धाम की प्राप्ति कर ली थी।

धैर्य रखो, घबरावों नहीं। संसार से मन एक दम हटा लो तो भगवान् शीघ्र मिल जाएंगे। भगवान् केवल तुम्हारा मन लेना चाहते हैं। अब तक मन माया को सौंप रखा है, अब इसी क्षण यह मन भगवान् को सौंप दो तो तुम्हारा अनन्त कोटि जन्मों के दुःखों का बखेड़ा इसी क्षण समाप्त होता हुआ दिखाई देगा। संसार में रहते संसार का काम भी करो लेकिन फंसावट से दूर रहकर हर समय हरिनाम करते रहो व भगवान् को नहीं भूलो। बस तुम्हारा काम बन जायेगा। केवल मन को पलटना है। माया–मोह ही अगला जन्म करवाते हैं। मोह को पलट कर भगवत्–चरणों में रख दो।

**"सन्मुख होइ जीव मोहिं जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं।।"**

हरिनाम–श्रवण को अपनाना ही भगवान् के सामने होना है, अन्य कोई साधन नहीं है।

**"कोटि विप्र वध लागहिं जाहू। आये शरण तजहूँ नहीं ताहू।।"**

समय बड़ी तेजी से जा रहा है, बालपन गया, जवानी गई, बुढ़ापा आकर आपको सचेत कर रहा है कि अब भी चेत जावो, कुछ नहीं बिगड़ा है वरना अचानक मौत आकर तुम्हें निगल जावेगी। इससे पहले कि मौत आवे, भगवान् के चरण में लेट जावो तो यमराज के

मुख पर कालिख पुत जायेगी। भगवान् स्वयं अपने संग में, प्रेम से स्वागत सहित, अपने धाम में ले जाएँगे। चूको मत, अभी से नेत्र खोलकर चल दो। मंगल होगा। कलि ने मोबाइल (Mobile) का जो आविष्कार किया है, यह कामदेव का तथा क्रूरता का साक्षात् स्वरूप है। इसका 10% अच्छा उपयोग तथा 90% खराब उपयोग हो रहा है। भजनानन्दी को भजन के समय मोबाइल बंद रखना चाहिए। आवश्यकता अनुसार ही काम लेना उचित है। टीवी (T.V.) तथा अखबार से तो क्या ही मतलब है! इनसे तो भगवत–चिंतन में बहुत नुकसान होता है। जो भी भक्त इनसे काम लेगा, उसका भजन–स्तर गिरता ही रहेगा।

**निरन्तर नाम लओ, कर तुलसी सेवन। अचिरात् पावे तबे, कृष्णेर चरण।।**

भगवन्नाम का निरन्तर जप करो और साथ ही तुलसी महारानी की सेवा–स्तुति। ऐसा करने से तुम्हें बहुत शीघ्र ही भगवान् श्रीकृष्ण के चरणकमलों की प्राप्ति हो जायेगी। – श्रीचैतन्यचरितामृत अन्तयलीला 3.137

(श्रीमद्भागवत पुराण का अन्तिम श्लोक)

**नामसंकीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशनम्। प्रणामो दुःखशमनस्तं नमामि हरिं परम्।।**

मैं उन भगवान् हरि को सादर नमस्कार करता हूँ, जिनके पवित्र नामों का संकीर्तन सारे पापों को नष्ट करता है और जिनको नमस्कार करने से सारे कष्टों से छुटकारा मिल जाता है।

**अपराध शून्य हय लय कृष्ण नाम। तबे जीव कृष्णप्रेम लभे अविराम।।**

यदि जीव अपराध शून्य होकर कृष्णनाम लेता है, तभी वह बिना किसी बाधा के कृष्णप्रेम प्राप्त करता हैं। – श्रीनवद्वीप धाम माहात्म्य (1.45.46)

7

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः।।

छींड की ढाणी
दि. 10/10/2007

परमाराध्यतम भक्त प्रवर,

दासानुदास, अनिरुद्ध दास का साष्टांग दण्डवत् प्रणाम तथा भजन स्तर बढ़ने की प्रार्थना।

# हरिनाम में मन लगाने के विविध तरीके

(1) हरिनाम को धीमी ध्वनि से कान से सुनते रहें, जिससे ध्वनि बाहर न जाकर स्वयं का कान ही सुने। जोर की ध्वनि थकान पैदा करती है। जीभ का उच्चारण एवं कान का श्रवण एक घर्षण पैदा करता है। जिससे गर्मी पैदा होकर विरहाग्नि प्रज्वलित हो जाती है, इससे अष्ट–सात्विक विकार उदय हो पड़ते हैं। पुलक अश्रुपात होने लग जाता है। रोने से अन्तःकरण के सम्पूर्ण दुर्गुण धीरे–धीरे निकल जाते हैं तथा सद्गुण आकर भरने लग जाते हैं। प्रत्यक्ष आजमाकर देख सकते हैं।

(2) किसी नामनिष्ठ सन्त के चरणों में (प्रत्यक्ष या मानसिक रूप से) बैठकर, हरिनाम करना होगा। इनके अन्तःकरण में भगवान् विराजमान रहते हैं। वहाँ से जापक को देखते रहते हैं तथा नामनिष्ठ सन्त की कृपा भी बरसती रहती है। चार–चार माला प्रत्येक सन्त के चरण में बैठकर कर सकते हैं। सन्तों की कोई कमी नहीं है। अनन्त सन्त चारों युगों में होते आए हैं। मन चाहे जिस सन्त के चरणों में बैठकर माला जप कर सकते हैं। इस साधन से मन संसार में कभी नहीं जायेगा।

(3) मानसिक तथा प्रत्यक्ष रूप से सन्तों के संग में धाम भ्रमण करें। यमुना, गंगा, राधाकुण्ड, श्यामकुण्ड पर सन्त को स्नान करावें तथा वस्त्र धोकर नये कपड़े पहनायें। स्नान कराते समय उनके चरणों का पवित्र जल पीयें, उनके चरणों की रज सिर पर व हृदय पर लगायें, प्रसाद पवावें, उनका झूठा महाप्रसाद पावें तो मन संसार में कभी नहीं जायेगा। इससे अष्टसात्त्विक विकारों का उदय हो पड़ेगा। हरिनाम में मन लगाने के अनेक साधन है।

(4) भगवान् के पास जाने के लिए, किसी भक्त के द्वारा सिफारिश करवाना होता है। यशोदा मैया के पास जाओ, शची माँ के पास जाओ, अद्वैताचार्य के पास जाओ, नारदजी के पास जाओ, सनकादिक के पास जाओ, शबरी के पास जाओ, कपिल की माँ देवहूति के पास जाकर रोओ, रूप, सनातन, राय रामानन्द कितने ही भक्त शिरोमणि हो गए हैं, सभी दयावान हैं, आपकी सिफारिश भगवान् से कर देंगे। भगवान् भक्तों की बात कभी भी टालते नहीं हैं। आपका मन हरिनाम में लगा देंगे। अनन्तकोटि भक्तगण हो गए हैं, किसी के भी

पास जाकर सिफारिश करवा सकते हो, कोई मना करेगा ही नहीं, क्योंकि सभी उदार प्रकृति के हैं।

(5) स्वयं के गुरुजी के चरणों में बैठकर हरिनाम कर सकते हैं। उनका ध्यान कर सकते हैं। उनसे अपनी मन की बात कर सकते हैं। उनकी सेवा में हरिनाम करते हुए रत रह सकते हैं।

(6) मंदिर में जाकर भगवान् का भावमयी नेत्रों से दर्शन व वार्तालाप कर सकते हैं। अपनी व्यथा उनको सुना सकते हैं। इतने तरीकों से मन संसार में जा ही नहीं सकता। फिर कहते हो मन लगता नहीं। झूठी बात है! मन लगता है, पर मन लगाना नहीं चाहते। एक परीक्षार्थी का मन 3 घंटे तक एक क्षण भी कहीं नहीं जाता। बैंक के कैशियर का मन न रुके तो बहुत बड़ा नुकसान हो जाये। केवल मात्र हरिनाम में लोभ नहीं है, श्रद्धा नहीं है, इसीलिए मन चलायमान रहता है।

(7) जितने भगवद् अवतार हुए हैं उनका स्मरण करते हुए जीभ से हरिनाम करते रहना चाहिए।

क– प्रथम तो गौरहरि, जगन्नाथजी के मंदिर में स्तम्भ के पास खड़े होकर कीर्तन करते हुए रो रहे हैं। पुरी में जहाँ–तहाँ दौड़ा–दौड़ी कर भगवान् कृष्ण को पुकार रहे हैं। ''हा कृष्ण! तुम कहाँ हो, कहाँ जाऊँ, कहाँ पाऊँ व्रजेन्द्रनन्दन, कौन बताये वे कहाँ मिलेंगे?'' आदि आदि उनका विरह क्रन्दन का स्मरण कर नाम करते रहें।

ख– श्रीराम, जटायु को गोद में लेकर विलाप कर रहे हैं एवं अश्रुओं से जटायु को सराबोर कर रहे हैं। कहीं राम केवट से गंगा पार करने हेतु निहोरा कर रहे हैं– ''भैय्या, जल्दी हमें गंगा पार करा दो।'' कहीं राम–लक्ष्मण, भीलनी के बेर जो चख–चख कर खिला रही हैं, उसे बड़े प्रेम से खा रहे हैं। कहीं पर रामजी विभीषण को अपनी छाती से लगाकर लंकेश की पदवी दे रहे हैं। श्रीराम की कितनी ही लीलाएँ हैं, नाम जपते हुए स्मरण करते रहना चाहिए।

ग– कपिल भगवान् अपनी माँ देवहूति को संसार से मुक्त होने का उपदेश देते हुए कह रहे हैं, "माँ! संसार तो दुःखालय है। अतः इसकी आसक्ति समाप्त कर के भगवान् की लीलाएं और नाम जपते हुए उनका स्मरण करना चाहिए।"

घ– नृसिंह भगवान् प्रह्लाद को गोदी में बिठाकर आँसुओं से सराबोर कर रहे हैं और कह रहे हैं कि, "प्रह्लाद मुझे तुम्हारे पास आने में देर हो गई। तुमने बहुत सारे कष्ट भोगे, मैं शर्मिन्दा हूँ। अब मेरे प्यारे प्रह्लाद! तुम पर कोई कष्ट नहीं आयेगा, तुम्हारा कोई बाल भी बांका नहीं कर सकेगा, तुम बे–चिंता रहो।"

ड– वामन भगवान् नट का सा भेष धर कर नाटे कद से सुन्दर बच्चे का रूप लेकर बलि के वाजपेय यज्ञ में भिक्षा माँगने चले गए ताकि देवताओं का राक्षसों से बचाव हो सके। दो पग में सारी पृथ्वी को नापकर उसे रसातल में राज्य दे दिया।

च– भगवान् ने कच्छप अवतार लेकर समुद्र मन्थन किया और देवताओं को अमृत पिलाकर आकर्षक मोहिनी रूप से राक्षसों को मोहित कर दिया।

छ– नारद, सनकादिक, नवयोगेश्वर, भरत का नामजप, हनुमान जी का दास्यत्व, कौरवों–पांडवों का मनमुटाव, विदुर जी के घर जाकर केले के छिलके खाना, अचानक काम्यवन में दुर्वासा जी के भोजन मांगने पर पांडवों को शाप से बचाना आदि कितनी ही भगवद् अवतारों की लीलाएँ हैं कि इतना ध्यान कोई कर ही नहीं सकता। चाहो तो 5 लाख हरिनाम स्मरण करो परन्तु लीला समाप्त नहीं होगी।

यह गारंटी है और शास्त्रों की प्रत्यक्ष घोषणा है कि, जो मानव नामनिष्ठ बनकर अधिक से अधिक हरिनाम कर सकेगा, उसको भगवान् अपने पार्षदों को न भेजकर स्वयं (उसकी अन्तिम सांस जब तन से निकलेगी तब) उसे लेने आयेंगे। इसमें 1% भी सन्देह नहीं समझना, क्योंकि इस मानव ने कलियुग का धर्म, जो हरिनाम ही है और इस युग का परम धर्म–कर्म है, उसे अपनाया है। नामनिष्ठ के सिर पर भगवान् का हाथ है तथा उससे जो सम्बन्ध रखते हैं, उनको भी भगवान् सुखी करते रहते हैं। **यदि कोई कहे कि इतना हरिनाम लेने पर भी दुःख क्यों आ रहा है तो यह दुःख नहीं, भगवान् अपने जन को दुःखभोग कराकर अपने धाम में ले जाना चाहते हैं। यह मनगढ़न्त नहीं, वास्तव में 100% सत्य सिद्धान्त है।** इसका प्रत्यक्ष उदाहरण, मीरा, पांडव, व्रज पर राक्षसों का आक्रमण, स्वयं राम जी के पिता पर घोर आपत्ति, इन्द्र पर बार–बार राक्षसों का आक्रमण, कितने ही उदाहरण हैं। भक्तों पर सदैव दुःख आते रहते हैं, परन्तु भक्त उसको दुःख न महसूस कर उसे भगवद्कृपा ही समझता है। कुन्ती ने दुःख क्यों माँगा? इससे स्पष्ट हो जाता है कि दुःख भगवान् को अधिक याद करवाता रहता है। सुख में मानव भगवान् को भूला रहता है।

अधिक से अधिक हरिनाम करना ही संसार निवृत्ति का एक मात्र साधन है। इसके अभाव में भगवद् पूजा, अर्चन, यज्ञ, स्वाध्याय, योग, तपस्या, तीर्थाटन, गृहस्थ धर्म, चारों वर्ण तथा आश्रम सभी केवल श्रम मात्र है। इनसे सुकृति मात्र हो जाती है। अर्थात् उसका मन धीरे–धीरे शुद्ध होता रहता है। कई जन्मों के बाद में यह हरिनाम में रुचि प्रदान करेगा। इसी से मन शुद्ध होकर नाम से प्रेम प्रकट हो जायेगा। प्रेम ही भगवान् को आकर्षित करता है। यह हरिनाम के अभाव में उदय होगा ही नहीं। यह नाम ही भक्त अपराध और मान–प्रतिष्ठा से बचाता रहेगा। यह दोनों ही भक्ति पथ में बहुत बड़े रोड़े हैं। इन दुश्मनों से हरिनाम ही बचाता है, वरना बचना असम्भव ही है।

हरिनाम स्मरण करते–करते इतना परमानन्द उदय होता है कि कहना अकथनीय है। जो इसे अपनाएगा वही महसूस करेगा। बताया नहीं जा सकता। प्रत्यक्ष में प्रमाण नहीं चाहिए, आजमाकर देख सकते हो। अनुभव न हो तो शास्त्र कृपा की याचना करें। शास्त्र मानव की वाणी नहीं है, भगवद्वाणी है, जो लेखनी के रूप में मानव मात्र की आँखें खोल रही है। यदि नहीं खुलती तो समझना होगा अभी नरक भोगना होगा, दुःखसागर में डूबना होगा।

# 8

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः।।

चूरू (राजस्थान)

दि. 29/07/2005

परमाराध्यतम परमश्रद्धेय, मेरे शिक्षागुरुदेव श्रीभक्ति सर्वस्व निष्किंचन महाराज के चरण युगल में अधमाधम दासानुदास का असंख्य बार दण्डवत् प्रणाम तथा चातुर्मास अनुष्ठान निर्विघ्न सम्पूर्ण होने के लिए करबद्ध प्रार्थना।

## भगवान् हरिनाम जापक को भक्त के हृदयरूपी झरोखे से देखते हैं

ठाकुर राधामाधव जी की प्रेरणा से प्रेरित होकर आपके करकमल में स्वर्ण अक्षरों में लेख लिखकर सेवा भाव से प्रस्तुत कर रहा हूँ। आप मेरे शिक्षा गुरुदेव हैं। ठाकुरजी ने लेखन द्वारा आपकी सेवा मुझे सौंप रखी है, अतः मैं स्वयं को बड़ा भाग्यशाली समझता हूँ, क्योंकि मैं इस लेखन के योग्य कदापि नहीं हूँ।

मैं अज्ञानी हूँ – विषयों में रत, प्रतिष्ठा का लोभी, अवगुणों की खान आदि–आदि। क्या ऐसा अयोग्य व्यक्ति, परमहंस को पत्र लिख सकता है? लेकिन इतनी अयोग्यता होते हुए भी आपकी चरणों की असीम कृपा होने से मेरे जैसा पंगु भी पहाड़ उलांघ गया।

ठाकुरजी बोलते हैं कि, "प्रत्येक प्रवचनकार मेरी लीलाएं सुनाया करता है। भक्तों के आश्चर्यजनक चरित्र सुनाया करता है। परन्तु मेरी प्राप्ति का साधन कोई नहीं बताता कि हरिनाम कैसे किया जाय, जो कि सारे ब्रह्माण्डों की आनन्दमयी जड़ी (औषधि) है। ब्रह्माण्डों में ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो अवलम्बन (सहारा) से रहित हो। अवलम्बन सभी को चाहिए। मुझे भी अवलम्बन की जरूरत रहती है, वरना मेरा जी एक क्षण भी नहीं लगे। भक्त ही मेरा अवलम्बन है। यदि भक्त का अवतार न हो तो मैं निष्क्रिय हो जाऊँ, मैं अवतार ही क्यों लूँ? जगत में मेरा अवतार मात्र दो प्रकार से होता है। पहला अवतार भक्त के हृदय में प्रकट रहता है तथा दूसरा अवतार मन्दिर में श्रीविग्रह के रूप में होता है। ऐसा क्यों होता है? केवल अवलम्बन हेतु ! मन्दिर में विग्रह स्वरूप में अगर मैं न विराजूँ तो भक्त बेचारा बिना अवलम्बन क्या करेगा? भक्त न हो तो बिना अवलम्बन, मैं क्या करूँ? बेल को पेड़ का अवलम्बन चाहिए। पहाड़ को पृथ्वी का अवलम्बन चाहिए। शिष्य को गुरू का अवलम्बन चाहिए। स्त्री को पति का अवलम्बन चाहिए, अर्थात् अवलम्बन बिना संसार चलेगा ही नहीं!

मोह रहते मुझे कोई प्राप्त नहीं कर सकता। काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष आदि अपना काम बनाकर शान्त हो जाते हैं, परन्तु मोह इतना खतरनाक है कि इसको पकड़ना बिल्कुल असम्भव है। यह इतना झीना (सूक्ष्म) भाव है कि अनुभव में ही नहीं आता। यही आवागमन,

जन्म–मरण करवाता रहता है।" संसारी मोह होने से ठाकुर को हमारे हृदय में बैठने का स्थान नहीं मिलता। प्रथम – शरीर का मोह, दूसरा – इन्द्रियों का मोह, रसेन्द्रियाँ रस की तरफ, आँखें देखने की तरफ, कान सुनने की तरफ दौड़ते रहते हैं। तीसरा मोह – धन, जन, तथा स्थान का। चौथा मोह – कारण शरीर (स्वभाव) का, जैसे कि मैं दयालु हूँ, मैं पण्डित हूँ, मैं, मेरे दुश्मन का दुश्मन हूँ आदि। ये अहंकार (मोह) जीव में ऐसे रमा रहता है, जैसे फूल में सुगन्ध अथवा दूध में मक्खन।

मठ में भी मोह रहता है। केवल स्थूल रूप से ही मठ सेवा चलती रहती है। यदि मठ में मोह न हो तो जब भी मठ में संकट आता है तो ठाकुर जी के द्वारा सम्भालने का भाव प्रकट हो ही जाता है। इसका मतलब है, मठ में भी मोह है, सच्चा प्रेम नहीं। यह मैं नहीं कह रहा हूँ, राधा–माधव सबको सचेत कर रहे हैं। वह कह रहे हैं – ''मैं मठ का मालिक हूँ, परन्तु 'मठरक्षक' मुझको मन्दिर में आकर सम्भालता भी नहीं, और देखता भी नहीं कि मुझे यहाँ क्या–क्या असुविधा रहती है। भाव से मेरी सेवा नहीं होती, कभी–कभी तो मुझे नींद भी नहीं आती। गर्मी के मारे दुःखी रहता हूँ। सर्दी से कांपा करता हूँ। भूखा भी रह जाता हूँ। क्या वे मठ रक्षक आकर मेरी देख रेख करने वाले पुजारी की परीक्षा लेते हैं? उनको छिप–छिपकर देखना चाहिए। खैर फिर भी वे मेरे प्यार के भूखे हैं, अतः मैं परवाह नहीं करता।

अब ठाकुर श्रीराधा–माधव जी अपनी प्राप्ति करने का अति–सरलतम, श्रेष्ठ और, अमोघ उपाय बता रहे हैं–"केवल मात्र हरिनाम को उच्च स्वर से जपते हुए कान से सुने, किसी भी सिद्ध संत के चरणों में (प्रत्यक्ष अथवा मानसिक रूप से) बैठकर दीन हृदय से प्रार्थना करते रहें। क्योंकि मैं मेरे भक्त के हृदयरूपी झरोखे से नाम जापक को देखता रहता हूँ। मेरे भक्त को, जापक को नाम जपता देखकर दया आएगी ही, तो वह दया मुझे प्रेरित कर उस जापक पर प्रभाव कर देगी एवं वह मेरे लिए रो पड़ेगा। स्वतन्त्र रूप से मेरा दर्शन करते हुए जापक का हरिनाम जपना निम्न श्रेणी का होगा, क्योंकि मैं भक्त के हृदय को छोड़कर एक क्षण भी बाहर नहीं जाता। अतः जापक के ध्यान से भाग जाता हूँ, एवं जापक को विरह स्थिति आती नहीं। विरह स्थिति भक्त के माध्यम से ही आयेगी। क्योंकि मेरा किसी साधारण मानव (जापक) ने कभी दर्शन किया नहीं किन्तु वह जापक मेरे भक्त का दर्शन तो रोज करता ही है, इसलिए मेरी प्राप्ति उसके माध्यम से हो जायेगी। सन्त तो मेरे आराध्य देव हैं। मैं सन्त हृदय को छोड़कर जाने में असमर्थ रहता हूँ।"

यदि मोह का अन्त करना हो तो उक्त प्रकार से हरिनाम जपकर निश्चित ही कर सकते हैं। अन्दर का खतरनाक शत्रु मोह है तथा बाहर का शत्रु कान! यदि इन पर विजय प्राप्त कर ली जाये तो ठाकुर प्राप्ति शीघ्र ही, निश्चित रूप से हो जाती है। दोनों शत्रु उक्त तरह से हरिनाम जपने से मित्र बन जाते हैं तथा हमेशा के लिए जन्म–मरण से छुड़वाकर ठाकुर की चरण सेवा में पहुँचा देते हैं।

सच्चे भक्त भी बहुत हैं, जैसे वर्तमान के गुरुदेव, प्रभुपाद जी, सर्व श्रीरूप, सनातन, रघुनाथ गोस्वामी, लोकनाथ गोस्वामी, पुण्डरीक विद्यानिधि, माधवेन्द्रपुरी जी, ईश्वरपुरी जी, रायरामानन्द जी, नामाचार्य श्रीहरिदास जी, भक्तिविनोद जी आदि–आदि तथा भूतकाल के भक्त मीरा जी, कबीर जी, अम्बरीश जी, नारद जी, ध्रुव आदि। किसी भी भक्त के चरणों में (प्रत्यक्ष अथवा मानसिक रूप से) बैठकर उनकी चरणरज में स्नान करें, प्रसादी लें, चरण जल सिर पर चढ़ावें, आदि करते हुए हरिनाम जपते रहें तो निश्चित ही विरहाग्नि प्रज्वलित होगी ही। इसमें जरा भी सन्देह नहीं है, करके देखें एवं ठाकुर जी की असीम कृपा का गुणगान करते रहें।

**कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहिमाम।**
**राम राघव राम राघव राम राघव रक्षमाम।**
**राम राघव राम राघव राम राघव त्राहिमाम।।**

अपनी शक्ति से मन आसानी से हरिनाम में नहीं लगेगा। हरिनाम को मानसिक रूप से भक्तों के चरणों में बैठ कर उच्चारण पूर्वक जप कर सुनाते रहने से मन स्थिरता को प्राप्त कर लेता है। शीघ्र भगवत्कृपा वर्षण के लिए बीच–बीच में उपरोक्त प्रार्थना बोलना चाहिए।

**प्रति घरे–घरे गिया कर एइ भिक्षा।**
**बल कृष्ण, भज कृष्ण, कर कृष्ण भिक्षा।।**

प्रत्येक घर में जाकर यह भिक्षा मांगो कि 'कृष्ण बोलो, श्रीकृष्ण का भजन करो और कृष्ण संबंधी शिक्षा ग्रहण करो।'

**(महाप्रभु जी की श्रीनित्यानंद जी व श्रीहरिदास जी को आज्ञा)**

**बहु जन्म कृष्ण भजि' प्रेम नाहि हय। अपराध–पुँज ता'र आछये निश्चय।।**

यदि बहुत जन्मों तक श्रीकृष्ण का भजन करने पर भी प्रेम नहीं होता है, तब यह निश्चित है कि ऐसे व्यक्ति ने अनेकों अपराध किये हैं।

– श्रीनवद्वीप धाम माहात्म्य

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः ।।

# नित्य प्रार्थना

## (दो मिनट में भगवान् का दर्शन)

श्रीमद्भागवत पुराण में कथा आती है कि खट्वांग महाराज को दो घड़ी में भगवान् के दर्शन हो गये थे, परन्तु मेरे श्रील गुरुदेव परमाराध्यतम नित्यलीलाप्रविष्ट ऊँ विष्णुपाद 108 श्रीश्रीमद् भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज ने कहा है कि यदि कोई भी व्यक्ति हर रोज नीचे लिखी तीनों प्रार्थनाओं को करे, जिसमें दो मिनट का समय ही लगता है, तो उसे निश्चित रूप से इसी जन्म में भगवद्–प्राप्ति हो जायेगी। यह तीनों प्रार्थनाएँ सभी ग्रंथों, वेदों तथा पुराणों का सार हैं।

### पहली प्रार्थना

रात को सोते समय भगवान् से प्रार्थना करो –

"हे मेरे प्राणनाथ ! जब मेरी मौत आये और मेरे अन्तिम सांस के साथ, जब आप मेरे तन से बाहर निकलो तब कृपया मुझे आपका नाम उच्चारण करवा देना। भूल मत करना।"

### दूसरी प्रार्थना

प्रातःकाल उठते ही भगवान् से प्रार्थना करो –

"हे मेरे प्राणनाथ ! इस समय से लेकर रात को सोने तक, मैं जो कुछ भी कर्म करूँ, वह सब आपका समझ कर ही करूँ और यदि मैं भूल जाऊँ, तो कृपया मुझे याद करवा देना। भूल मत करना।"

### तीसरी प्रार्थना

प्रातःकाल स्नान इत्यादि करने तथा तिलक लगाने के बाद भगवान् से प्रार्थना करो –
"हे मेरे प्राणनाथ ! आप कृपा करके मेरी दृष्टि ऐसी कर दीजिये कि मैं प्रत्येक कण–कण तथा प्राणिमात्र में आपका ही दर्शन करूँ। और यदि मैं भूल जाऊँ तो कृपया मुझे याद करवा देना। भूल मत करना।"

**आवश्यक सूचना :**

- इन तीनों प्रार्थनाओं को तीन महीने लगातार करना बहुत जरूरी है। तीन महीने के बाद अपने आप अभ्यास हो जाने पर प्रार्थना करना स्वभाव बन जायेगा।

- तीनों प्रार्थनाओं के अन्त में 'भूल मत करना' यह वाक्य इसलिए कहा गया है, क्योंकि हम भूल सकते हैं, लेकिन भगवान् कभी नहीं भूलते। इस प्रकार 'भूल मत करना", इस सम्बोधन से हमने भगवान् को बाँध लिया। अब आगे वह भगवान् की जिम्मेदारी बन गयी और हम

निश्चिन्त हो गए। इसलिए भगवान् को इस प्रार्थना के अनुसार बाध्य होकर हमारे जीवन में बदलाव लाकर हमारा उद्धार करना ही पड़ेगा। और हमें इसी जन्म में भगवद्प्राप्ति हो जायेगी।

• नित्य प्रार्थनाओं के साथ हरे कृष्ण महामंत्र की नित्य कम से कम 64 माला (एक लाख हरिनाम) करना परमावश्यक है।

## नित्य प्रार्थनाओं का भगवद्गीता में उल्लिखित शास्त्रीय प्रमाण

### – पहली प्रार्थना –

**यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्**
**तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।।** –गीता 8.6

**अनुवाद** : हे कुन्तीपुत्र ! शरीर त्यागते समय मनुष्य जिस–जिस भाव का स्मरण करता है, मृत्यु के पश्चात् वह उस–उस भाव के अनुसार निश्चित रूप से पुनः शरीर प्राप्त करता है।

**तात्पर्य** : महाराज भरत ने मृत्यु के समय हिरन का चिन्तन किया, अतः अगले जन्म में उन्हें हिरण का शरीर प्राप्त हुआ। इसलिए अनिवार्य है कि मृत्यु के समय में दूसरे विषयों का स्मरण न हो, केवल भगवान् का ही स्मरण हो।

**अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्तवा कलेवरम्।**
**यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः।।** – गीता 8.5

**अनुवाद** : जीवन के अंतिम समय में जो केवल मेरा स्मरण करते हुए शरीर का त्याग करता है, वे तुरन्त ही मेरे भाव को प्राप्त होता है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

**तात्पर्य** : अतः मनुष्य को निरन्तर हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। इस महामंत्र का जप करना चाहिए ताकि मृत्यु के समय इसके उच्चारण मात्र से ही भगवद्प्राप्ति हो जाये।

• *पहली प्रार्थना बोलने से स्वतः ही भगवद्कृपा से इस उद्देश्य की पूर्ति हो जाएगी।*

### – दूसरी प्रार्थना –

**यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।**
**यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।।** – गीता 9.27

**अनुवाद** : हे कौन्तेय ! तुम जो कुछ कर्म करते हो, जो कुछ भोजन करते हो, जो कुछ अर्पित करते हो या दान देते हो तथा जो भी तपस्या करते हो, उन सबको मुझे समर्पित करते हुए करो।

**शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः।**
**संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि।।** – गीता 9.28

**अनुवाद** : इस प्रकार तुम शुभ तथा अशुभ फलरूप कर्मबन्धन से मुक्त हो सकोगे तथा इस कर्मफलत्यागरूप योग में अपने चित्त को स्थिर करके तुम मुक्त होकर मेरे पास आओगे।

• *दूसरी प्रार्थना बोलने से स्वतः ही भगवद्भावना से युक्त कर्म हो जायेगा।*

**— तीसरी प्रार्थना —**

**सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।**
**ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः।।** — गीता 6.29

**अनुवाद** : वास्तविक योगी समस्त जीवों में मुझको तथा मुझमें सबको देखता है। निःसन्देह स्वरूपसिद्ध व्यक्ति मुझ परमेश्वर को ही सर्वत्र देखता है।

**यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।**
**तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।।** — गीता 6.30

**अनुवाद** : जो मुझे सर्वत्र देखता है और सब कुछ मुझमें देखता है, उसके लिए न तो मैं कभी अदृश्य होता हूँ और न वह मेरे लिए अदृश्य होता है।

• *तीसरी प्रार्थना बोलने से स्वतः ही शुद्ध भक्ति, शुद्ध नाम तथा भगवद्दर्शन प्राप्त होंगे।*

# उपदेशावली

**नित्यलीला प्रविष्ट ऊँ विष्णुपाद श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर "श्रीलप्रभुपाद" द्वारा**

1— 'परं विजयते श्रीकृष्ण—संकीर्तनम्"——यही श्रीगौड़ीय मठ के एकमात्र उपास्य हैं।

2— जो हरि—भजन नहीं करते, वे सभी निर्बोध और आत्मघाती हैं।

3— श्रीहरिनाम—ग्रहण और भगवत् साक्षात्कार दोनों एक ही बात हैं।

4— श्रीकृष्ण—नामोच्चारण को ही भक्ति समझना चाहिए।

5— जो प्रतिदिन एक लक्ष हरिनाम नहीं ग्रहण करते, उनकी दी हुई कोई वस्तु भगवान् ग्रहण नहीं करते।

6— अपराधों से दूर रहकर श्रीहरिनाम ग्रहण की इच्छा कर निरन्तर हरिनाम करते रहने से अपराध दूर होंगे और शुद्ध हरिनाम उदित होंगे।

7— श्रीनाम करते समय जड़—चिन्ताएँ उदित होने पर श्रीनाम—ग्रहण में शिथिलता नहीं करनी चाहिए। श्रीनाम—ग्रहण के गौण फलस्वरूप वृथा जड़—चिन्ताएँ क्रमशः दूर हो जायेगी; इसके लिए घबड़ाने की आवश्यकता नहीं है। अत्यन्त आग्रह के साथ तन—मन—वचन से श्रीनाम की सेवा करने से ही श्रीनामी प्रभु अपने परम मंगलमय अप्राकृत स्वरूप का दर्शन कराते हैं। श्रीनाम ग्रहण करते—करते अनर्थ दूर होने पर श्रीनाम से ही रूप, गुण, लीला की अपने आप ही स्फूर्ति होती है।

**9**

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः।।

छींड की ढाणी
दि. 15/11/2005

# भक्ति बीज का रोपण

आपकी याद में यह तुच्छ मानव विरहाग्नि में जलता हुआ, शान्ति पाने हेतु पत्र लिखने को बाध्य होता रहता है। जब तक मन के उद्‌गार लेख द्वारा प्रकट न करूँ, तब तक शान्ति लाभ नहीं होती। न जाने कौन सी शक्ति मुझे प्रेरित कर जबरन लिखने को बाध्य करती है।

हरिनाम को कान से सुनना बहुत ही जरूरी है, यदि ऐसा नहीं हुआ तो स्मरण व्यर्थ होगा। वैसे बिल्कुल व्यर्थ तो नहीं होगा। संसार का काम सुधरता रहेगा तथा सुकृति इकट्ठी होती रहेगी, परन्तु भगवद् चरणों में पहुँचने में बहुत देर होगी। अनन्त जन्म–मरण रूपी दुःख भोगना पड़ेगा। मन जहाँ भी हरिनाम को ले जाता रहेगा, वहीं का कल्याण होता रहेगा। क्योंकि नाम चारु–चिन्तामणि है, वांछा कल्पतरु है। यह ध्रुव सत्य सिद्धान्त है। हरिनाम में किसान की खेती की कसौटी शत–प्रतिशत सही उतरती है।

भगवान् जीव पर कृपा करने हेतु गुरु रूप से आकर हरिनाम का बीज कान में सुनाते हैं एवं समझाते हैं, इसको कान द्वारा पोषण करते रहना अर्थात् कान से सुनते रहना आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं किया तो बीज अंकुरित नहीं होगा। लेकिन शिष्य इस बीज को कान में न डालकर इर्द–गिर्द फैंकता रहता है, अतः वह बीज हृदय रूपी जमीन में जाता नहीं, अतः भक्तिलता बीज अंकुरित होता ही नहीं। सारा जीवन व्यर्थ में चला जाता है। अंजुलि में भरे हुए अमृत को जमीन में डाल देता है फिर यह अमृत अनन्त जन्मों तक हाथ नहीं लगता। यह इसके महान अज्ञान के कारण ही तो है।

किसान बैलों द्वारा हल चलाता है। साधक साधु द्वारा अपना जीवनयापन करता रहता है। किसान हल के आगे कुश द्वारा गहरी लाईन (उमरा) बनाता रहता है। साधक हृदयरूपी खड़्डे को सद्‌गुण रूपी कुश द्वारा गहरा करता रहता है। किसान हल के पीछे एक पाइप (ओरणा) बांध देता है जो लाईन (उमरा) के पैंदे से जुड़ा (attach) रहता है। वहाँ उमरे में जाकर बीज स्थिर होता रहता है। साधक कान रूपी पाईप में मुख रूपी मुट्ठी से हरिनाम बीज सुनाता (डालता) रहता है। किसान जब बीज डालता रहता है, तब पाइप में खुन–खुन की आवाज भी सुनते रहता है। साधक भी हरिनाम की आवाज मन द्वारा सुनता रहता है, यदि किसान खुन–खुन आवाज नहीं सुनता तो वह उस पाइप को ध्यान पूर्वक देखता है, कि बीज जमीन में नहीं जा रहा है, कहीं रुकावट हो गई है। इसी प्रकार से साधक जब हरिनाम को मन से नहीं सुनता तो वह समझता है कि मन रूपी खुन–खुन बन्द हो गई है, अतः साधक सावधान होकर उच्चारण करता है।

हल के पीछे लगभग एक हाथ दूर किसान एक भारा (झाड़ी) बांध देता है, वह झाड़ी लाइन (उमरा) की दोनों किनारों की मिट्टी गड्ढे में डालती रहती है ताकि बीज के ऊपर सीलन रहे, वरना बीज सूखी मिट्टी के कारण अंकुरित नहीं होगा। फिर किसान छः दिन में जाकर देखता है, तो सभी उमरों में बीज अंकुरित हो चुका है। तब वह फूला नहीं समाता, नाचने लगता है। इसी प्रकार साधक का चार माला कान से सुनकर जब मनोरथ सफल हो जाता है, तो हरिनाम रूपी बीज प्रेम रूपी अंकुर में अंकुरित होने लगता है। प्रेमी (ठाकुर) से मिलने हेतु आकुल–व्याकुल हो पड़ता है। किसान का बीज जमीन की गर्मी से अंकुरित होता है। हरिनाम रूपी बीज साधक के हृदय रूपी जमीन की विरहाग्नि से गर्म होकर भक्तिलता में परिणत होने लगता है।

जो बीज किसान के पाइप के मुख से बाहर गिरता रहता है, वह बीज सूखने के कारण नष्ट हो जाता है तथा पक्षी उस बीज को चुग जाते हैं, और वो व्यर्थ चला जाता है। इसी प्रकार साधक को अगर पाइप रूपी कान में हरिनाम बीज नहीं सुनाई देता तो वह बीज आवागमन नहीं छुड़ा सकता। लेकिन उस बीज से सुकृति इकट्ठी होती रहेगी। जब अधिक सुकृति बन जायेगी तब भगवान् उस पर कृपा करने के लिए गुरु रूप से फिर बीज का रोपण कर जाएँगे। इसी प्रकार यह मार्ग चलता रहता है।

20 दिन के बाद किसान अंकुरित बीज में पानी देता है। जब वह बीज (उमरा) लाईन के बाहर आ जाता है, तो 120 दिन में फल–फूल से फसल लद जाती है, फिर वह अपने घर पर फसल लाद कर ले आता है। अब परिवार के सारे लोग उसका उपभोग करते हैं। इसी प्रकार साधक में सद्गुण रूपी फल–फूल आकर इकट्ठे होते हैं तथा विरहाग्नि रूपी तेज निखरने लगता है तो संसार रूपी परिवार उसका संग करके तृप्त होता रहता है। जब साधक का अन्तिम समय आता है तो वह आनन्द–सागर में तैरता हुआ अपने स्थायी घर भगवद्चरण में जा पहुँचता है। संसार का नाता सदा के लिए छूट जाता है तथा अपनी 21 पीढ़ियों को भी साथ में ले जाता है।

- **धर्म परायण सोई कुल त्राता। राम चरण जाकर मन राता।।**
- **सो कुल धन्य उमा सुन, जगत पूज्य सुपुनीत।**
  **श्री रघुवीर परायण, जेहि नर उपज पुनीत।।**

साधक तीन प्रकार से जप करता है। प्रथम उच्चारण से, जिसे पास में बैठा सुन लेता है। दूसरा उपांशु, जिसे स्वयं ही सुनता है। तीसरा मानसिक, जिसे हृदय का सूक्ष्म मन सुनता है। सूक्ष्म आँख, कान आदि ज्ञान इन्द्रियाँ इस जप को अनुभव करती हैं। उक्त गति अपनी कोशिश से नहीं होती, साधन करते–करते स्वतः ही आती है। नामाचार्य हरिदास जी उक्त प्रकार से ही 3 लाख नाम किया करते थे।

अगर मनुष्य जन्म सफल करना हो तो अब भी समय है, चेत जाना श्रेयस्कर होगा। यह ठाकुर की चेतावनी है, मेरी नहीं। अमूल्य रत्न हरिनाम को बेपरवाह से जपना जघन्य अपराध है। इससे बचना चाहिए।

# 10

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः ।।

छींड की ढाणी
दि. 01/10/2007

परमाराध्य भक्त प्रवर,

अधमाधम दासानुदास अनिरुद्ध दास का सभी भक्तों के युगल चरणों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम तथा भजन स्तर बढ़ने की प्रार्थना के साथ प्रेम से हरिस्मरण।

# कलि चाण्डाल के प्रकोप से बचने का एकमात्र उपाय–हरिनाम स्मरण

इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है, श्रीचैतन्य महाप्रभु गौरहरि। जिन्होंने अपने सभी जनों से एक लाख हरिनाम नित्य स्मरण करवाने हेतु घर–घर जाकर भगवद्प्रसाद पाने का एक बहाना किया था, वास्तव में तो उनसे एक लाख हरिनाम स्मरण करवाना था। ताकि इस कलि चाण्डाल से बचा जा सके।

एक लाख हरिनाम करने हेतु भक्त घबराएँ नहीं। 6 माह प्रतिदिन एक लाख हरिनाम करने से 3.5 घंटे ही लगेंगे। आरम्भ में एक लाख हरिनाम करने में 6–8 घंटे लग सकते हैं। बाद में 2–2.5 मिनट में भी एक माला हो जाती है। एक लाख हरिनाम करने पर दसों दिशाओं की बाधाएँ समाप्त हो जाएँगी। गौरहरि की गारण्टी अनुसार रक्षा होती रहेगी। प्रत्यक्ष में प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। कोई भी आजमाकर देख सकता है कि क्या गुल खिलते हैं। परिवार पर, पड़ोसियों पर, मिलने वालों पर आपका प्रभाव पड़ता रहेगा। चारों ओर रामराज्य हो जायेगा। श्रीगौरहरि के आदेश का भी पालन हो जायेगा।

मेरे ठाकुरजी की गारण्टी है कि जो भक्त 4 माला कान से सुनकर कर लेगा, उसे पुलक, अश्रु, सात्विक विकार उदय होने लगेंगे। परन्तु भक्त अपराध तथा मान–प्रतिष्ठा से दूर रहेगा तब ही ऐसी स्थिति आ सकेगी। जिस भक्त का मूल उद्देश्य भगवद् प्राप्ति का ही होगा, उसे शीघ्र ही उक्त स्थिति प्राप्त हो सकेगी। उक्त दो अड़चनें (भक्त अपराध तथा मान–प्रतिष्ठा) नास्तिकता का भाव उदय करा देती है। अश्रद्धा हो पड़ेगी।

नित्य एक लाख हरिनाम के जप से व्यर्थ में जो समय जा रहा था वह सदुपयोग में गुजरेगा। दो–तीन साल से बहुत भक्त एक लाख से सवा लाख हरिनाम कर रहे हैं । इसका मुख्य कारण है, श्रीगुरुदेव का स्वप्नादेश! – 'स्वयं 3–4 लाख करो और अन्यों को एक लाख करने के लिए प्रार्थना करो।' यह मेरी शक्ति से नहीं कर रहे हैं। मैं तो एक माईक का काम कर रहा हूँ, पीछे से श्रीगुरुदेव का आदेश काम कर रहा है। मुझे भी ठाकुरजी की

तरफ से कृपा रूपी कमीशन मिलता रहता है, इसी कारण से मैं इतना नाम करने में सक्षम हो जाता हूँ। अपनी शक्ति से कोई भी इतना हरिनाम करने में समर्थ नहीं है।

कलियुग का धर्म है हरिनाम करना, वह तो होता नहीं, तो द्वापरयुग का धर्म–विग्रह की अर्चना पूजा करना तो कैसे फलीभूत होगा? पहली कक्षा में तो भर्ती हुआ नहीं और बी.ए. में भर्ती हो गया तो क्या वह बी.ए. में पढ़ सकेगा? उसके लिए तो 'काला अक्षर भैंस बराबर' होगा। जब पुजारी एक लाख नाम करेगा तब ही भगवान् पूजा ग्रहण करेंगे वरना पत्थर का बन जाऐंगे एवं दर्शकगणों को भी पत्थर ही दिखाई देगें। हरिनाम ही भावनेत्र प्रदान करेगा। दुर्गुणों को नष्ट कर सद्गुण आकर अन्तःकरण में रम जायेंगे। हरिनाम में रुचि ही नहीं होती इसका खास कारण है, नामनिष्ठ संत के संग का अभाव, नामापराध व मान–प्रतिष्ठा की भूख।

जब तक श्रीगौरहरि के आदेश का पालन नहीं होगा तब तक कलि चाण्डाल से बच नहीं सकते। घर में कलह रहना, रोगों का आक्रमण, केस लग जाना, घर की रिद्धि–सिद्धि समाप्त होना, पड़ोसियों से झगड़ा रहना, रोजगार का न होना, चरित्र बिगड़ जाना, स्त्रियों का दूषित हो जाना, पुत्र–पुत्री स्वतः ही अपनी शादी करना, माँ–बाप की राय को जरूरी न समझना आदि–आदि मर्यादाओं का उल्लंघन होता रहेगा। जो एक लाख हरिनाम कर सकेगा उसको गौरहरि एक क्षण भी छोड़कर नहीं जायेंगे। जिस घर में गौरहरि वास करेंगे उस घर मे कलि का प्रवेश ही नहीं होगा, तब उक्त परेशानियां आएंगी ही नहीं। ऐसा अब देख भी रहे हैं। अतः मेरी हाथ जोड़कर सभी से प्रार्थना है कि अभी से एक लाख हरिनाम करने लग जायें, इसमें मेरा भी भला व जापक का भी भला। इसी जन्म में मनुष्य जन्म सफल हो जाये और दुःख सागर से पार हो जाये, तो कितनी बड़ी उपलब्धि हो जाती है, अवर्णनीय है!

**हरिनाम की अकथीनय महिमा –**

- कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई।।
- बिबसहुं जासु नाम नर कहहीं। जनम अनेक रचित अघ दहहीं।।
- जासु नाम जप एक ही बारा। उतरहिं नर भव सिंधु अपारा।।
- जासु नाम जप सुनहु भवानी। भवबंधन काटहि नर ज्ञानी।।
- भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।
- नाम प्रभाव जान शिव नीको। कालकूट फल दीन्ह अमीको।।
- नाम प्रसाद शम्भू अविनाशी। साज अमंगल मंगल राशी।।
- नाम सप्रेम जपत अनयासा। भक्त होय मुद मंगल वासा।।
- कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई। जब तव सुमिरन भजन न होई।।
- जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं। सकल अमंगल मूल नसाहीं।।
- उल्टा नाम जपा जग जाना। बाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।।
- जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ। नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ।।
- राम नाम का अमित प्रभावा। सन्त पुराण उपनिषद गावा।।
- नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी। बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी।।

11

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः।।

छींड की ढाणी
दि. 19 / 01 / 2007

# कर्म ही प्रधान है

जीवात्मा जब से भगवान् से बिछुड़ा है, तब से ही अशान्ति में भटक रहा है। इसका मुख्य कारण है–उसके कर्म! कर्म अच्छे और बुरे दो तरह के होते हैं। अच्छे कर्म से शान्ति और बुरे कर्म से अशान्ति होती है। भगवान् ने सभी प्राणियों को पैदा किया है, तो सभी प्राणी भगवान् के पुत्र समान हैं। जब कोई प्राणी किसी प्राणी का अहित करता है, तो भगवान् माया द्वारा उसको सजा दिलाते रहते है। जो प्राणी किसी प्राणी का हित करता है, तो उसे माया से सहायता मिलती है तथा भगवान् उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष देकर उसे सुख प्रदान करते हैं।

जो जीव दूसरे जीवों को भगवान् के घर में पहुँचाने का हित करता है, अर्थात् शास्त्र द्वारा वर्णित बातों को सुनाकर मानव को भगवान् की भक्ति में लगाता है, उस पर भगवान् की अपार कृपा बरसती है। शिव जी अपनी अर्धांगिनी उमा को बता रहे हैं–

**परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।**

मानव से कर्म होते रहते हैं, बिना कर्म किए जीवन यापन हो ही नहीं सकता। कर्म – मन, वचन और तन से होते हैं। तीन प्रकार के कर्म हैं– I. संचित, 2. प्रारब्ध, 3. क्रियमाण। मानव के अलावा किसी प्राणी से कर्म नहीं बनते, केवल मात्र मानव ही कर्म से बँधता है। कितनी ही बार वह 84 लाख योनियाँ भुगत कर आया है। जिसमें कितनी ही बार मानव शरीर मिला है। उसमें, उसने तीनों तरह के कर्म किए हैं। ये सभी कर्म संचित होकर उसे एक अंश में प्रारब्ध के रूप में मिलते रहते है और जीव उन्हें भोगते हुए जीवन यापन करता रहता है। जब प्रारब्ध कर्म समाप्त हो जाता है तब मृत्यु होने के बाद स्वभावानुसार जैसी मन की भावना होती है, उसके अनुसार वह दूसरे शरीर में चला जाता है। फिर जब मानव शरीर मिलता है, तो वह क्रियमाण–कर्म करता है जो उसके संचित कर्म में जुड़ते रहते हैं। फिर इन संचित कर्मों में से, एक अंश उसे प्रारब्ध के रूप में मिलता है। इसी तरह से यह चौरासी लाख योनियों का चक्कर चलता ही रहता है।

जब कभी सुकृति उदय हो जाती है तो मानव को भगवान् की कृपा से साधु संग मिलता है। तब मानव सद्गुरु की शरण ले लेता है। सद्गुरुदेव, भगवान् के हाथों में उस जीव को सौंप देते हैं। भगवान् के हाथों में जाने से उसके जन्म–जन्म के संचित कर्म जलकर राख हो जाते हैं। भगवान् का वचन है–

**सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं।।**

अब प्रारब्ध कर्म से उसका जीवन चलता रहता है। यदि क्रियमाण कर्म को सम्भाल लिया जाये तो उसका जन्म–मरण का दारुण दुःख सदैव के लिए समाप्त हो जाये। अर्थात् प्रेमाभक्ति–हरिनाम के द्वारा अन्तःकरण से शरणापन्न हो जाये तो वह मानव अपने खास घर पर अर्थात् भगवान् की गोद में चला जाये। तो सारा का सारा बखेड़ा ही समाप्त हो जाये। कहने का आशय यह है कि अपना स्वभाव सुधारकर भगवान् की गोद में चले जाना ही श्रेयस्कर है, जब तक स्वभाव बिगड़ता रहेगा, तब तक माया द्वारा दण्डित होते रहोगे। कलिकाल में हरिनाम ही एक ऐसी औषधि है जो सारा का सारा रोग मिटा सकती है। हरिनाम स्वयं शब्द ब्रह्म है! हरिनाम जपने वाला भगवान् के चरणों में ही रहता है, अर्थात् सम्मुख ही रहता है। हरिनाम जपने से संचित कर्मों का नाश हो जाता है। जब भक्ति करने से संचित कर्म ही राख हो जायेंगे तो प्रारब्ध कहाँ बचेंगे? केवल मात्र क्रियमाण कर्म से ही जीवन चलता रहेगा। क्रियमाण कर्म केवल भक्ति सम्बन्धित रहेंगे तो अन्त समय जब मौत आयेगी और स्वभाव भक्तिमय होगा तो मन (अन्तःकरण) भगवान् में लगने से आवागमन का अन्त हो जायेगा।

परिवार में एक व्यक्ति भगवान् का प्यारा बन गया तो भगवान् उसकी 21 पीढ़ियों को अपने धाम में बुला लेंगे। अगर एक नाव में पापी बैठ जाये तो सभी को डुबा देगा और एक भक्त नाव में बैठने से सभी को किनारे लगा देगा। कितना सुन्दर, सरल मौका कलियुग में मानव को मिला है। फिर भी अभागा इस स्वर्ण अवसर को खाने–पीने, मैथुनादि में व्यतीत कर देता है। इसकी मूर्खता की भी हद हो गई। उसे मालूम नहीं है कि एक दिन यहाँ से कूच करना ही पड़ेगा। क्यों सो रहा है बेवकूफ? अपना नुकसान करके भी दूसरों का हित करना चाहिए क्योंकि सभी भगवान् के पुत्र हैं। अहित करने से भगवान् नाराज ही होंगे। सबसे बड़ा महान हित है, किसी को भगवान् की भक्ति में लगा देना। इससे बड़ा हित त्रिलोकी में तथा अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों में अन्य कोई नहीं है। यही सोचकर मैं पत्र पर पत्र देकर भगवान् की कृपा लेता रहता हूँ। मेरी शक्ति से कुछ भी नहीं हो सकता। भगवद् कृपा से ही एक लाख हरिनाम जप, ब्रह्म मुहूर्त मे, विरहसागर में, डूबकर होता रहता है। मैं जितना ही अपना भजन का प्रचार करता रहता हूँ उतना मेरा भगवान् की तरफ आकर्षण बढ़ता है। मेरी देखा–देखी में अगर एक भी मानव भक्ति में लग गया तो मेरा निश्चित ही बेड़ा पार हो गया। दिन में विरह बहुत कम होता है। भगवान् और आप भक्तों की कृपा से दिन में भी विरह होने लग जायेगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है! क्या बच्चे का रोना माँ बरदाश्त कर सकती है? कभी नहीं! भगवान् तो वात्सल्य भाव की असीम मूर्ति है, वह भक्त का रोना कैसे सहन कर सकते हैं? मैंने अपने जीवन में भगवद् कृपा का अनुभव न जाने कितनी बार किया है, इसका कोई अन्दाजा नहीं है! संकट आते ही भगवान् को संकट दूर करना पड़ा। भजन बताने से अन्यों को अधिक श्रद्धा बनती है। मुझे कहने में थोड़ा भी नुकसान नहीं दिखाई देता, अतः कह देता हूँ। जो भी लेख लिखा जाता है किसी अदृश्य शक्ति द्वारा ही लिखा जाता है। मैं झूठ कहूँगा तो अपराध का भागी बन जाऊँगा क्योंकि मैं मेरे अन्तःकरण को जानता हूँ कि कितना गन्दा है! केवल मात्र सन्तों का ही सहारा है।

12

**।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः ।।**

चण्डीगढ़

दि. 05/06/2007

चि. रघुबीर, अम्बरीश, हरि ओम तथा बच्चे। हरिनाम में रति हो।

# हरिनाम से किसी भी चीज की कमी नहीं रहती

जिस मानव को हरिनाम स्मरण का चस्का अर्थात् नशा लग गया वह अनन्तकोटि अखिल ब्रह्माण्डों की सम्पत्ति का स्वामी बन गया। क्यों बन गया? इसका कारण है, भगवान् को उसने खरीद लिया। जिस प्रकार मीरा कह रही है...

**लियो जी मैं तो लियो गोविंदो मोल,**
**कोई कहे चौडे, कोई कहे छानै लियोजी बजन्ता ढोल,**
**कोई कहे सूंगो कोई कहे महंगो लियोजी तराजू तोल।**

इसी प्रकार से जो प्रायः हरिनाम पर ही अपना जीवन चलाता है, गोविन्द उसका बन जाता है। उसको छोड़कर भगवान् कहीं नहीं जाते। सम्पूर्ण सृष्टियों को रचने वाले भगवान् ही हैं। भगवान् के बिना सृष्टि में कुछ भी नहीं है–

हरिनाम जापक को इसी जन्म में धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष की प्राप्ति हो गई। इसके संसार के सभी काम सुलभ हो गए। जो अनन्तकोटि जन्मों से भगवान् की गोद से बिछुड़कर भटक रहा था, अब उनकी गोद में जा बैठा। उसने तो अपनी 21 पीढ़ियों को अपने साथ ले जाकर उनका उद्धार कर दिया। जैसा कि भगवान् का वचन है।

**कृतजुग त्रेता द्वापर, पूजा मख अरु जोग।**
**जो गति होइ सो कलि, हरि नाम ते पावहिं लोग।।**

सत्युग में हजारों साल भगवान् का ध्यान करने से, त्रेतायुग में बहुत सा धन लगाकर यज्ञ करने से, द्वापरयुग में बड़ी श्रद्धा से पूजा करने से भगवान् दर्शन देते थे। वह कलियुग में कमरे में पंखा–हीटर लगाकर, शान्त चित्त से बैठकर, हरिनाम जप करने से हो सकता है। कहीं जंगल में जाने की, धूप–सर्दी, बरसात, भूख–प्यास सहन करने की आवश्यकता नहीं। लेकिन मानव कितना दुर्भागा है, इतनी सुविधा होने पर भी हरिनाम जप नहीं करता। इसका दण्ड भविष्य में भोगना पड़ेगा। चौरासी लाख योनियों में जन्म लेकर असीम दुःख भोगना पड़ेगा।

कलियुग में करोड़ों मनुष्यों में से कोई एक ही भगवान् को चाहता है। हर कोई धन, वैभव, नौकरी, पुत्रादि चाहता है, भगवान् को कोई नहीं चाहता। कलियुग में भगवान् के ग्राहक नहीं हैं। ग्राहकों के बिना भगवान् का मन लगता नहीं। भक्तों से ही भगवान् का संसार

बनता है, अतः भगवान् को भक्तों की बहुत आवश्यकता रहती है। यदि कोई थोड़ा–सा भी साधन– भजन कर लेता है तो भगवान् बहुत शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। जैसा कि भक्त प्रहलाद अपने सहपाठियों से कह रहे हैं कि भगवान् को पाना कठिन नहीं है। शिवजी उमा को कह रहे हैं–

**जासु नाम जप एकहि बारा। उतरहिं नर भव सिंधु अपारा।।**
**जासु नाम जप सुनहु भवानी। भव बंधन काटहि नर ज्ञानी।।**

निष्कर्ष यह निकलता है कि यदि कोई साधक कान से सुनकर एक माला भी कर लेता है तो भगवान् उसे अपना लेते हैं क्योंकि एक माला में 1728 बार हरिनाम का उच्चारण होता है। इतनी बार भगवान् को पुकारता है, लेकिन जप करते हुए मन साथ में होना आवश्यक है। अतः मन के इधर–उधर भटकने से, भगवान् नहीं आयेंगे क्योंकि वो अन्तर्यामी हैं। भगवान् तो हर जगह हरपल मौजूद रहते हैं। पुकारने की देर है, पुकारते ही तुरन्त प्रकट हो जाते हैं। जिस प्रकार 1–2 साल का एक शिशु माँ–माँ कहकर माँ को बुला लेता है, इसी प्रकार भक्त नाम उच्चारण कर भगवान् को बुला लेता है। कितना सुगम, सरल साधन है, तब भी मूर्ख मानव अचेत होकर सोता रहता है। समय बरबाद कर, जीवन नष्ट करता रहता है। उसे पता नहीं है कि काल सिर पर मुख फाड़े खड़ा है, अचानक निगल जायेगा। फिर रोते–रोते जाना पड़ेगा।

अन्तःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) से पुकारना, मन–कान को सटाकर (जोड़कर) ही होता है। मन नहीं होगा तो कान सुनेगा भी नहीं।

- **राम नाम सब कोई कहे, दशरथ कहे न कोय।**
  **एक बार दशरथ कहे, तो कोटि यज्ञ फल होय।।**
- **कर में तो माला फिरे, जीभ फिरे मुख माहि।**
  **मनवा तो चहुँ दिशि फिरे, यह तो सुमिरन नाहि।।**

कहते हैं मन नहीं रूकता। यह बेकार की बात है। परीक्षार्थी 3 घंटे तक परीक्षा देता है पर मन न रुकने पर वह फेल हो जाता है। फिर वहाँ मन 3 घंटे कैसे रूक जाता है? इसका आशय यह हुआ कि हरिनाम में लोभ नहीं है अतः नाम में मन नहीं लगता। हरिनाम के बराबर संसार में कोई लाभ है ही नहीं।

**लाभ कि कछु हरिनाम समाना। जेहि गावहि श्रुति वेद पुराना।।**
**हानि कि कछु जग में कछु भाई। जपिए न नाम नर तन पाई।।**

हरिनाम को महत्त्व देवे तो संसार का कोई काम अधूरा रहता ही नहीं क्योंकि वह हरिनाम (भगवान्) के शरणागत हो चुका। गीता के कथनानुसार शरणागति ही गीता का प्राण है। शरणागत को भगवान् एक क्षण भी नहीं छोड़ते।

**मम गुन गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नैन बह नीरा।।**
**करहुँ सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालक राखइ महतारी।।**

शरणागति तब ही प्रकट होगी जब मन सहित कान हरिनाम सुन पायेगा। बार–बार रटने से भगवान् के लिए छटपट होकर अश्रुधारा बहने लगेगी। अश्रुधारा का साक्षात् रूप शरणागति ही है। अश्रुधारा न आने पर शरणागति होगी ही नहीं।

रामवचन–

**जौं सभीत आवा सरणाईं। राखिहउँ ताहि प्रान की नाईं।।**

हिंसक प्राणी भी शरणागत को दुःखी नहीं करेंगे क्योंकि उनमें भी भगवान् विराजमान हैं। हिंसक प्राणी भी मित्र बन जायेंगे।

श्रीगौरहरि ने उच्च स्वर के कीर्तन का आविष्कार किया। यह कीर्तन भी कान+मन को सटाकर होता है, इस कीर्तन में मन बाहर नहीं जाता। लेकिन थकान जल्दी हो जाती है, जप में तो घंटों तक थकान नहीं होती। यदि मन से जप हो तो बुढ़ापा आने पर भी बहुत जप किया जा सकता है, जैसे अपने बुजुर्ग सन्त एक जगह बैठकर 5–5 लाख नाम जप करते थे। उच्च स्वर के कीर्तन, पठन से दूर ही रहते थे। अशक्तता के कारण एक जगह बैठकर नाम जप करते रहते थे।

मन को रोकने के लिए प्रसाद पाते वक्त नाम जप करते रहना चाहिए ताकि खून में सात्विकता आरोपित हो जाये। सात्विकता में मन रुक जाता है, तामस में चंचल रहता है। पानी भी नाम जप करते हुए पिया जाए तो वह चरणामृत बन जाता है। नाम का अभ्यास हर समय करते रहना चाहिए। आदत होने से स्वतः ही नाम अन्दर चलता रहता है।

निष्कर्ष यह निकलता है कि जो साधक हरिनाम को तत्परता, श्रद्धा व प्रेम से संख्यापूर्वक जपता है, उसको सांसारिक व पारलौकिक सम्पत्ति बड़ी सरलता से स्वतः ही उपलब्ध हो जाती है। सभी उसके मित्र बन जाते हैं।

**जापे कृपा राम की होई। तापे कृपा करे सब कोई।।**

नित्य 3 लाख जप बड़ा प्रभावशाली दृष्टिगोचर हो रहा है, जैसा कि मैं अनुभव कर रहा हूँ। मुझे मठ व बाहर के सभी भक्त कितना चाह रहे हैं। किसी चीज की कमी है ही नहीं। बड़ी श्रद्धा से सभी सेवा हो रही है जबकि मैं चाह भी नहीं रहा हूँ।

**न कलि कर्म न भक्ति विवेकु। रामनाम अवलम्बन एकू।।**

कलियुग में भगवन्नाम के अतिरिक्त अन्य कोई आश्रय नहीं है। – श्री रामचरितमानस

**आयुषः क्षण एकोऽपि न लभ्य स्वर्णकोटिभिः।**
**स चेन्निरर्थकं नीतः का च हानिस्ततोऽधिका।।**

कोटि स्वर्णमुद्राएँ देकर भी जीवन का बीता हुआ एक भी क्षण लौट नहीं सकता। इसलिए व्यर्थ गँवाये हुए समय से अधिक और कौन–सी हानि हो सकती है? – चाणक्य नीति

• उपरोक्त काः सार यह है कि यत्नूपर्वक सदा हरिनाम का ही आश्रय लेना चाहिए।

**13**

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः।।

चण्डीगढ़
दि. 11/09/2007

परमादरणीय भक्तगण,

अधमाधम दासानुदास अनिरुद्धदास का दण्डवत् प्रणाम तथा भजन–स्तर बढ़ाने की करबद्ध प्रार्थना।

# हरिनाम में रुचि क्यों नहीं होती?

**प्रथम** तो इसका मुख्य कारण है– संसार में आसक्ति। मन में दो प्रकार की ही आसक्ति हुआ करती है। एक आसक्ति रहती है संसारी एवं दूसरी आसक्ति होती है पारमार्थिक अर्थात् सन्तों व भगवान् से। जब एक आसक्ति विलीन हो जाती है तो दूसरी आसक्ति स्वतः ही सहज में ही अन्तःकरण में आकर भर जाती है।

**दूसरा** हरिनाम में रुचि न होने का कारण है शारीरिक रुग्णता। जब शरीर में कोई भी रोग होगा तो मन का झुकाव कष्ट की ओर होगा।

**तीसरा** हरिनाम में रुचि न होने का कारण है पूर्व जन्मों के संस्कार। साधुसंग के अभाव में अच्छे संस्कार जागृत नहीं होते हैं।

**चौथा** हरिनाम में रुचि न होने का कारण है कुसंग जैसे, टी. वी., अखबार तथा मोबाइल का संग। इनका संग करने से संसारी वासनाएँ जगती रहती हैं, जो श्रीहरिनाम का सेवन करते समय अन्तः–करण को दूषित करती रहती हैं।

**पाँचवाँ** कारण है– काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष का आक्रमण। इनसे हरिनाम स्मरण में बाधा पड़ती रहती है, और ये वेग सृजित सात्विक भावों को नष्ट करते रहते हैं।

**छठा** हरिनाम में रुचि न होने का कारण है परस्पर निन्दा करना, जिसमें साधु और भगवान् की निन्दा सुनना व कहना तो जघन्य अपराध में आता है। ऐसे लोगों से तो बात भी नहीं करनी चाहिए। भगवान् की निन्दा का आशय है, धर्मग्रन्थों को मायिक, प्राकृत समझकर निन्दा करते रहना।

**सातवाँ**– हरिनाम में रुचि न होने का कारण है, ज्ञान मार्ग में भटक जाना। ज्ञानी स्वयं को ही भगवान् कहता है। यह भक्तिमार्ग का जघन्य विरोधी है, इसमें सेवा भाव नगन्य रहता है।

ऐसे तो हरिनाम में रुचि न होने के और भी कारण हैं, परन्तु मुख्य कारण तो सात ही हैं। यदि इन उक्त सात कारणों से बचा जाये तो हरिनाम में रुचि निश्चित ही हो जायेगी। प्रत्यक्ष में प्रमाण नहीं चाहिए, कोई भी आजमाकर देख सकता है।

अब इनसे बचा कैसे जाये? इनसे बचने का एक ही उपाय है–

Chant Harinam sweetly & listen by ears

**सादर सुमिरन जे नर करहीं। भव बारिधि गोपद इव तरहीं।।**

जिसकी 4 माला इस प्रकार से कान से सुनकर हो जायेगी, उसकी उक्त लिखी हुई सातों अड़चनें सहज ही में दूर हो जायेंगी। नित्य एक लाख अर्थात् 64 माला का नियम जो ले लेगा, उसके घर पर श्रीचैतन्य महाप्रभु का वास अवश्य ही हो जायेगा। जैसा कि स्वयं महाप्रभु जी ने अपने जनों को बोला है, कि "एक लाख नाम नित्य करो। वहाँ से कलियुग का शीघ्र निष्कासन हो जायेगा वरना घर में कलह होता रहेगा।"

प्रत्यक्ष में हम देख रहे हैं कि हर घर में जहाँ हरिनाम का आविर्भाव नहीं है, वहाँ बाप–बेटे में, स्त्री–पुरुष में, भाई–भाई में आदि, जगह–जगह, समाज में, गाँव में, शहर में, देश–देश में, अर्थात् पूरे मृत्युलोक में कलि महाराज के कोप का शासन चल रहा है। सभी दुःखी हैं। खान–पान, रहन–सहन सब दूषित हो गया है। प्रेम का नामोनिशान मिट गया है। सब जगह स्वार्थ घुस गया है। पैसे के लिए गला काटा जा रहा है। कोई सुनने वाला नहीं है। पैसा देकर बदमाशों की जीत हो जाती है। गरीब का भगवान् के अलावा कोई साथी नहीं है। सभी दुःख सागर में डूबे जा रहे हैं। अतः सतर्क होकर उचित मार्ग पकड़ो। यही एक मार्ग आपको बचा सकता है। हरिनाम की 64 माला करने लगो तो यहाँ पर सत्युग का आगमन हो जायेगा। कलि कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेगा। हरिनाम ही जापक की रक्षा और पालन करता रहेगा। बाकी सभी चक्की में पिस जाएंगे, मात्र जापक बच जायेगा।

विचार करो, इस युग में कितना सहज, सरल मार्ग आपको जीवनयापन करने को मिला है। इस मार्ग में कहीं पर जाना भी नहीं है, घर बैठे–बैठे ही कमाई का साधन मिल रहा है। गर्मी सताये तो पंखा चला लो, सर्दी लग रही है तो हीटर चला लो, तूफान आ रहा हो तो खिड़की दरवाजे बन्द कर लो, किसी भी तरह की दुविधा नहीं है। कैसे भी चाहे बैठकर, जमीन पर, कुर्सी पर, पलंग पर, छत पर, चलकर, सोकर, हरिनाम को कान से सुनकर जपते रहो। किसी प्रकार की अड़चन है ही नहीं एवं इसी जन्म में भगवान् से मिल लो तथा आवागमन के दारुण दुःख से छुट्टी पा लो। यदि ऐसा शुभ–अवसर मिलने पर भी हरिनाम की शरणागति नहीं कर रहे हो तो आपके समान दुर्भागा संसार में कोई नहीं होगा।

करोड़ों में से किसी एक को ही ऐसा शुभ अवसर मिलता है। अगर यह मौका गवाँ दिया, फिर अन्त समय पछताना पड़ेगा। थोड़ा विचार तो करो कि क्या धनी को सुख है, गरीब को सुख है, पशु को सुख है, पक्षी को सुख है, किसको सुख है? सभी लोग आहार,

निद्रा, भय, मैथुन में ही जीवन गुजार रहे हैं। अंधे होकर जीवन बिता रहे हैं। अज्ञान की भी कोई हद होती है!

मनुष्य जन्म रूपी हीरा मिला था। उसे कूड़े में फेंक कर रो रहे हैं। ना समझी के कारण इस हीरे की कीमत नहीं समझ सके। जिस हीरे से भगवान् भी खरीदे जा सकते थे। भगवान् की सम्पत्ति के मालिक बन सकते थे, ऐसा सुनहरी अवसर हाथ से निकाल दिया। अब तो न जाने कितने करोड़ों साल तक दुःख भोग करना पड़ेगा। बाहरी अज्ञान ने खूब डुबोया। अब तो भविष्य में रोना ही रोना हाथ लगेगा। तब प्रश्न होगा कि भगवान् हृदय में कैसे प्रकट होते हैं?

**सुमरिए नाम रूप बिनु देखे। आवत हृदय सनेह विशेषे।।** – शिववचन

कान और मन को संलग्न कर हरिनाम करना चाहिए। नाम करते करते कुछ दिनों बाद भगवद् स्वरूप अन्तःकरण में अपने आप प्रकट हो जायेगा। श्रीगुरुदेव जी ने हरिनाम रूपी बीज कान रूपी पाईप में डाला, यह बीज अन्तःकरण रूपी जमीन में जा गिरा। अब जापक इसको बार–बार जप रूपी पानी देगा, तो जिसका जैसा पिछले जन्मों का संस्कार होगा उसी संस्कार के प्रेशर से (अधिक या कम दिनों में) हरिनाम रूपी बीज अंकुरित हो जायेगा। उस अंकुरित बीज से श्रीकृष्ण रूपी पौधा बाहर निकलेगा, जिसको साधक (जापक) देख कर आनन्दसिंधु में तैरने लगेगा। तैरने से उसे प्रेम रूपी रस का स्वाद आने लगेगा एवं मस्ती में रमण करता रहेगा। हरिनाम रूपी बीज में अनन्त वेद–शास्त्र, पुराण ओत–प्रोत रहते हैं परन्तु साधक जब जप स्मरण रुपी पानी देता रहेगा तो एक दिन ये शास्त्र उसके अन्तःकरण में प्रकट हो जायेंगे। जैसा गीता कहती है, बुद्धियोग का आविर्भाव होगा। ददामि बुद्धियोगं...

जिस प्रकार बड़ या पीपल का बीज, जो राई से भी छोटा होता है, वह जमीन में बोने से और पानी देने से अंकुरित होकर फिर कुछ समय के बाद एक विशाल वृक्ष का रूप बनकर सबको अपनी छाया व फल देकर उपकार करता रहता है। इस बीज में वृक्ष छिपा हुआ रहता है। इसी प्रकार हरिनाम बीज में श्रीकृष्ण का रूप, गुण, लीला तथा धाम समाहित रहते हैं। स्मरणपूर्वक अभ्यास करने पर प्रकट हो पड़ते हैं। अतः निष्कर्ष यह हुआ कि जापक नाम जपते हुए भगवान् का स्वरूप देखने का प्रयास न करे। स्वतः ही जपते–जपते स्वरूप सहित सभी लीला, गुण स्फुरित होने लगेंगे। बड़ के बीज में जैसे पेड़ दिखाई नहीं देता इसी प्रकार हरिनाम में श्रीकृष्ण दिखाई नहीं देते। हरिनाम जपने से समय पाकर निश्चित ही दिखाई देंगे।

**निताई चैतन्य बलि' जेइ जीव डाके। सुविमल कृष्णप्रेम अन्वेषये ता'के।।**

जो जीव ''हा निताई! हा चैतन्य!'' कहकर आर्त भाव से पुकारता है, सुविमल कृष्णप्रेम उसे ढूँढता–फिरता है। – श्रीनवद्वीप धाम माहात्म्य

**14**

**।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः।।**

चण्डीगढ़
दि. 12/09/2007

परमश्रद्धेय परमआदरणीय भक्तगण, अधमाधम, दासानुदास का साष्टांग दण्डवत् प्रणाम व उत्तरोत्तर भगवान् श्रीकृष्ण, भगवान् गौर–निताई तथा गुरुदेव के प्रति विरहाग्नि प्रज्वलित होने की करबद्ध प्रार्थना।

# हरिनाम में से भगवान् श्रीकृष्ण कैसे प्रकट हो जाते हैं?

संसार का उदाहरण देकर इसको भक्तगण बहुत अच्छी प्रकार से समझ सकते हैं। बड़ का बीज या पीपल वृक्ष का बीज राई से भी छोटा होता है। क्या इसमें वृक्ष दिखाई देता है? आप बोलोगे, "नहीं!" मैं कहूँगा "मुझे दिख रहा है।" आप बोलोगे, "बिल्कुल झूठ बोल रहे हो!" मैं खड्डा खोदकर बीज को खड्डे में गाड़ दूँगा और पानी से खड्डे को भर दूँगा। कुछ दिन बाद उसमें अंकुर प्रकट हो जायेगा तथा एक माह में पत्ते, टहनियाँ आ जायेंगी। एक साल में विशाल आकार लिए हुए पत्ते, फूल, फल से पेड़ लद जायेगा। फिर आपको लाकर दिखाऊँगा कि देखो मैं झूठ नहीं कह रहा था, अब देखो इस नन्हें से बीज में यह विशाल वृक्ष जो छिपा हुआ था, प्रकट हो गया, तब आपको पूर्ण विश्वास हो जायेगा कि वास्तव में बात सत्य ही है।

दूसरा उदाहरण है कि राम शब्द में राम का रूप दिखाई देता है! आप कहोगे, "नहीं।" मैं कहूँगा, "मुझे तो दिखाई देती है।" आप कहोगे, "बिल्कुल झूठ बोल रहे हो।" मैं कहूँगा, "अब मैं तुमको दिखाता हूँ, देखना इस शब्द में राम प्रकट होगा।" मैं राम को पुकारूँगा, "राम–राम", तो राम शीघ्र आकर खड़ा हो जायेंगे। राम कहाँ से प्रकट हुए? शब्द से! अब मैंने तो उसे बुला लिया परन्तु मैं मुख फेरकर बैठ गया, तो वह नाराज होकर चले जायेंगे। वह सोचेगा कि इन्होंने मुझे बुलाया और मेरी ओर नजर भी नहीं की।

इसी प्रकार कान और मन को संलग्न कर हरिनाम उच्चारण करना पड़ेगा, तो नाम में से कृष्ण प्रकट हो जायेंगे। कृष्ण तो प्रकट हो गये परन्तु आपका मन बाजार में चला गया तो कृष्ण मन में विचार करेंगे कि बड़ा बेवकूफ है, मुझे बुला तो लिया और आप चला बाजार में, तो मैं अब क्यों रहूँ? मैं भी यहाँ से चला जाता हूँ। इस प्रकार के नाम जप से केवल सुकृति इकट्ठी होगी जो सांसारिक लाभ करा देगी। परन्तु भगवद् प्रेम प्राप्त नहीं होगा क्योंकि इस नाम में आदर नहीं है। अवहेलना पूर्वक नाम लिया गया है।

श्रीगुरुदेव जी ने हरिनाम बीज कान रूपी पाइप में डाला, यह हरिनाम बीज अन्तःकरण रूपी जमीन में जा गिरा, अब साधक (माली) ने उसमें उच्चारण रूपी जल सींचा नहीं तो बीज नष्ट हो जायेगा। जब इस बीज को बारम्बार जप रूपी जल से सींचा जायेगा तो इसमें से अंकुर रूपी कृष्ण प्रकट हो जायेंगे। यह अंकुर तना, शाखा, परशाखा, पत्ते, फूल, फल रूपी रूप, गुण, लीला, धाम में स्फुरित हो जायेगा। अतः लिखा है–

**सुमरिए नाम रूप बिन देखे। आवत हृदय सनेह विशेषे।।** – शिव वचन

नाम, कान और मन को सटाकर (संलग्न कर) लेते रहो, एक दिन भगवद् रूप, गुण, लीला आदि स्वतः ही प्रकट हो जायेंगे। एक लाख नाम तो प्रत्येक गृहस्थी, ब्रह्मचारी, संन्यासी को जपना परमावश्यक है, तब ही कुछ उपलब्धि हो सकेगी वरना व्यर्थ का परिश्रम समझें। भगवद् सेवा भी नीरसमयी होगी।

**समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परस्पर प्रभू अनुगामी।।** – शिव वचन

प्रभु श्रीराम जी अपने राम नाम का ही अनुगमन करते हैं, अर्थात् नाम लेते ही नाम के पीछे दौड़े आते है। जब मायिक व्यक्ति ही नाम लेने पर प्रकट हो जाता है, तो भगवान् तो हर जगह हर समय मौजूद रहते हैं। शीघ्र ही नाम लेते ही प्रकट हो जाते हैं।

70 साल की आयु के उपरान्त भक्त को हरिनाम के ही आश्रित रहकर अपना जीवन व्यतीत करना अति महत्वपूर्ण (most essential) है। मठ में रहो या घर में रहो, एकान्त में वास कर 1 लाख से 3 लाख तक हरिनाम स्मरण ही, भगवद्चरणों में पहुँचा कर, पंचम पुरुषार्थ–प्रेमावस्था उदय करा देता है तथा अष्ट–सात्त्विक विकार शरीर पर दृष्टिगोचर होने लग जाते हैं। ऐसी स्थिति में भक्त क्षण–क्षण में विरहसागर में परमानन्द से तैरता रहता है। केवल भगवद् चिन्तन के अलावा उसे कुछ भी अनुभव में नहीं आता।

उक्त स्थिति का भक्त प्रवर अन्य भक्तों पर अपने दर्शन और वार्तालाप से अपना पूरा प्रभाव डाल देता है। उसके द्वारा संसारी प्राणी का निश्चित ही उद्धार हो जाता है। उसकी आकर्षण शक्ति दूर तक प्रभाव करती रहती है। सभी गुरुवर्ग जो वृद्धावस्था में पहुँच गए हैं, उन्हें एकान्त में कुटी बनाकर स्थिर मन से अष्टयाम हरिनाम की माला करते हम देख रहे हैं। श्रीप्रमोदपुरी महाराज, श्रीभक्ति विज्ञान भारती महाराज, श्रीभक्तिवल्लभ तीर्थ महाराज, श्रीगौरकिशोरदास बाबाजी महाराज, श्रीजगन्नाथदास बाबाजी महाराज आदि अपनी माला झोली में हाथ डालकर हरिनाम करते रहते हैं।

हे ब्रह्मचारी गणो ! ऐसी अवस्था तब ही उपलब्ध हो सकेगी जब किशोर या युवा अवस्था से हरिनाम की 64 माला स्मरण करने लगोगे। यदि ऐसी स्थिति अभी से नहीं होने लगेगी तो वृद्धावस्था में हरिनाम स्मरण होना निश्चित ही असम्भव होगा।

ब्रह्ममुहूर्त में अर्थात् ढाई–तीन बजे उठकर शौचक्रिया या हाथ मुँह धोकर अपनी जपमाला पर हरिनाम आरम्भ करना होगा। 8 बजे तक आरती, भावमय दर्शन, पाठ, कीर्तन

करना होगा। अब यदि रात को 9 बजे तक ठाकुरजी का शयन हो जाये तो 10 बजे तक सभी ब्रह्मचारी गण शयन कर सकते हैं एवं 5 घंटे सो कर ब्रह्ममुहूर्त में 3 बजे जगकर एक लाख हरिनाम अर्थात 64 माला सरलता से कर सकते हैं। मठ शान्तिमय हो सकता है। मठ की सेवा भी सरसमयी हो सकती है। हरिनाम के अभाव में सेवा भाव नीरस रहता है, जिसको बोलो कि यह सेवा आपको करनी है, तो उस पर वज्र सा गिर जाता है। बेमन की सेवा क्या सरसमयी हो सकती है?

कई मठों में 9 बजे ठाकुर जी का शयन हो जाता है तो ब्रह्मचारी गण को पूरी नींद का लाभ मिल जाता है। युवकों को 6 घंटे नींद लेना परमावश्यक है वरना भजन को सुस्ती दबा लेती है। 5 घंटे रात में सोना एवं दोपहर में 11 बजे ठाकुरजी को शयन कराने से सभी साधक 5 बजे तक माला करें, 2 घंटे सो भी सकते हैं। जयपुर में श्रीराधा–गोविन्द मन्दिर में ऐसा ही होता है।

मठ केवल मात्र भजन के हेतु स्थान बना है। पर भजन न होकर भोजन होता रहे तो कलि महाराज का आवागमन होता रहेगा। झगड़ा–फसाद होता रहेगा। सेवा भाव का अभाव होगा। जो सेवा होगी, वह अवहेलनापूर्वक होगी।

यदि ठाकुरजी का वर्तमान का नियम बदल दिया जाये तो मठ में सुख का विस्तार हो जाये। इसमें भोजन भण्डारी द्वारा सहायता करना भी अत्यन्त आवश्यक है। यदि समय पर अमणिया तैयार हो जाये तो ठाकुरजी का भोग जल्दी समय पर लग जाये, तो सभी को सहज ही में सुविधा हो जाये। वास्तव में सब का एक लाख हरिनाम सरलता से हो सकता है। अभ्यास से 64 माला (एक लाख नामजप) 3½ घंटे में ही हो जाता है।

8 घंटे–दफ्तर का, 2 घंटे–आने जाने में।

5 घंटे सोना–(रात्रि 10 से 3 बजे तक)।

2 घंटे–शौच–स्नान–प्रसाद, 5 घंटे–हरिनाम जप

2 घंटे extra फिर भी बचते हैं जो बच्चों को पढ़ा सकते हो।

उक्त प्रेरणा ठाकुरजी से मिली है, यदि इसे सब सत्य मानें तो शीघ्र आदेश का पालन होना श्रेयस्कर होगा।

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः। न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन।।
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

– श्रीमद्भगवद्गीता 6.16–17

हे अर्जुन! जो अधिक खाता है अथवा अत्यन्त कम खाता है, जो अधिक सोता है अथवा जो पर्याप्त नहीं सोता, वह योगी नहीं बन सकता। जो खाने, सोने, आमोद–प्रमोद तथा काम करने की आदतों में यथायुक्त रहता है, वह ही योगाभ्यास द्वारा समस्त सांसारिक क्लेशों को नष्ट कर सकता है।

**15**

**।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः ।।**

छींड की ढाणी
दि. 26/09/2007

समस्त भक्तगणों के युगल चरण कमल में अधमाधम, दासानुदास, अनिरुद्ध दास का साष्टांग दण्डवत् प्रणाम तथा एक लाख हरिनाम करने की करबद्ध प्रार्थना एवं भक्ति स्तर बढ़ने का आग्रह।

# महाप्रभु गौर हरि का एक लाख हरिनाम जपने का आदेश

महाप्रभु को प्रत्येक पार्षद अपने घर पर प्रसाद पाने का आग्रह किया करते थे, तो महाप्रभुजी ने उनसे बोला कि जो सज्जन नित्य एक लाख हरिनाम करता रहेगा उसके घर पर मैं प्रसाद पा सकता हूँ। वैसे उन्होंने कहा, "जो लखपति होगा उसके घर पर मैं प्रसाद पा सकता हूँ।" तो सभी भक्तजन बोले, "प्रभुजी! हम तो हजार पति भी नहीं हैं, हम आपको प्रसाद कैसे पवा सकते हैं?" भगवान् गौरहरि बोले, "आप समझे नहीं, मेरे कहने का आशय है, जो नित्य एक लाख (64 माला) हरिनाम जप करेगा, उसके घर पर ही मैं प्रसाद पा सकता हूँ।" भक्तगण बोले, "64 माला में तो हमारा मन लगातार कैसे लग सकता है?" महाप्रभु जी बोले, 'इसकी चिंता मत करो, इसकी चिंता हरिनाम करेगा। धीरे–धीरे हरिनाम में आनन्द आने लगेगा, तब निम्न कोटि का झूठा और मायिक आनन्द, जो आनन्द की श्रेणी में आता ही नहीं है केवल महसूस होता है, हरिनाम जपने से स्वतः छूटता जायेगा।'

**धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय। माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आवे फल होय।।**

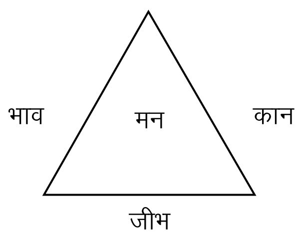
- **बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं। जनम अनेक रचित अघ दहहीं।।**
- **सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं।।**

सन्मुख का आशय है, जब श्रीगुरुदेव हरिनाम की दीक्षा देकर चले जाते हैं, तो गुरु–शरणागत शिष्य का हरिनाम की 64 माला का जप करते रहना ही सम्मुख होना है। जब अनचाहे, बिना मन से भी हरिनाम किसी के मुख से निकल जाये तो उसके अनेकों जन्मों के रचे–पचे पाप जल जाते हैं, तब अगर साधक प्रेम से हरिनाम करने लगेगा, तो उसको जो प्राप्ति हो सकती है, वह तो अकथनीय ही है! गुरुदेव का 1966 में आदेश–

Chant Harinam sweetly and listen by ear

**सादर सुमिरन जे नर करहीं। भव बारिधि गोपद इव तरहीं।।** – शिववचन

जो प्रेम से हरिनाम करता है, उसमें अष्ट सात्त्विक विकार, पुलक, अश्रुपात आदि उदय होने लग जाते हैं। अब प्रश्न उठता है कि, प्रेम से कैसे जपना होता है? ये कान से सुनकर, भक्त शिरोमणि के चरणों में (प्रत्यक्ष अथवा मानसिक रूप से) बैठकर, भगवान् के पार्षदों की सिफारिश करवाकर सहज ही में हो सकता है। Detail तो आमने–सामने चर्चा होकर ही clear किया जा सकता है। जब अवसर मिलेगा तब सेवा कर सकूँगा।




जीभ से उच्चारण हो, कान से सुनना हो, भगवान् की कृपा का भाव हो। तब शीघ्र ही अष्ट सात्त्विक विकार प्रकट होने लग जाते हैं। जब उक्त दशा होने लग जाती है, तो समझना होगा कि जो गीता का प्राण है अर्थात् शरणागति, उसका उदय हो जाता है। शरणागत् को भगवान् एक क्षण के लिए भी छोड़ते नहीं हैं।

**अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।**
**तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।** – श्री.भ.गीता 9.22

जो लोग अनन्यभाव से मेरे दिव्य स्वरूप का ध्यान करते हुए निरन्तर मेरा भजन करते हैं, उनकी जो आवश्यकताएँ होती हैं, उन्हें मैं पूरा करता हूँ और जो कुछ उनके पास है, उसकी रक्षा करता हूँ। इस प्रकार मैं, मेरे भक्तों का लौकिक तथा पारलौकिक भार वहन करता हूँ। शरणागत की पूरी जिम्मेदारी भगवान् लेते रहते हैं। जो कमी है, वह पूरी करते हैं और जो उसके पास है, उसकी देखभाल व रक्षा करते हैं। शरणागति का भाव तब ही उदय होगा जब संसार से अलगाव होगा। जब तक संसार अन्तःकरण में रमा रहेगा, तब तक शरणागति का भाव लोप रहेगा। हरिनाम स्मरण से ही सभी कुछ उदय हो जाता है। कोई भी आजमाकर देख सकता है, इसमें 1% भी कमी नहीं है।

मथुरा के भक्त दम्पत्ति का एक ही दिन में 64 माला करने पर उनका दसों अंगुलियों का असह्य दर्द समाप्त हो गया। लगभग दस दिन पीछे की ही चर्चा है, कोई भी मालूम कर सकता है। मैं लैबोरेटरी में बैठा रहता हूँ और मेरे गुरुदेव प्रयोग करके दिखाते रहते हैं। मेरा इसमें कोई ज्ञान नहीं है बल्कि यह है 3 लाख हरिनाम का प्रभाव, जो नित्य श्रीगुरुदेव जी के आदेश का पालन है। जहाँ कलि का धर्म हरिनाम नहीं होता, वहाँ कलि महाराज कलह करवाते रहते हैं। घर–घर में, समाज में, गाँव में, शहर में, देश में, सम्पूर्ण पृथ्वी लोक में, कहाँ कलह नहीं है? जहाँ हरिनाम है, वहाँ कलि महाराज जा नहीं सकते क्योंकि वहाँ जाने पर जलकर भस्म हो जाते हैं।

चण्डीगढ़ शहर में बहुत से भक्त 64 माला करने लगे हैं, उनको काफी फायदे होते देखे जा रहे हैं। इतना हरिनाम तो सभी को करना चाहिए। घर बैठे सभी सुविधाएँ, पंखा, हीटर आदि उपलब्ध हैं। कहीं भी बैठकर हरिनाम कर सकते हैं। भारत में जन्म, अच्छे कुल में जन्म, और अच्छा पड़ोस, सत्संग आदि मिलने पर भी जो समय का लाभ नहीं लेता, उसे घोर क्लेश उठाना पड़ेगा। हरिनाम से न जाने कितने अकथनीय असम्भव लाभ होते देखे गये हैं। कोई भी आजमाकर देख सकता है। 10 नामापराध तथा मान–प्रतिष्ठा से बचना परमावश्यक है, वरना कुछ नहीं मिलेगा। 64 माला करने वाले के घर में महाप्रभु 24 घंटे रहते हैं। वहीं पर महाप्रभु खाना–पीना, विश्राम आदि करते रहते हैं। जहाँ भगवान् का हर वक्त रहन–सहन हो, क्या वहाँ अमंगल हो सकता है? वहाँ तो अमंगल की जड़ ही कट जाती है।

**मन लगने के उपाय**–

(1) ब्रह्ममुहूर्त में उठकर कान और मन को सटाकर (संलग्न कर) हरिनाम करना।

(2) शाम को सूक्ष्म रूप में प्रसाद सेवन करना वरना आलस्य का प्रकोप होता है।

(3) प्रसाद सेवन करते हुए हरिनाम जप करते रहना ताकि सात्विक धारा चल सके। 'जैसा अन्न, वैसा मन।' पानी भी हरिनाम जपते हुए पिया जाये तो चरणामृत बन जाता है। 'जैसा पानी, वैसी वाणी।'

(4) रात में हरिनाम जपते हुए सोयें ताकि रातभर हरिनाम संचारित (circulation) होता रहे।

(5) टीवी (T.V.), अखबार व मोबाइल से दूर रहे। आवश्यक होने पर मोबाइल 10% काम में ले सकते हो।

(6) 64 माला नित्य हरिनाम स्मरण करते रहें ताकि समय ही न मिल सके।

(7) ग्राम्य–चर्चा (प्रजल्प) से दूर रहे। 64 माला जप से स्वतः ही बरबादी करने का समय नहीं मिलेगा।

(8) संयम से जीवनयापन करे। काम–क्रोध का दुष्प्रभाव सात्विक भाव रस को जला देता है।

(9) दम्पत्ति आपस में झगड़े नहीं, ये अपराध होगा। लक्ष्मी, रिद्धि–सिद्धि नहीं रहेगी। फिर भजन रसमय बनना तो बहुत दूर की बात है।

(10) सन्त, महात्माओं से प्यार का सम्बन्ध बनाये रखें, ताकि ठाकुर जी की आप पर दृष्टि हो।

(11) मंदिर में भाव नेत्रों से ठाकुर दर्शन करें, जड़ आँखों से तो दर्शन होता ही नहीं है।

(12) मान–प्रतिष्ठा तथा 10 नामापराध से बचें। यह साधकों के लिए अति महत्वपूर्ण (most essential) है।

(13) हरिनाम कान से सुनकर करें।

(14) अश्रु–पुलक न होने पर पश्चाताप करें।

(15) सभी काम भगवान् का समझकर करें। नौकरी (service) भी भगवान् की ही है।

(16) उद्देश्य केवल मात्र भगवद् प्राप्ति ही हो। घर–बार सब भगवान् का ही समझें।

उक्त प्रकार से सावधानी रखकर 64 माला करते रहें, तो उस घर में श्री गौरहरि का हर दम वास रहेगा। वहाँ अमंगल की जड़ ही उखड़ जायेगी। किंतु देखने में आ रहा है कि इतने सालों से हरिनाम जप हो रहा है, फिर भी कुछ लाभ नहीं दिख रहा है, क्या कारण है? केवल उपरोक्त कारण ही है। आजमाकर देख सकते हो। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। शक्ति रहते कमाई करना, नहीं तो फिर पीछे पछताना पड़ेगा। मनुष्य जन्म बार–बार नहीं मिलने वाला। जब भी होगा तो अरब देशों में हो जायेगा, जहाँ पर भगवान् की भक्ति का नामोनिशान ही नहीं है। गलत प्रचार में मानव भटक रहा है।

कलियुग का समय सब युगों में सर्वोत्तम है, जहाँ कुछ करना ही नहीं पड़ता। घर बैठे हरिनाम करो एवं सुख का जीवन जीओ। भगवान् की गोद में प्राणी जब तक नहीं जाता, तब तक प्राणी दारुण दुःखों में जलता रहता है। संसार में सुख दिखता है, लेकिन है नहीं। धनी दुःखी, गरीब दुःखी, पुत्रवाला दुःखी, न पुत्रवाला भी दुःखी। कोई सुखी है ही नहीं। सुखी वही है, जो सन्तोषी है। जैसा भगवान् ने अपने कर्मों के अनुसार दे दिया, उसी को पाकर जो सन्तोष करता है वही परमसुखी है, आशा ही परम दुःख का कारण है। सुख की स्थिति केवल मात्र हरिनाम स्मरण से ही आती है। अन्य कोई भी दूसरा साधन कलिकाल में नहीं है।

**जाना चहहिं गूढ गति जेऊ। नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ।। (जीभ)**
**राम नाम का अमित प्रभावा। सन्त पुराण उपनिषद गावा।।**

यह लेख मैंने नहीं लिखा, किसी अदृश्य शक्ति द्वारा लिखवाया गया है। अल्पज्ञ मानव क्या उक्त प्रभावशाली लेख लिखने में सक्षम हो सकता है? कदापि नहीं।

**नोट**– 64 माला जप से असम्भव सम्भव होता देखा गया है। आजमाकर देखना चाहिए। लेकिन माला कान से सुनकर, मान–प्रतिष्ठा व नामापराध से बचकर हो। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

हरिनाम का जप करने से अपने–आप ही बड़ी आसानी से भक्ति के अन्य अंगों का पालन हो जाता है। नाम और नामी (भगवान्) एक तत्त्व हैं, ऐसा विश्वास करके दस नामापराधों को त्यागकर जो साधक एकान्त में बैठकर भजन करता है, उस पर हरिनाम प्रभु दया–परवश होकर अपने श्यामसुन्दर रूप में उसके हृदय में प्रकाशित हो जाते हैं। जब साधना में नाम और रूप एक ही हैं, ऐसा अनुभव हो जाता है, तब नाम लेने से ही हर समय भगवान् का रूप भी हृदय में आ जाता है। इसी प्रकार रूप के साथ–साथ क्रमशः गुण, लीला और धाम की भी स्फूर्ति भक्त के हृदय में होने लगती है। – श्री हरिनाम चिन्तामणि

# 16

।। श्रीश्रीगुरुगौरांगौ जयतः।।

छीड की ढाणी

दि. 5/07/2006

परमाराध्यतम, परमश्रद्धेय, प्रातः स्मरणीय, श्रीगुरुदेव श्रीभक्तिसर्वस्व निष्किंचन महाराज के युगल चरणारविन्द में अधमाधम, दासानुदास, अनिरुद्ध दास का असंख्यबार साष्टांग दण्डवत् प्रणाम तथा प्रेमाभक्ति प्राप्ति की बारम्बार प्रार्थना।

## भगवान् से अपनापन

ठाकुर जी के प्रति अपनत्व ही विरहाग्नि प्रज्वलित करने का मूल साधन है। जब तक अपनत्व संसार में होगा, विरहमयी छटपट आ ही नहीं सकती। यह अपनत्व ही अहंकार (अहम्) का भक्षण कर जाता है। जब तक संसार में अहम् (मेरापन) रहेगा, ठाकुर जी से अपनत्व होने का सवाल ही नहीं है, चाहे कितना ही सत्संग कर लो, कितनी ही माला हरिनाम की कर लो। अपनत्व तब ही जन्म लेगा जब कान से हरिनाम श्रवण होगा। बस यही एक भक्ति का मूल साधन है। यही शरणागति का मूल लक्षण होगा, वरना केवल कपट ही नाचेगा।

अपनापन एक ऐसी अटूट रस्सी है, जो विरह को खींच लेती है। गोपियाँ, द्रौपदी, भीलनी, नरसी मेहता, तुलसीदास जी, मीरा आदि अनेक इस अपनत्व के उदाहरण हैं। अपनत्व होने से वियोग सहन नहीं होता। मिलने के लिए क्षण–क्षण युग के समान होता दिखाई देता है। फिर ठाकुर को भी भक्त का वियोग सहन नहीं होता।

चातुर्मास आरम्भ होने वाला है। कमर कस कर खड़े होने में असीम लाभ है। यों ही समय निकल जायेगा। काल आकर दबोच लेगा, चारों दिशाओं में वह मुख फाड़े खड़ा है। जब मौका मिलेगा तब ही निगल जायेगा। **कम से कम तीन लाख हरिनाम जप तो परमावश्यक ही है।** आठों याम भजन–साधन में लगना चाहिए। दिन में बहुत सारे झंझट, बखेड़े सामने खड़े रहते हैं। रात भजन के लिए अनुकूल रहती है। जहाँ सुनसान वातावरण, ठण्डी रातें, सुहावना मौसम हो, फिर इससे ज्यादा अनुकूलता क्या होगी?

**या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।**
**यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।** – श्री.भ.गीता 2.69

जो सब जीवों के लिए रात्रि है, वह आत्मसंयमी के जागने का समय है और जो समस्त जीवों के जागने का समय है वह आत्म– निरीक्षक मुनि के लिए रात्रि है। **भजनानन्दी रात में जागता है, दिन में सोता है। जगने में ही अपना हित है। जिस प्रकार कामी को रात में नींद नहीं आती, इसी प्रकार विरही को भी रात में नींद नहीं आती। कामी विष पान करता है, विरही अमृत का आनन्द लेता है।**

चाहे कुछ भी बोलो यह अपनत्व होगा केवल मात्र हरिनाम से! वह भी स्मरण को साथ में रखकर, अर्थात् कान से जोड़कर। दोनों का घर्षण अपनत्व प्रकट कर देता है। जब तक अपना खास घर नहीं मिलेगा, तब तक भटकन होती ही रहेगी। जब से बाप से बिछुड़े हैं, झंझटों में ही फँसे हैं। कौन सुखी है? केवल परमहंस भक्त ही अपने जीवन में मस्त है। इस अपनत्व से अहम्, काम, संसारी–आसक्ति, दुःख, कष्ट, चिन्ता आदि सब कुछ विलीन हो जाता है। यह सब होगा केवल हरिनाम से। हरिनाम जिसको प्यारा लगा, वही चारों वेद, अठारह पुराणों, उपनिषदादि का पूर्ण ज्ञाता हो गया। भीलनी ने कौन से शास्त्र पढ़े थे? केवल श्रीराम से अपनत्व कर अमरत्व प्राप्त कर लिया!

हरिनाम ही भगवान् को प्रकट करने की सच्ची युक्ति है। लेकिन हरिनाम में कोई भाग्यशाली, विरला ही रुचि रखता है। जो भार समझकर संख्या पूरी करता है, वह भी न जपने से तो उत्तम ही है। इससे सुकृति इकट्ठी होती रहती है। कई जन्म लेने के बाद हरिनाम में रुचि हो जायेगी और वह अमरत्व प्राप्त कर लेगा।

अवलम्बन (सहारा) भी एक महत्वशील भाव है। इसके बिना भगवद् सृष्टि चल ही नहीं सकती। जीव को पाँच तत्वों – पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा, आकाश आदि का अवलम्बन चाहिए। इनमें से अगर एक भी तत्व की उपलब्धि नहीं हुई तो शरीर रह ही नहीं सकता। अवलम्बन बिना सब निस्सार है। मनुष्य श्रीगुरुदेव द्वारा भगवान् का अवलम्बन लेता है। परन्तु जब तक भगवान् से अपनापन नहीं होगा तब तक अवलम्बन से ही बात नहीं बनेगी। अपनत्व ही सारभूत भाव है। इसके बिना सब निस्सार होगा।

संसार में न जाने कितने मनुष्य मरते रहते हैं। किन्तु उनमें अपनत्व न होने के कारण कोई दुःख मन को नहीं व्यापता। परन्तु जब अपने परिवार में कोई निजजन मरता है, तो अपार दुःख सागर में डूब जाते हैं क्योंकि उनसे स्वयं का अपनत्व है। इसी प्रकार यदि भगवान् से अपनापन हो जाएगा तो सारा का सारा बखेड़ा ही मिट जाएगा। बस, इसी अपनेपन की कमी के कारण जीव दुःख भोग करता रहता है।

अब सवाल यह हो सकता है कि यह अपनापन कैसे प्राप्त हो? तो इसका सरलतम उपाय है कि मौत को सामने रखे और विचार करें कि तेरे सामने कितने ही जाने, अनजाने व्यक्ति मौत के मुख में चले गए। अब तेरा भी नम्बर आने वाला है। फिर विचार करें, क्या कोई सुखी है? सभी किसी न किसी दुःख में पिस रहे हैं। यहाँ कोई अपना नहीं, सभी पराए हैं। केवल मात्र भगवान् ही अपना है जो सबका पिता है, उसी की गोद में जाने से सुख मिलेगा। चाहे कितने भी वैभवशाली हो जाओ। वैभव सुख नहीं देगा। क्योंकि वहाँ सुख दिखता है, लेकिन है नहीं। भजन बिना ब्रह्मा व महादेव, देवी–देवताओं को ही सुख नहीं, तो फिर हम किस गिनती में हैं! बारम्बार विचार करें तो हरिनाम में रुचि होने लगेगी। **भगवान् ने जीवों को अपनाने हेतु अपना नाम सृष्टि में रमा रखा है क्योंकि इसी एकमात्र मेरे नाम को पुकारने से मैं (भगवान्) पुकारने वाले के पास, न चाहते हुए**

**भी खिंचकर आ जाता हूँ।** लेकिन इतना सरल साधन होने पर भी कोई इसको अपनाता नहीं, और यदि अपनाता है तो भगवान् में अपनत्व नहीं रखता है। इसी तरह इसका जीवन व्यर्थ की बातों में चला जाता है। फिर उसको यह संयोग मिलता भी नहीं।

रोग के रूप में मौत आँखें दिखा रही है, फिर भी मानव सोता रहता है, कितनी मूर्खता है! सोने में भी कारण है–सन्त अपराध। गौरहरि ने अपनी माँ तक को भी क्षमा नहीं किया, मन से भी सन्त का बुरा सोचना अपराध है। जितना सन्तों में मन से प्यार होगा, उतना ही नाम में रुचि होगी। भार समझकर नाम लेना कई जन्म करवा देगा। नाम से भगवद् विरह उदय होना चाहिए। यही अवस्था मन की परीक्षा करवा देती है। इसका आशय है, अगर विरह नहीं हुआ तो अभी भी मन संसार से जुड़ा हुआ है।

**राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार।**
**तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजियार।।**
तुलसीदासजी कहते हैं कि हे मनुष्य, यदि तुम भीतर और बाहर दोनों ओर उजाला चाहते हो तो मुखरूपी द्वार की जीभरूपी देहलीज़ पर राम–नामरूपी मणिदीप को रखो।

**कृष्ण नाम, भक्तसेवा सतत करिबे।**
**कृष्ण–प्रेम–लाभ ता'र अवश्य हइबे।।**
सदा श्रीकृष्णनाम व भक्त सेवा करते रहो। ऐसा करने पर श्रीकृष्ण–प्रेम की प्राप्ति अवश्य होगी।।

**हरिनाम की संख्या के लिये जो आपने संकल्प लिया है, उसमें ढीलापन न हों, इसके लिये बार–बार व खासतौर पर ध्यान देना होगा।**
(नामाचार्य श्रील श्रीहरिदास ठाकुर)

# अंतिम व सर्वोत्तम उपाय – भगवान् को सदा पास में ही रखो

भक्तों के आत्यंतिक सुख के लिए सदैव उत्सुक रहता हूँ और साथ ही उन्हें शीघ्र–अति–शीघ्र भगवद्–दर्शन हों, इसके लिए 'मेरे बाबा' से उपाय पूछता रहता हूँ। 'मेरे बाबा'* ने पहले भी अनेक उपाय बताये हैं, परन्तु भक्तों ने उन सब उपायों को मुश्किल बताते हुए कहा था कि 'हम से यह उपाय नहीं हो पाता।' तब 'मेरे बाबा' को मैंने कहा था कि 'ऐसे जटिल साधन मत बताओं। कोई सरल सा साधन बता दो क्योंकि आप जो उपाय बताते है, वो भक्त कर नहीं पाते है!'

तब कई उपाय बताने के बाद अन्त में 'मेरे बाबा' ने बताया था कि रसोईघर में माताएँ बिना चप्पल पहने ही जायें और रसोई का काम करते हुए मुख से अनवरत हरिनाम करती रहें। ऐसा करने से हरिनाम, भोग की प्रत्येक सामग्री में प्रवेश कर जायेगा, और तब परिवार के सभी सदस्य जो उस प्रसाद को पाएगें, उनकी निर्गुण वृति जागृत हो जाएगी। किन्तु कुछ समय के बाद माताओं ने इस उपाय पर भी अपनी असमर्थता ही व्यक्त कर दी थी!

अब बहुत अनुनय–विनय करने के बाद 'मेरे बाबा' ने एक बहुत ही सरल व सुगम उपाय बता दिया है, जो सभी भक्त थोड़े समय के अभ्यास के साथ निश्चित ही कर सकते है। उपाय है – भगवान् को सदा अपने साथ में रखो। एक मिनट भी भगवान् को अलग नहीं करो। जो भी काम करों – भगवान् को सदा साथ में रखकर करो। कार में बैठो, तो भगवान् को भी बिठा लो। कभी दुर्घटना नहीं हो सकती। प्रसाद पावों, तो भगवान् से कहो कि 'आप भी पा लो।' यहाँ तक कि अगर शौच में जाओ, तो भी भगवान् को कहो, ''चलो मेरे साथ।'' भगवान् तो परम–पवित्र है, उन्हे किसी भी स्थान पर कोई कठिनाई नहीं है। भगवान् तो भक्तों के लिए सब करने को तैयार है, बस मुश्किल यह है कि उन्हें कोई चाहता ही नहीं है!

इस उपाय को कुछ दिन करके तो देखे, कितना फायदा होता है! यदि भूलें, तो भक्त आपस में एक दूसरे को याद कराते रहें कि 'भगवान् साथ में तो हैं ना!' इस तरह एक दूसरे की सहायता करके इस उपाय को शीघ्र–अति–शीघ्र अपने जीवन में अपना लेने से परम कल्याण निश्चित ही होगा। भगवान् ने भगवद्गीता में कहा भी है कि 'भक्त जैसा आचरण करता है, जैसे मुझे भजता है, मैं भी वैसा ही करता हूँ।' अर्थात् 'अगर भक्त मुझे नहीं छोड़ रहा है, तो मैं उसे कैसे छोड़ सकता हूँ?' इस तरह से कभी भी भगवान् और भक्त का बिछोह नहीं होगा और सुख ही सुख व्यापता रहेगा। शास्त्र का यही तो सार है कि भगवान् को सदा याद रखो। यदि भगवान् सदा साथ में रहेंगे तो उनका स्मरण तो स्वयं बना ही रहेगा। भगवान् साथ में ही रहेंगे तो दुख आ ही कैसे सकता है? यह अंतिम व सर्वोत्तम उपाय है – 'भगवान् को सदा साथ में रखों।

– अनिरूद्ध दास अधिकारी

* **नोटः** भगवान् कृष्ण के सम्बन्ध–ज्ञान की दृष्टि से पोते होने के कारण अनिरुद्ध प्रभुजी भगवान् को 'मेरे बाबा' कहकर सम्बोधित करते हैं।

# श्रीपाद अनिरुद्धदास अधिकारी जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

श्रीपाद अनिरुद्ध दास अधिकारी प्रभुजी आज 90 वर्ष से भी अधिक की आयु में भी प्रतिदिन 3 से 5 लाख हरिनाम अर्धरात्रि 12–1 बजे जागकर, एक ही जगह बैठ कर करते हैं और प्रतिदिन केवल 3–4 घंटे ही विश्राम करते हैं। आज तक ठाकुर जी ने आपको केवल एक ही विषय – हरिनाम पर "इसी जन्म में भगवद् प्राप्ति" नामक 8 ग्रन्थ लिखवाए हैं, जिसमें भाग 1 से 7 ठाकुर जी ने आपको पत्रों के रूप में रात को लिखवाये तथा भाग 8 प्रवचनों के रूप में आपके मुख से बुलवाये।

आपका जन्म, शरद–पूर्णिमा (रास–पूर्णिमा) 23 अक्टूबर, सन् 1928 को छींड की ढाणी, तहसील कोटपूतली, जिला जयपुर (राजस्थान) में हुआ। आप पेशे से एक सिविल इंजीनियर थे तथा इस पद पर बीकानेर में काम करते हुए आपको हनुमान जी के छद्म रूप में दर्शन हुए जिन्होंने आपको बताया कि आप एक साधारण मनुष्य न होकर गोलोक निवासी हैं एवं आपको हरिनाम प्रचार हेतु यहाँ भेजा है। इसका पुष्टिकरण हनुमान जी ने आप को आपके हाथों में अंकित भगवद् दिव्य आयुधों के चिन्ह् दिखाकर किया और इस बात को 74 वर्ष की आयु तक गोपनीय ही रखने को कहा और बताया कि 74 वर्ष के बाद ही इस रहस्य को सब को बताना वरना तुम्हारा प्रचार नहीं हो पायेगा। आप केवल शिक्षा गुरु के रूप में सभी साधकों को हरिनाम करने की शिक्षा देते हैं।

आप का 700 करोड़ से भी अधिक हरिनाम हो चुका है जिसके प्रभाव से आपको आज 90 वर्ष से भी अधिक की आयु में कोई रोग नहीं है। आप नम्रता की साक्षात् मूर्ति हैं एवं अपने शिक्षा–शिष्यों को भी अति स्नेह व प्यार देते हैं और सबको पूजनीय मानते हैं क्योंकि आप यह समझते हैं कि मेरा प्यारा (भगवान्) सभी के हृदय में बैठा हुआ है तथा किसी को पैर छूने, माला पहनाने, भेंट आदि देने की भी आज्ञा नहीं देते हैं। आपका भगवान् के साथ नित्य सम्बन्ध डेढ़ साल के शिशु का है व आप प्यार से भगवान् को 'बाबा' कहकर बुलाते हैं।

आपको चंद्र सरोवर पर, सूरदास जी की कुटीर पर, भगवान् के साक्षात् दर्शन प्राप्त हुए। पर जब आपके साथ वाले 10–11 भक्तों को कुछ नजर नहीं आया, तब उसी समय आपने भगवान् को प्रार्थना की, "बाबा! आप इनको भी दर्शन दो वरना यह मुझे झूठा समझेंगे।" आपकी इस प्रार्थना पर ठाकुर जी ने उनको दिव्य दृष्टि देकर छाया रूप में ही दर्शन दिए, क्योंकि वे ठाकुर जी के साक्षात् दर्शन का तेज प्रकाश सहन करने के योग्य नहीं थे। इन सभी भक्तों के नाम 'इसी जन्म में भगवद् प्राप्ति' (भाग–1) में अंकित हैं। भगवान् के दर्शन तो बहुत भक्तों को हुए हैं परन्तु दूसरों को भगवान् के दर्शन करवाना आपके भजन–बल तथा भगवान् से अत्यन्त प्रिय सम्बन्ध का प्रमाण है। दूसरी बार ठाकुरजी ने ट्रेन में एक छोटे बच्चे (छद्म रूप) में आकर, आपको भ्रमित करके खीर खिलाई।

**सब धरती कागद करूँ, लेखनी सब बनराय।**
**सात समुद्र की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय।।**

(संत कबीर जी का दोहा)

उत्तम वैष्णवों तथा गुरुदेव की महिमा का गान, सात समुद्र के पानी को स्याही बनाने से, वनों के सब पेड़ों की कलम बनाने से, तथा सारी धरती को कागज बनाने से भी नहीं किया जा सकता। इसलिए हमने मात्र कुछ शब्दों में ही सूर्य को दीपक दिखाने का प्रयास किया है।

# श्रील भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज का संक्षिप्त परिचय

श्री रूप गोस्वामी पाद के अनुगत एवं श्री गौड़ीय मठ समूह के प्रतिष्ठाता, नित्यलीला प्रविष्ट परमहंस ऊँ 108 श्री श्रीमद् भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर 'प्रभुपाद' जी के प्रियतम शिष्य एवं अखिल भारतीय श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता, अस्मदीय गुरु पादपद्म, परमहंस परिव्राजकाचार्य, ऊँ विष्णुपाद 108 श्री श्रीमद् भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराज का आर्विभाव सन् 1904 की एक परम पावन तिथि, उत्थान एकादशी, को पूर्व बंगाल (वर्तमान बांग्लादेश) में फरीदपुर जिले के कांचन–पाड़ा नामक गाँव में हुआ।

मेरे गुरुजी ने मुझे हरिनाम व दीक्षा एक ही समय में सन् 1952 में दी। यह उस समय की बात है जब एक भी मठ नहीं था और गुरुजी को राधा–कृष्ण के एक विग्रह लेने, स्वयं तीन बार जयपुर आना पड़ता था। उन्होंने मेरे परिवार के अलावा पूरे राजस्थान में किसी को शिष्य नहीं बनाया। इसलिए मेरा संपर्क उनके साथ अधिक रहा तब मैं उनसे भली प्रकार से ठाकुर जी के विषय में पूछता और यही कहता था, "गुरुजी मुझे कुछ नहीं चाहिए मुझे भगवान् के दर्शन कब होंगे?" वे कहते थे, "हरिनाम से होंगे बस।" उनकी वजह से ही मुझे हरिनाम पर पूर्ण निष्ठा हो गयी और मैंने आजीवन निरंतर हरिनाम के अलावा कुछ नहीं किया।

सबसे पहले जब मैंने कृष्ण मंत्र का पुरश्चरण किया तब कृष्ण मन्त्र करने से विरह बहुत होता था और मुझे वाक–सिद्धि भी प्राप्त हो गई। मैं जो भी बोलता था वह सत्य हो जाता था। मैं जिसका जो काम, जिस तारीख का कहता, उसी तारीख को हो जाता था। एक बार गुरु जी जयपुर में विग्रह देखने के लिए आये हुए थे और एक चीफ इंजीनियर भी गुरूजी को मिलने आता था। एक दिन चीफ इंजीनियर ने गुरुजी के सामने ही यह सब कुछ कह दिया और फिर गुरुजी ने मुझसे कहा, "अब तुम इस वाक्–सिद्धि का प्रयोग कभी नहीं करना।"

गुरुदेव जयपुर में जब भी आते थे तो स्नेह पूर्ण भाव से कहते थे कि यहाँ जहाँ पर भी मैं रहूँ तुम मेरे पास आते रहा करो व प्रसाद भी वहीं पाया करो। जयपुर में मैं जहाँ पर रहता था गुरुजी वहाँ भी आते थे। मेरी धर्म पत्नी गुरुजी को गरम–गरम फुल्के खिलाया करती थी।

एक बार मुझे पता चला कि मेरी साली में प्रेत आता है और मेरे ताऊ जी ने, बहुत पैसे वाले होने के कारण, बहुत बड़े–बड़े मौलवियों और पंडितों को बुलाया पर प्रेत नहीं निकला और अंत में उन्होंने मुझे कहा – "क्या तुम्हारे गुरुजी इस प्रेत को निकाल सकते हैं? तो मैंने कहा, 'हाँ।" और मैंने गुरुजी को याद करते हुए हरिनाम करके उसके गले में 7 गाठों वाला धागा बाँध दिया और वह प्रेत चला गया और फिर मेरे गुरुजी की कृपा से कभी नहीं आया।

फिर एक बार मेरे गुरुजी एक ही समय दो जगह पर प्रकट हुए। जब वे स्वयं आसाम में थे तो उसी समय मेरे ताऊ जी को हमारे गाँव में भी साक्षात् दर्शन दिए थे।

एक बार गुरुजी जयपुर में श्रीश्री राधा–गोपीनाथ जी के मंदिर में बैठे थे और मैं भी वहाँ पर ही था। मंदिर के गोस्वामी जी ने अचानक उनके चरण के तलवे को देखा कि उसमें भगवत् चिन्ह् है तो उसने फूल लाकर उनके चरणों में चढ़ाये और दण्डवत् किया।

27 फरवरी 1979, शुक्ल प्रतिपदा तिथि को, महासंकीर्तन के बीच मेरे गुरुदेव नित्यलीला में प्रविष्ट हो गये। उनकी अहैतुकी कृपा वर्षण एवं प्रेरणा के फलस्वरूप ही मैं "इसी जन्म में भगवद् प्राप्ति" ग्रंथ केवल एक ही विषय "हरिनाम" पर लिख सका। इन ग्रंथों में मेरे गुरुदेव की दिव्य वाणी का अमृत भरा हुआ है। मुझे जो भी प्राप्त हुआ है, उनकी असीम अनुकंपा से ही हुआ है। आज भी मैं अपने गुरुदेव को हर समय अपने साथ पाता हूँ।

– अनिरुद्ध दास अधिकारी

# पुस्तक प्राप्ति स्थान

**जम्मू** – 52, सेक्टर–1बी, ईस्ट एक्सटेंषन, त्रिकुट नगर, जम्मू–180012। मो. 7006207345

**पंजाबः**

**लुधियाना** – 51, बसंत एवेन्यू, डुगरी, लुधियाना। मो० 9463160697

**जलंधर** – मकान नंबर ए–191, गली नंबर 5, किशनपुरा, जलंधर। मो० 9815945453

**होशियारपुर** – मुरलीवाला, भरवाई रोड, नजदीक ट्रक यूनियन। मो० 8699724426

**अबोहर** – न्यू सूरज नगरी, गली नंबर 3, चौक नंबर 8। मो० 8427818122, 8847587527

**बठिंडा** – श्री चैतन्य गौड़ीय मठ, बसंत विहार, भठिंडा। मो० 9417828020

**जीरकपुर** – फ्लैट नंबर 271, एल–ब्लॉक, स्पेंगल कोंडोस, सुषमा स्केयर, ढाकौली। मो० 9988399100

**रोपड़** – मकान नं. 1136, गुग्गा माड़ी मौहल्ला। मो० 9464785808
ब्रिज भूषण कपिला, देसी घी वाले, मेन बाजार। संपर्क 01881222106

**माछीवाड़ा** – रोहित सूद S/O राकेश कुमार सूद, नजदीक दशहरा मैदान (जिला लुधियाना)।
मो० 9653041413, 9876255303

**हिमाचल प्रदेशः**

**शिमला** – मकान नंबर 1, कार्ट रोड शिमला। मो० 8091020325

**कांगड़ा** – गाँव उसतेहार, पोस्ट ऑफिस पंजलहर, नगरोटा बगवन, जिला कांगड़ा। मो० 8219355255

**चंडीगढ़** – मकान नंबर–171, सैक्टर 46–ए, चंडीगढ़। मो० 9872097146

**हरियाणाः**

**गुड़गाँव**

- मकान नंबर – सी 259–ए, सुशांत लोक–I, गुरुग्राम (गुड़गाँव)। मो० 8879667332, 8287851510
- एच ब्लॉक, 36/31, डी.एल.एफ. फेज–I, गुरुग्राम (गुड़गाँव)। मो० 9811516292
- 'हरिनाम कुटीर' ए सी–404, अंतरिक्ष हाईटस, सेक्टर–84 । मो० 9205038759, 9971198206

**सोनीपत** – मकान नंबर 17/450, पुराना डी.सी. रोड, ब्रह्मा कॉलोनी, मान मंदिर के नजदीक। मो० 8950775067

**पंचकुला** – श्री भक्तिविनोद आसन, 31/9, पंचकुला। मो० 9888576874

**दिल्लीः**

- ई–75, प्रीत विहार, दिल्ली। मो० 9818726872
- 822–23 कटरा नील, चाँदनी चौक, दिल्ली। मो० 9810200824
- मकान नंबर 18, अमृतपुरी ए, गढ़ी नंबर 2, जग्गी वाली गली, पहली मंजिल, नजदीक इस्कॉन मंदिर, ईस्ट ऑफ कैलाश, दिल्ली। मो० 7678498930

**उत्तर प्रदेशः**

**वृन्दावन**

- 363/फेज–2, पुष्पांजलि बैकुंठ, नजदीक बुरज गाँव, वृन्दावन, मथुरा। मो० 9909001287

- ए–19, बी ब्लॉक, पहली मंजिल, गिरिराज अपार्टमैंट, चैतन्य विहार, फेज 1। मो० 9729488134

**लखनऊ** – 289/210, मोती नगर, लखनऊ। मो० 9198899841

**राजस्थानः**

**जयपुर**

- 8–D, श्री राधा गोविंद नगर, हनुमान बगीची के पास, जामडोली, आगरा रोड। मो० 9079059177
- गीता परिवार, सी–29, क्रिएशन टावर, निकट लक्ष्मीमन्दिर सिनेमा, टोंक रोड। मो० 9829069144
- गौरांग महाप्रभु मंदिर, नजदीक गोविंद देव जी मंदिर, जयपुर, मो० 9413765693

**जोधपुर** – श्री राम भवन, नजदीक राज महल गर्ल्स हाई स्कूल, गुलाब सागर। मो० 9414059566

**मध्य प्रदेशः**

**ग्वालियर** – ब्लॉक सी–13, हरीशंकर पुरम, ग्वालियर। मो० 6230989108, 9039592475

**खरगोन** – संदीप पाटीदार सुपुत्र जयंतीलाल पाटीदार, मुकाम पोस्ट घेगांव। मो० 9893093909

**गुजरातः**

**अहमदाबाद** – बी 601, आशका ऐलीगेंस, कृष्णा फार्म के सामने, शुकन स्टेटस के सामने, वन्देमातरम रोड, गोटा, अहमदाबाद। मो० 9099094054

**अंकलेश्वर** – ए–16, अक्षर बंगलो, जी.ई.बी. ऑफिस के नजदीक। मो० 9106927619

**महसाना** – गाँव खेरपुर, तहसील काड़ी, जिला महसाना। मो० 9574427559

**महाराष्ट्रः**

**मुंबई**

- एम्बर बिल्डिंग, फ्लैट नंबर – 702, जैम पोवाई विहार सी.एच.एस.एल, पोवाई विहार कॉम्प्लेक्स, नजदीक गोपाल शर्मा स्कूल, ए.एस. मार्ग के सामने, पोवाई, मुम्बई, मो० 9820545957
- संजय प्रजापति, ग्रेंट रोड, मुंबई। मो० 9820882492

**सातारा** – 13, हरी–कृपा, विश्वास सोसाइटी (फॉरेस्ट कॉलोनी), गोडोली, विलासपुर। मो० 9881252581

अमरावती – 401, श्रद्धा श्री अपार्टमेंट्स, साईं नगर रोड़, हरियाली होटल के पास, सतुरना – 444607

**गोवा** – 7/1364, लोयाला नैशनल ओपन स्कूल, सिर्वोडम, सलसैट, साउथ गोवा, नेवलिम। मो० 7588444563

**तेलंगानाः**

**हैदराबाद**

- 23–6–659, बेला एक्स रोड, अशोका पिल्लर के नजदीक, शाह अली बंदा। मो० 8688858276
- मकान नंबर 1–2–225, न्यू म्यूनिसिपल कॉलोनी, दिलसुख नगर, हैदराबादं। मो० 9866823498

**उड़ीसाः**

**पुरी** – विश्वरंजन पांडा (जगन्नाथ दास पुरी), अन्धियासही, पोस्ट – नीमपारा, जिला पुरी – 752106 मो० 7008036228

क्रमशः.......

# ...... पुस्तक प्राप्ति स्थान (भारत)

<u>कर्नाटक</u>:

**बंगलौर**

- कनजयूमर डिसप्यूटस रीड्रेस्सल कमिषन, बसावा भवन, चौथी मंजिल, सोफिया हाई स्कूल। मो० 8073182986
- मकान नंबर 506, श्री रंगा, डॉलर्ज कॉलोनी, आर.एम.वी. सैकंड स्टेज, समीप आई.एस.आर.ओ. मो० 8884816703

<u>पश्चिम बंगाल</u>:

**कोलकात्ता**

7 सी, राजा संतोश रोड, कोलकता 700027। मो० 9830061282

# पुस्तक प्राप्ति स्थान (अंतर्राष्ट्रीय)

**अमेरिका** – पकॅज शर्मा, वालनट क्रीक, 3493, वेसाइड़ प्लाजा, सी.ए., यु.एस.ए.
मो० +1 3108033876

**आस्ट्रेलिया** – विजय जैन, युनिट नं. 2/65, पार्क स्ट्रीट, सेंट कलिदा वेस्ट,
पोस्ट कोड़–3182, विक्टोरिया, आस्ट्रेलिया
मो० +61 431174893

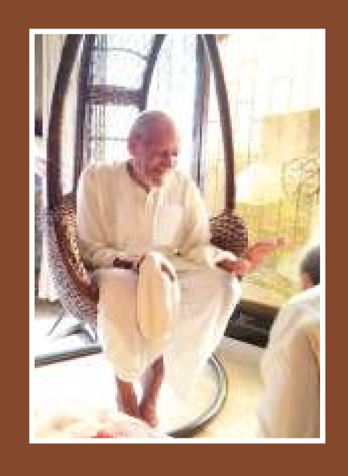
नोटः–

- श्रीील अनिरुद्ध दास जी महाराज से संबन्धित आध्यात्मिक सूचनाएँ प्राप्त करने हेतु अपना नाम एवं शहर का नाम निम्नलिखित नम्बर पर भेजें।

**मोबाइल नं. : 9953047744, 9911356599**

- श्रील अनिरुद्ध दास जी महाराज के ग्रन्थ डाउनलोड करने के लिए निम्नलिखित लिंक पर जायें

tiny.cc./aniruddhadasabooks
tinyurl.com/aniruddhadasabooks



शतं विहाय भोक्तव्यं, सहस्रं स्नानमाचरेत् ।
लक्षं विहाय दातव्यं, कोटिं त्यक्त्वा हरिं भजेत् ।।

भावार्थः सौ काम छोड़कर भोजन करना चाहिए, हजार काम छोड़कर स्नान करना चाहिए, लाख काम छोड़कर दान करना चाहिए, और करोड़ काम छोड़ कर हरिनाम करना चाहिए ।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।।